43 वाँ राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह
43rd National Film Festival
1996

संपादन
पूर्बा रॉय

Editor
PURBA ROY

समन्वय
राजीव जैन
हरविन्दर सिंह

Co-ordination
Rajeev Jain
Harvinder Singh

सहयोग
राजकुमार धीर

Assistance
Raj Kumar Dhir

उत्पादन
जी.पी. धुसिया
वी.के. मीणा
ए.के. सिन्हा

Production
G.P. Dhusia
V.K. Meena
A.K. Sinha

फ़िल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित।
मुद्रक : तारा आर्ट प्रिंटर्स, नई दिल्ली-110 002

Designed and produced by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals, Printed at Tara Art Printers, New Delhi-110 002

विषय सूची

CONTENTS

	Page No.	
निर्णायक मण्डल	1	**JURY MEMBERS**
कथाचित्र पुरस्कार	5	**AWARDS FOR FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार	6	Best Feature Film
निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	8	Indira Gandhi Award for Best First Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए पुरस्कार	10	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार	12	Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम फ़िल्म	14	Best Film on Family Welfare
अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	16	Best Film on other Social Issues
पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फ़िल्म	18	Best Film on Environment/Conservation/Preservation
सर्वोत्तम बाल फ़िल्म	20	Best Children's Film
सर्वोत्तम निर्देशन	22	Best Director
सर्वोत्तम अभिनेता	24	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	26	Best Actress
सर्वोत्तम सह-अभिनेता	28	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री	30	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल-कलाकार	32	Best Child Artiste
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	34	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	36	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	38	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	40	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	42	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	44	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	46	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेशभूषाकार	48	Best Costume Designer
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	50	Best Music Direction

सर्वोत्तम गीत	52	Best Lyrics
निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार	54	Special Jury Award
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव	56	Best Special Effects
सर्वोत्तम नृत्य संयोजन	58	Best Choreography
सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र	60	Best Feature Film in Assamese
सर्वोत्तम बंगल कथाचित्र	62	Best Feature Film in Bengali
सर्वोत्तम अंग्रेज़ी कथाचित्र	64	Best Feature Film in English
सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र	66	Best Feature Film in Hindi
सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र	68	Best Feature Film in Kannada
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र	70	Best Feature Film in Malayalam
सर्वोत्तम मणिपुरी कथाचित्र	72	Best Feature Film in Manipuri
सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र	74	Best Feature Film in Marathi
सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र	76	Best Feature Film in Oriya
सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र	78	Best Feature Film in Tamil
सर्वोत्तम तेलगु कथाचित्र	80	Best Feature Film in Telugu
विशेष उल्लेख	82	Special Mention
गैर कथाचित्र पुरस्कार	85	**AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार	86	Best Non-Feature Film
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र पुरस्कार	88	Best First Non-Feature Film of a Director
सर्वोत्तम मानवशास्त्री/मानवजातीय फ़िल्म	90	Best Anthropolocial/Ethnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी फिल्म	92	Best Biographgical Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म	94	Best Arts/Cultural Film
सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म	96	Best Scientific Film
सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फ़िल्म	98	Best Environmental/Conservation/Preservation Film
सर्वोत्तम कृषि फ़िल्म	100	Best Agricultural Film
सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फ़िल्म	102	Best Historical Reconstruction/Compilation Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	104	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म	106	Best Educational/Motivational/Instructional Film
सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म	108	Best Investigative Film
सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म	110	Best Animation Film

विशेष निर्णायक मण्डल पुरस्कार	112	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म	114	Best Short Fiction Film
परिवार नियोजन सर्वोत्तम फ़िल्म	116	Best Film on Family Welfare
सर्वोत्तम छायांकन	118	Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	120	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	122	Best Editor
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	124	Best Music Director
विशेष उल्लेख	126	Best Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	128	Awards Not Given
सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार	129	**AWARDS FOR WRITING ON CINEMA**
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक (1995)	130	Best Book on Cinema (1995)
सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक (1995)	132	Best Film Critic (1995)
विशेष उल्लेख	134	Special Mention
कथासार : कथाचित्र	137	**SYNOPSES : FEATURE FILMS**
अंथी मंथाराई	138	Anthi Mantharai
बंगड़वाड़ी	139	Banagarwadi
बैंडिट क्वीन	140	Bandit Queen
भैरवी	141	Bhairavi
बॉम्बे	142	Bombay
दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे	143	Dilwale Dulhaniya Le Jayenge
डोघी	144	Doghi
हैलो	145	Halo
इतिहास	146	Itihaas
कालापानी	147	Kaala Pani
काहिनी	148	Kahini
कथापुरूषन	149	Kathapurusham
क्राऊर्या	150	Kraurya
मिनी	151	Mini
मोक्ष	152	Moksha

नसीम	153	Naseem
ओर्माइंडेकालुडंरिक्कानम	154	Ormakalundayirikkanam
दे रेप इन द वर्जिन फॉरेस्ट	155	Rape in the Virgin Forest
सनाबी	156	Sanabi
संगीत सागर गानयोगी पंचाक्षर गवई	157	Saneetha Saagara Ganayogi Panchrakshara Gavai
स्त्री	158	Stri
स्वामी विवेकानन्द (भाग 1)	159	Swami Vivekananda (Part I)
द मेकिंग ऑफ द महात्मा	160	The making of the Mahatma
युगांत	161	Yugant

कथासार: गैर कथाचित्र	163	**SYNOPSES : NON-FEATURE FILMS**
ए सेलेश्चियल ट्राइस्ट एवं अजीत	164	A Celestial Tryst & Ajit
ए लिविंग् लिजेड एवं औल अलोन इफ नीड बी	165	A living legend & All Alone if need be
अमृत बीज एवं भाल्जी पेंढारकर	166	Amrit Beeja & Bhalji Pendharkar
ड्रिप एण्ड स्प्रिंकलर इरिगेशन एवं होम अवे फ्राम होम	167	Drip & Sprinkler Irrigation & Home away from home
इतिहासथिले खसक एवं कुट्रावली	168	Itihasathile Khasak & Kutravali
लिमिट टू फ्रीडम एवं माझी	169	Limit to Freedom & Majhi
मेमोरीज ऑफ फीयर एवं 'ओ'	170	Memories of fear & 'O'
ऊडाहा एवं पाकरन्नाट्टम अम्मानूर	171	Oodaha & Pakarnnattam Ammannur
सोच समझ के एवं सोना माटी	172	Soch Samajh Ke & Sona Mati
तराना एवं तत्व	173	Tarana & Tatva
द रेबेल एवं येल्हऊ जागोई	174	The Rebel & Yelhou Jagoi

निर्णायक मण्डल Jury Members

कथाचित्र निर्णायक मण्डल

JURY FOR FEATURE FILMS

ऋषिकेश मुखर्जी (अध्यक्ष)
Hrishikesh Mukherjee (Chairman)

किरन वी. शांताराम
Kiran V. Shantaram

के.जी. जॉर्ज
K.G. George

गौतम बोरा
Gautam Bora

एम. प्रभाकर रेड्डी
M. Prabhakar Reddy

आर. लक्ष्मण
R. Lakshman

जे. महेन्द्रन
J. Mahendran

दीप्ती नवल
Deepti Naval

नारायण चक्रवर्ती
Narayan Chakraborty

पी.ए. सलीम
P.A. Saleem

हरि कुमार
Hari Kumar

शरत पुजारी
Sarat Pujari

अशोक कुमार
Ashok Kumar

संजय चैटर्जी
Sanjay Chatterjee

के. इबोहल शर्मा
K. Ibohal Sharma

पी.बी. श्रीनीवास
P.B. Sreenivos

गैर-कथाचित्र निर्णायक मण्डल

JURY FOR NON-FEATURE FILMS

विजया मूले (अध्यक्षा)
Vijaya Mulay (Chairperson)

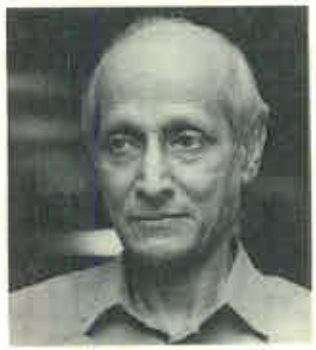

कलांद कुमार भट्टाचार्य
Kulanda Kumar Bhattacharya

नरेश बेदी
Naresh Bedi

प्रदीप बिस्वास
Pradeep Biswas

एम.वी. कृष्णास्वामी
M.V. Krishnaswamy

सिनेमा लेखन निर्णायक मण्डल JURY FOR WRITING ON CINEMA

अरूणा वासुदेव (अध्यक्षा)
Aruna Vasudev (Chairperson)

विनोद तिवारी
Vinod Tiwari

रंगराजन (सुजाता)
Rangarajan (Sujata)

कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Feature Films

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

कथापुरूषन (मलयालम)

निर्माता : **अदूर गोपालाकृष्णन** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अदूर गोपालाकृष्णन** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार मलयालम फिल्म **कथापुरूषन** को स्वतंत्रता की पूर्व संध्या में उत्पन्न हुए एक व्यक्ति विकास विलक्षण चित्रण के लिए दिया गया है। यह फिल्म श्रेष्ठ सिनेमाई गुणों और सार्वभौम आकर्षण के साथ एक व्यक्ति के माध्यम से भारत में स्वतंत्रता के पश्चात सामाजिक-राजनैतिक विकास की जानकारी देती है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM

KATHAPURUSHAN (MALAYALAM)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Producer: **ADOOR GOPALAKRISHNAN**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Director: **ADOOR GOPALAKRISHNAN**

Citation

The Award for the Best Feature Film of 1995 is given to the Malayalam Film **KATHAPURUSHAN** for the remarkable portrayal of the growth of an individual born on the eve of Independence. The film gives an insight into the socio-political evolution of the post-independent India through the individual with outstanding cinematic qualities and universal appeal.

अदूर गोपालकृष्णन का जन्म केरला के अदूर गाँव में कथकली का प्रदर्शन करने वाले एक परिवार में हुआ। उन्होंने आठ साल की अल्प आयु में ही कथकली का मंच पर प्रदर्शन प्रारंभ कर दिया था। जब तक उन्हें अर्थ शास्त्र तथा राजनीति विज्ञान में गांधिग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त हुई, वे 20 अत्यंत विख्यात नाटकों का निर्माण कर चुके थे, जिनमें आधे उन्होंने स्वयं लिखे थे। उन्होंने 1962 में सरकारी नौकारी से इस्तीफा देकर फिल्म एवं टेलिविज़न संस्थान से पटकथा, लेखन तथा निर्देशन में 1965 में स्नातक बनें। उसी वर्ष उन्होंने त्रिवेन्द्रम में चित्रलेखा फिल्म संस्था का आरम्भ किया - जो केरला फिल्म समाज आंदोलन का पथ प्रदर्शक था। भारत की प्रथम फिल्म निर्माण तथा वितरण की सहकारी संस्था जिसकी अदूर गोपालकृष्णन ने 1965 में स्थापना की। उन्होंने आठ कथाचित्र तथा 24 से अधिक ग़ैर कथाचित्र तथा लघु चित्रों को लिखा तथा उनका निर्देशन भी किया है।

उन्हें सर्वोत्तम निर्देशक का राष्ट्रीय पुरस्कार 4 बार प्राप्त हो चुका है। उन्हें कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। उनकी प्रमुख फिल्म हैं - **स्वयमवरम्** (1972), **कोडियेट्टम** (1977), **एलिप्पाथायम्** (1981), **मुखामुखम्** (1984), **माथीलुकल** (1989), **विधेयन** (1993)। उन्हें सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक का राष्ट्रीय पुरस्कार सिनेमायुडे लोकम (सिनेमा की दुनिया) के लिए 1993 को प्राप्त हुआ था। उन्हें 1994 में सिनेमा में योगदान के लिए पद्मश्री की उपाधी प्रदान की गई थी।

Adoor Gopalakrishnan was born in the village of Adoor in Kerala into a family which traditionally patronised and practised Kathakali - a highly stylised dance drama. He began acting on the stage at the age of eight. By the time he graduated in Economics and Political Science from Gandhigram Rural University, he had already produced over 20 critically - acclaimed plays, besides authoring half of them. He left a Government job in 1962 to join the FTII and graduated in script-writing and direction in 1965. The same year, he started the Chitralekha Film Society of Trivandrum-pioneering the film society movement in Kerala. India's first film co-operative for production, distribution of artistic films was also founded by him in 1965. He has written and directed eight feature films and over two dozen documentaries and short films.

He has received the National Award for Best Director four times. He has also won many International awards as well. His films include **Swayamvaram** (1972), **Kodiyettam** (1977), **Elippathayam** (1981), **Mukhamukham** (1984), **Mathilukal** (1989), **Vidheyan** (1993). He has been the recipient of National Award for the Best Book on Cinema in 1993 for Cinemaynde Lokam (The World of Cinema). He was honoured with the title of Padmashri in 1984 for his contribution to the field of cinema.

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

काहिनी (बंगला)

निर्माता : **चन्द्रमाला भट्टाचार्य** एवं **मलय भट्टाचार्य** को स्वर्ण कमल तथा 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **मलय भट्टाचार्य** को स्वर्ण कमल तथा 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए 1995 का इंदिरा गांधी पुरस्कार बंगला फिल्म **काहिनी** को निर्भीक एवं प्रवर्ती शैली तथा विषय वस्तु में आकार को विलय करने और विषय के चयन के लिए प्रदान किया गया है।

INDIRA GANDHI AWARD FOR THE BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

KAHINI (BENGALI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Producer: **CHANDRAMALA BHATTACHARYA & MALAYA BHATTACHARYA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Director: **MALAYA BHATTACHARYA**

Citation

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director for the year 1995 is given to the Bengali Film **KAHINI,** for its bold and innovative style and choice of a subject in which the form and content merges into one.

चन्द्रमाला भट्टाचार्य ने गवर्नमेंट कॉलेज आफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट, कलकत्ता से 1970 में डिप्लोमा प्राप्त किया। उसके पश्चात् वे 1971 में प. जर्मनी चली गई जहां उन्होंने कई विज्ञापन एजेन्सियों में इलस्ट्रेटर एवं विज़ुआलाइज़र के रूप में कार्य किया। 1977 में वे कलकत्ता आए और अपने पति मलय भट्टाचार्य के साथ मूवीमिल नामक फिल्म और विडियों निर्माण यूनित की स्थापना की। गौल्पो शौल्पो नामक 13 भागों की बंगला टी.वी. धारावाहिक उनका प्रथम निर्माण था। **काहिनी** उनकी निर्माण की प्रथम कथाचित्र है।

Chandramala Bhattacharya obtained a diploma in Commercial Art from Govt. College of Art & College, Calcutta in 1970. She moved to West Germany in 1971 and for the next six years worked there in various advertising agencies as illustrator and visualizer. She returned to Calcutta in 1977 and with her husband, Malay Bhattacharya, launched a film & video production unit, Moviemill. **Galpo Salpo** — a Bengali TV Serial in thirteen episodes was the first major production produced by her. **Kahini** is her first feature film as joint producer.

मलय भट्टाचार्य ने स्नातक बनने के बाद गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट, कलकत्ता के फैकल्टी ऑफ आर्ट से 1970 में अप्लाएड आर्ट का डिप्लोमा प्राप्त किया। उसके पश्चात वे जर्मनी चले गए और वहां उन्होंने 1970 से 1977 तक ग्राफिक डिजाइनर का कार्य किया। 1977 में वे कलकत्ता आए और तब से उन्होंने टी वी के नाटकों का पटकथा, लेखन तथा निर्माता-निर्देशन किया। **काहिनी** उनका प्रथम कथाचित्र है जो उन्होंने तीन वर्षों में पूरा किया।
ये उनका पहला राष्ट्रीय पुरस्कार है।

Malaya Bhattacharya, after graduation, obtained a diplome in Applied Art from the Faculty of Arts from Govt. College of Art & Craft, Calcutta in 1970. He then went to Germany and worked as a graphic designer from 1970-77. He returned to Calcutta in 1977 and since then he has been writing screenplay, producing and directing TV plays. **Kahini** is his first feature film which took him three years to complete.
This is his first National Award.

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए पुरस्कार

दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे (हिन्दी)

निर्माता : **यश चोपड़ा** को स्वर्ण कमल तथा 40,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **आदित्य चोपड़ा** को स्वर्ण कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे** को संवेदनशील एवं स्नेह के साथ एक सहज प्रेम कथा के द्वारा अर्थपूर्ण पारिवारिक मनोरंजन प्रदान करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT

DILWALE DULHANIA LE JAYENGE (HINDI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000/- to the Producer: **YASH CHOPRA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **ADITYA CHOPRA**

Citation

The Award for the Best Popular Film providing wholesome entertainment of 1995 is given to the Hindi Film **DILWALE DULHANIA LE JAYENGE** for providing meaningful family entertainment through a simple love story with kindness and senstivity.

यश चोपड़ा बम्बई फिल्म जगत का एक बहुचर्चित नाम है। वे एक अति परिचित फिल्म निर्माता तथा निर्देशक हैं। उन्होंने यश राज फिल्मस प्रा.लि. की स्थानपा की। उनकी प्रथम फिल्म थी **धूल का फूल** (1958) जिसके बाद की फिल्में हैं **धर्मपुत्र** (1962), **वक्त** (1965), **इत्तेफाक** (1969), **दीवार** (1975), **कभी-कभी** (1976), **त्रीशूल** (1978), **सिलसिला** (1981), **चान्दनी** (1989), **लम्हें** (1991), **परम्परा** (1992), **डर** (1994) - इसमें से कुछ फिल्में उन्होंने स्वयं निर्मित भी की। उन्होंने कई फिल्मों का निर्माण किया - **दूसरा आदमी** (1977), **नूरी** (1979), **सवाल** (1989), **नाखुदा** (1981), **आइना** (1993), **ये दिल्लगी** (1994) इत्यादि। उन्हें **चांदनी** (1989) और **डर** (1994) के लिए लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था। उन्हें कई अन्य पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। वे फिल्म से संबंधित कई संस्थाओं के सदस्य भी हैं।

Yash Chopra is an established name in the Bombay Film Industry. He is a renowned producer and director. He is also the founder of Yash Raj Films Pvt. Ltd. His first film was **Dhool Ka Phool** (1958) followed by popular films like **Dharam Putra**(1962), **Waqt** (1965), **Ittefaq** (1969,) **Deewar** (1975), **Kabhi Kabhi** (1976), **Trishul** (1978), **Silsila** (1981), **Chandni** (1989), **Lamhe** (1991), **Parampara** (1992), **Darr** (1994) — some of which he has produced himself. He has also produced films - **Doosara Aadmi** (1977), **Noorie** (1979,) **Sawaal** (1989), **Nakhuda** (1981), **Aaina** (1993) **Yeh Dillagi** (1994) etc. He has received the National Award for Best Film providing popular and wholesome entertainment for **Chandni** (1989) and **Darr** (1994). He has been the recipient of many other awards. He is also the member of many a film oriented organisations.

आदित्य चोपड़ा ने **लम्हें** तथा **डर** फिल्मों में अपने पिता यश चोपड़ा की सहायता की तथा वे **ये दिल्लगी** फिल्म के निर्माता भी थे।
ये फिल्म उनकी प्रथम है तथा वे इसके निर्देशक, कहानीकार तथा पटकथा लेखक भी हैं। आदित्य ने **दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे** के अतिरिक्त संवाद भी लिखे हैं।
ये उनका प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार है।

Aditya Chopra has assisted his father Yash Chopra for the films **Lamhe** and **Darr** and produced the film **Yeh Dillagi**.
This is his first film as director and story, screen-play writer. He has also written the additional dialogues for this film.
This is his first National Award.

राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

बॉम्बे (तमिल)

निर्माता : **मणि रत्नम** एवं **एस. श्री राम** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **मणि रत्नम** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार तमिल फिल्म **बॉम्बे** को धर्म के नाम पर हत्याकांड की निरर्थकता दर्शाने और साम्प्रदायिक फूट की समस्या के निर्भय एवं संवेदनशील चित्रण के लिए दिया गया है।

NARGIS DUTT AWARD FOR BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION

BOMBAY (TAMIL)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer: **MANI RATNAM** and **S. SRI RAM**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director: **MANI RATNAM**

Citation

The Award for the Best Feature Film on National Integration of 1995 is given to the Tamil Film **BOMBAY** for its bold and sensitive approach to the problem of communal divide and for bringing out the futility of the carnage in the name of religion.

एस. श्री राम ने वाणिज्य में मद्रास विश्वविद्यालय से स्नातक किया। उसके बाद चार्टर्ड एकाउंटेन्ट बने तथा इन्डियन इनस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, कलकत्ता से व्यापार प्रशासन में स्नातकोत्तर की उपाधी प्राप्त हुई। उन्होंने ए.एन. फरगूसन में सीनीयर कन्सल्टेंट, ग्रिन्डलेज़ बैंक तथा ब्रूक बॉन्ड में आठ साल नौकरी की। उसके पश्चात् उन्होंने फिल्म इन्डस्ट्री में 1989 से निर्माता का कार्य आरंभ किया। उन्होंने उनकी आलयम् संस्था की स्थापना व **क्षात्रियम** (1990), **दसरथम** (1993), **थिरूडा-थिरूडा** (1993), **आसाइ** (1995), **बॉम्बे** (1995) का निर्माण किया है।

S. Sri Ram is a commerce graduate from Madras University, a Chartered Accountant and a Master of Business Administration from Indian Institute of Management, Calcutta. He has worked in Grindlays Bank as a Senior consultant with AN Ferguson (Management consultants) and as Financial Controller with Brooke Bond spanning 8 years. He joined the Film Industry in 1989, as a producer. He has produced 5 films under his banner 'Aalayam' — **Chatriyam** (1990), **Dasaratham** (1993), **Thiruda-Thiruda** (1993), **Aasai** (1995), **Bombay** (1995).

मणि रत्नम ने मद्रास विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातक की उपाधी प्राप्त की। उसके बाद उन्होंने बजाज इनस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, बम्बई से व्यापार प्रशासन में स्नातकोत्तर की उपाधी प्राप्त की। उनका फिल्म निर्देशन का आरम्भ **पल्लवी अनुपल्लवी** (1983) (कन्नड़) से हुआ जिसमें उन्हें कर्नाटक राज्य का सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनकी फिल्मों को कई राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हैं। उनकी कुछ प्रमुख पुरस्कृत फिल्में हैं - **मौना रागम्** (1986), **नायागन** (1987), **अग्नि नाटचात्रम** (1988), **गीतांजली** (1989), **अंजलि** (1990), **रोजा** (1992), **थिरुडा-थिरुडा** (1993)। उनकी फिल्मों को कई अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित किया गया तथा उन्हें कई राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं।

Mani Ratnam is a commerce graduate from Madras University and also a Master of Business Administration from Bajaj Institute of Management, Bombay. His first directorial venture was **Pallavi Anupallavi** (1983) in Kannada which won him the Karnataka State Award for Best Screen-play. His films have won many National Awards. Some of his award winning films include **Mouna Ragam** (1983), **Nayagan** (1987), **Agni Natchatram** (1988) **Gitanjali** (1989), **Anjali** (1990), **Roja** (1992), **Thiruda-Thiruda** (1993). His films have been screened at many Internatinal festivals and have won many national and international awards.

परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार

मिनी (मलयालम)

निर्माता : **मधु** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **पी. चन्द्र कुमार** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार मलयालम फिल्म **मिनी** को, एक बच्ची की अपने पिता को स्वनाश से बचाने के दृढ़ प्रयासों के माध्यम से नशे की समस्या के प्रभावी प्रदर्शन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

MINI (MALAYALAM)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer: **MADHOO**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director: **P. CHANDRA KUMAR**

Citation

The Award for the Best Film on Family Welfare of 1995 is given to the Malayalam Film **MINI** for the effective handling of the problem of alchoholism through the determined efforts of a young girl to save her father from self destruction.

मधु का जन्म त्रिवेन्द्रम में हुआ तथा उन्होंने केरला विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधी प्राप्त की। बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय से उन्होंने हिन्दी में स्नातकोत्तर किया और मद्रास विश्वविद्यालय में लेक्चरर नियुक्त हुए। उन्होंने 1962 में नैशनल स्कूल आफ ड्रामा से स्नातक किया। उसके बाद उन्होंने 400 फिल्मों में अभिनय किया जिनमें प्रमुख हैं **भारगवी नीलायम, ओलावम थीरावम, स्वयमवरम, थुरक्काथावाथिल, कुदुमबासामेटम, चम्पाकुलम थाचेन**, इत्यादि। मधु ने 14 फिल्मों का निर्माण और निर्देशन भी किया - **प्रिया, सिंदूराचेप्पू, उदायम पादिनजारू, ओरू उगासंध्या**। उनका न्यूनतम निर्माण है **मिनी**। मधु को राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के कई पुरस्कार प्राप्त हुए। वे कई फिल्म संबंधित संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

Madhoo was born in Trivandrum and graduated from the Kerala University. He did his master degree in Hindi from Benaras Hindu University and started a career in Madras University as a lecturer. He later joined National School of Drama and graduated from there in 1962. He has acted in about 400 films, well known of them being **Bhargavi Nilayam, Olavum Theeravum, Swayamvaram, Thurakkathavathil, Kudumbasametom, Champakulam Thachen**, etc.

Madhu has produced and directed fourteen films — **Priya, Sindhooracheppu, Udayam Padinjaru, Oru Ugasandhya**. His latest production is **Mini**. He has been the recipient of many state and national level awards. He is a part of many a film based organisation.

पी. चन्द्र कुमार का पेशा ही फिल्म निर्देशन है। उन्होंने 1977 से अपना निर्देशन कार्य आंरभ किया, एक सहायक के रूप में तथा कई प्रसिद्ध निर्देशकों के साथ काम किया जैसे हरिहरन, डा. बालाकृष्णन, पी. भास्करन, इत्यादि। अब तक उन्होंने 120 फिल्मों को निर्देशित किया जिनकी भाषाएँ अलग-अलग थी जैसे मलयालम, तमिल, तेलगु, कन्नड़ तथा हिन्दी। उनकी निर्देशन में बनी कुछ प्रसिद्ध फिल्में इस प्रकार हैं - **उयारूम नजान नादाके, अस्थामायम, एयर होस्तेस, सुधि कलासम** (सभी मलयालम में), **अमावसी इराविल** (तमिल), **मीना बजार** (हिन्दी) इत्यादि। पी. चन्द्रकुमार को **मिनी** के लिए राज्य स्तर पर कई पुरस्कार प्राप्त हुए।

P. Chandra Kumar is a professional film director. He has started his career from 1977 as an assistant director and has worked under most of the renowned directors like Hariharan, Dr. Balakrishnan, P. Bhaskaran, and others. Till date he has directed over 120 films in various languages viz. Malayalam, Tamil, Telugu, Kannada and Hindi. Some of his directed, memorial films include - **Uyarum Njan Naddake, Asthamayam, Air hostess, Sudhi Kalasam** (all in malayalam), **Amavasai Iravil** (Tamil), **Meena Bazaar** (Hindi), etc. **Mini** has won P. Chandrakumar many awards at the state level.

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों से हानियाँ, विकलांग कल्याण आदि जैसे अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार

डोघी (मराठी)

निर्माता : **एन.एफ.डी.सी** एवं **दूरदर्शन** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **सुमित्रा भावे** एवं **सुनील सुक्तानकर** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज-विरोधी, नशीले पदार्थ, विकलांग कल्याण जैसे अन्य सामाजिक विषयों के सर्वोत्तम कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार मराठी फिल्म **डोघी** को दो बहनों के गरीब ग्रामीण परिवार के चित्रण के लिए दिया गया है। फिल्म में रुढ़िबद्ध, द्वेषपूर्ण समाज में उनके जीवन की पीड़ा और अन्ततः उनकी आजादी का सुंदर चित्रण है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON OTHER SOCIAL ISSUES SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED ETC.

DOGHI (MARATHI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer: **NFDC & DOORDARSHAN, INDIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director: **SUMITRA BHAVE & SUNIL SUKTANKAR**

Citation

The Award for the Best Film on other social issues such as prohibition, women and child welfare, anti-dowry, drug abuse, welfare of the handicapped of 1995 is given to the Marathi Film **DOGHI** for its depiction of a poverty-stricken rural family consisting of two young sisters. The agony of survival in a tradition bound hostile society and their subsequent liberation is beautifully depicted in the film.

सुमित्रा भावे एक समाज विज्ञानी और समाज अनुसंधनी से 1985 में फिल्म निर्माता बनीं। उनकी लघु फिल्म **बाई** को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था। उन्होंने कई और लघु फिल्में बनाई - **पानी, मुक्ति, सम्वाद, सहयोग, चकोरी, सरशी, लाहा** आदि। **पानी** को 1987 में राष्ट्रीय पुरकार मिला था और **चकोरी** को अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए थे। उनकी कई फिल्में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भी प्रदर्शित हुईं।

Sumitra Bhave is a social scientist and a social reseacher turned film-maker since 1985. Her short film **Bai** won her a National Award. She has to her credit short films like **Pani, Mukti, Samvad, Sahyog, Chakori, Sarshi, Laha**. **Pani** received the National Award in 1987 and **Chakori** has won two International Awards. Her films have been screened abroad in many film festivals.

सुनील सुखतानकर ने फिल्म एवं टेलिविजन इन्सटिटयूट से फिल्म निर्देशन में स्नातक किया है। उनकी डिप्लोमा फिल्म थी **अनुत्तर** जिसे अच्छी सराहना मिली। सुनील ने सुमित्रा भावे की सभी फिल्मों में सह-निर्देशन किया है। फिल्म निर्देशन के अलावा वे महिला पत्रिकाओं में स्त्री स्वतंत्रावादी आलोचक लेख लिखते हैं।

Sunil Sukthankar is a graduate from Film and Television Institute of India in film direction with **Anutar** - his diploma film to his credit. He has been co-director with Sumitra Bhave for all her films. Apart from film making he writes femimist criticism in women's magazines.

पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

रेप इन द वर्जिन फौरेस्ट (बोड़ो भाषा)

निर्माता : **ज्वांगदेव बोडोसा** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **ज्वांगदेव बोडोसा** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण के सर्वोत्तम कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार बोडो फिल्म **रेप इन द वर्जिन फौरेस्ट** को एक कबीले के लोगों की जिंदगी और उनके जद्दोजहद तथा वास्तविक अपराधियों का भडांफोड़ करने के द्वारा वनों को काटने की समस्या के प्रभावी चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON ENVIRONMENT/CONSERVATION/PRESERVATION

RAPE IN THE VIRGIN FOREST (BODO LANGAUGE)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer: **JWNGDAO BODOSA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director: **JWNGDAO BODOSA**

Citation

The Award for the Best Film on Environment/Conservation/Preservation of 1995 is given to the Bodo Film **RAPE IN THE VIRGIN FOREST** for effectively handling the problem of deforestation, through the life and struggle of a tribal community and exposing the real culprits behind this crime.

ज्वांगदेव बोडोसा ने पुणे के भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्था से फिल्म निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। उसके पश्चात् उन्होंने सिनेमा प्रोडक्शन में जेवियर इंन्सटिट्यूट ऑफ कम्यूनिकेशन, बम्बई से प्रशिक्षण प्राप्त किया है। वे निर्देशन, कैमरा, तथा संपादन में ख्याति प्राप्त हैं तथा उनके सहयोग से बनी पहली बोडो फिल्म **अलायारों** को 1986 में रजत कमल प्राप्त हुआ था। उन्होंने अपनी प्रथम कथाचित्र **क्वम्सी लामा** 1991 में बनाई। उन्होंने करीब दस गैर कथाचित्र का भी निर्देशन किया है।
यह उनकी दूसरी फिल्म है।

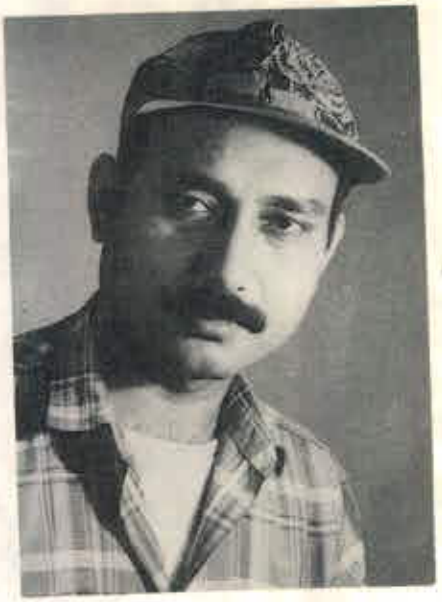

Jwngdao Bodosa is a diploma holder in film direction from Film and Television Institute of India, Pune and Cinema Production from Xavier's Institute of Communication, Bombay. He has earned his reputation in direction, camera, editing and has collaborated in the first Bodo Film **Alayaron**, winner of Rajat Kamal in 1986. His first feature film was **Kwmsi Lama**, made in 1991. He also has nearly ten documentaries to his credit.
This is his second feature film.

सर्वोत्तम बाल कथाचित्र पुरस्कार

हैलो (हिन्दी)

निर्माता : **एन'सीप** को स्वर्ण कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **संतोष सिवान** को स्वर्ण कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **हैलो** को, अभिनव ढंग से विषय को बनाने, एक बालक की नजरों से शहरी उदासीनता के प्रभावों को दर्शाने और इसकी स्मरणीय निष्पत्ति के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CHILDREN'S FILM

HALO (HINDI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer: **N'CYP**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director: **SANTOSH SIVAN**

Citation

The Award for the Best Children's Film of 1995 is given to the Hindi Film **HALO** for its refreshing approach to the subject and in bringing out the impact of urban insensitivity from a child's point of view leading to a memorable finale.

संतोष सिवान की पहली फिल्म थी 'स्टोरी आफ टिब्लू' जिसकी अवधि 60 मि. थी और ये फिल्म डिविज़न के लिए बनाई गई थी। ये फिल्म अरूनाचल प्रदेश में स्थित थी। इस फिल्म को लघु चित्र का सर्वोत्तम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। संतोष सिवान 1990 के ग़ैर कथाचित्र मण्डल के सदस्य थे। उन्होंने 17 कथाचित्र तथा 41 ग़ैर कथचित्रों का छायांकन किया जो हिन्दी, तमिल, मलयालम भाषाओं में है। उनकी कुछ फिल्में हैं **राख, रूदाली, गर्दिश** (सभी हिन्दी में) **रोजा** (तमिल/हिन्दी), **दलपती** (तमिल), **अभयम** (मलयालम), **इन्दिरा** (तमिल) इत्यादि। उन्हें **पेरूमथाचन** (मलयालम) के लिए छायांकन का 1991 का राष्ट्रीय पुरस्कार तथा ग़ैर कथाचित्र **में मोहिनिअट्टम** के लिए 1991 का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्हें कई राज्य स्तर के पुरस्कार भी प्राप्त हुए।

ये उनकी द्वितीय कथाचित्र है।

Santosh Sivan has directed a 60 min. film 'Story of Tiblue' for Films Division and received the National Award for Best Short Fiction film (1988). The film was shot in Arunachal Pradesh. He has been the Jury member for documentaries for National Awards in 1990. He has done the cinematography for 17 feature films and 41 documentaries in Hindi, Tamil and Malayalam languages. Some of his films are **Raakh, Rudali, Gardish** (all in Hindi), **Roja** (Tamil/ Hindi), **Thalapathi** (Tamil), **Abhayam** (Malayalam) **Indira** (Tamil), etc. He received the National Award for Cinematography for Feature film for **Perumthachan** (Malayalam) (1991) and for documentary for **Mohiniyattam** (1991). He has received quite a few state awards as well.

This is his second film after the 'Story of Tiblue' as a director.

सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

सईद अख्तर मिर्ज़ा

निर्देशक : **सईद अख्तर मिर्ज़ा** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम निर्देशन का 1995 का पुरस्कार **सईद अख्तर मिर्ज़ा** को, उनकी फिल्म **नसीम** में प्रतिभाशाली सिनेमाई दृष्टि और गीतात्मकता के साथ साम्प्रदायिक तनावों के बीच एक परिवार के विक्षोभ के मर्मस्पर्शी चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST DIRECTION

SAEED AKHTAR MIRZA

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Director: **SAEED AKHTAR MIRZA**

Citation

The Award for the Best Direction for 1995 is given to **SAEED AKHTAR MIRZA** for his work in the Hindi Film **NASEEM** for the deeply moving portrayal of a family in turmoil in the midst of communal disharmony with lyrical quality and brilliant cinematic touches.

सईद अख्तर मिर्ज़ा ने अर्थ शास्त्र तथा राजनीति विज्ञान में बम्बई विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधी प्राप्त की। उन्होंने 6 वर्ष विज्ञापन के क्षेत्र में कार्य किया जिसके पश्चात उन्होंने 1976 में पुणे के फिल्म एवं टेलिविजन संस्था से फिल्म निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया। उनकी प्रथम फिल्म थी **अरविंद देसाई की अजीब दास्तां** (1978), जिसके पश्चात उन्होंने **एल्बर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है?** (1981), **मोहन जोशी हाज़िर हो** (1983) और **सलीम लंगड़े पे मत रो** (1989) का निर्देशन किया। उनके विषय के चयन तथा उसके व्यवहार को अत्यंत सराहा गया। **अरविंद देसाई की अजीब दास्तां** को बर्लिन फिल्म समारोह में दर्शाया गया तथा **एल्बर्ट पिन्टो को गुस्सा क्यों आता है?** को सईद की श्रेष्ठ फिल्म माना जाता है। **मोहन जोशी हाज़िर हो** को रायो डी जानेइरो फिल्म समारोह ब्राज़ील को सराहा गया तथा उसे सर्वोत्तम परिवार कल्याण का राष्ट्रीय पुरस्कार (1984) प्राप्त हुआ। उन्हें 1989 में **सलीम लंगड़े पे मत रो** के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला तथा इस फिल्म को उसी वर्ष टोक्यो के अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में दर्शाया गया। उनकी गैर कथाचित्रों में प्रमुख हैं – **द प्राब्लेमस् आफ अर्बन हाउसिंग, स्लम एविक्शन, पिपारसोड, इज़ एनिबडी लिस्निंग?, थर्ड वाएस** आदि। उन्होंने कई लोकप्रिय टेलिविजन धारावाहिक भी बनाए – नुक्कड़, इंतेजार और नया नुक्कड़।

Saeed Akhtar Mirza graduated in economic and political science from the University of Bombay. He worked in advertising for 6 years and obtained a diploma in film direction from Film and Television Institute of India, Pune in 1976. His debut film was **Arvind Desai Ki Ajeeb Dastan** (1978), which was followed by **Albert Pinto Ko Gussa Kyoon Atta Hai?** (1981), **Mohan Joshi Hazir Ho** (1983) and **Salim Langde Pe Matt Ro** (1989). His work was highly appreciated for the choice of subjects as well as its handling. **Arvind Desai Ki Ajeeb Dastan** was shown at Berlin film festival while **Albert Pinto Ko Gussa Kyon Atta Hai?** is considered Saeed's best film. **Mohan Joshi Hazir Ho** won high praise at Rio de Janeiro film festival, Brazil and received the National Award for Best Film on family welfare in 1984. He won the National Award for **Salim Langde Pe Matt Ro** in 1989 and the film was screened at International Film Festival in Tokyo in 1989. His documentaries include **The problems of urban housing, Slum eviction, Piparsod, Is anybody listening? The third voice,** etc. He has made popular television serials like Nukkad, Intezar and Naya Nukkad.

सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार

रजत कपूर

अभिनेता : **रजत कपूर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेता का 1995 का पुरस्कार **रजत कपूर** के अंग्रेजी फिल्म **द मेकिंग ऑफ द महात्मा** में नियंत्रण एवं गरिमा के साथ दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी के आरंभकालीन जीवन को अत्यन्त ही संवेदनशील ढंग से अभिनीत करने के लिए दिया गया है। कदम-ब-कदम एक सामान्य मानव का महात्मा में परिवर्तन बड़े ही सहज ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

AWARD FOR THE BEST ACTOR

RAJIT KAPUR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Actor: **RAJIT KAPUR**

Citation

The Award for the Best Actor of 1995 is given to **RAJIT KAPUR** for his work in the English Film **THE MAKING OF THE MAHATMA** for his extremely sensitive portrayal of Gandhi during his early years in South Africa with great restraint and control. The step by step transformation of a normal man to that of Mahatma is convincingly depicted.

रजत कपूर की सर्वप्रथम अभिनित फिल्म थी श्याम बेनेगल निर्देशित **सूरज का सातवाँ घोड़ा** (1992) जिसके पश्चात् उन्होंने उन्हीं की फिल्म **मम्मो** (1994) में भी अभिनय किया। इन फिल्मों के अलावा उन्होंने बुद्धादेव दासगुप्त की बंगला फिल्म **चराचर** (1993) तथा प्रकाश झा की हिन्दी फिल्म **दीदी** (1994) में भी अभिनय किया। रजत कपूर ने जज़ीरे (1989) और सम्भवी (1993) नामक दो टेलीविजन धारावाहिकों में भी अभिनय किया है। इसके अलावा उनके अभिनित टी.वी. धारावाहिक हैं - घर जमाई (1986), ब्योंकेश बक्षी (भाग-1 1992 तथा भाग-2 1995), जुनून (1994) जमीन आसमान (1994) तथा कई अन्य। रजत ने थियेटर में भी काफी काम किया है। उनके कुछ प्रमुख नाटक इस प्रकार हैं - लैरिंस साहब, गैसलाइट, आर देयर टाइगर्स इन कांगो? (1993), वन फॉर द रोड (1994) आदि।

ये उनका प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार है।

Rajit Kapur had first acted in a Shyam Benegal directed feature film **Suraj Ka Satvan Ghoda** (1992) followed by yet another Benegal film, **Mammo** (1994). Beside these he has also acted in Buddhadeb Dasgupta directed **Charachar** (1993) in Bengali and **Didi** (1994) in Hindi directed by Prakash Jha. Rajit has acted in teleserials Jazeere (1989) and Sambhavi (1993). He has worked in many TV serials like Ghar Jamai (1986), Byomkesh Bakshi (Part I 1992 & Part II 1995). Junnon (1994) Zameen Aasman (1994) and many others. Rajit has a strong background in theatre. Some of his prominent plays include Larins Sahib, Gaslight, Are there Tigers in Congo? (1993), One for the Road (1994) and others. This is his first National Award.

सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार

सीमा बिस्वास

अभिनेत्री : **सीमा बिस्वास** को रजत कमल तथा 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेत्री का 1995 का पुरस्कार सीमा बिस्वास को हिन्दी फिल्म **बैंडिट क्वीन** में विश्वास और लावण्यता के साथ एक डाकू की विवादास्पद भूमिका बड़े ही शौर्य और विलक्षण ढंग से निभाने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ACTRESS

SEEMA BISWAS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Actress: **SEEMA BISWAS**

Citation

The Award for the Best Actress of 1995 is given to **SEEMA BISWAS** for her stunning and courageous portrayal of the controversial role of a bandit with grace and conviction in the Hindi Film **BANDIT QUEEN.**

सीमा बिस्वास असम के नालबारी क्षेत्र में पली-बढ़ी हुई। गुवाहाटी विश्वविद्यालय से स्नातक होने के बाद वे दिल्ली के नेशनल स्कूल आफ ड्रामा में ड्रामेटिक्स की शिक्षा प्राप्त करने आईं। उन्होंने अभिनय में कुशलता हासिल की। उसके बाद करीब 10 वर्षों तक नेशनल स्कूल आफ ड्रामा के रेपर्टरी कम्पनी में काम किया।

उनके 15 वर्षों के कार्यकाल में उन्होंने 50 से अधिक नाटकों में काम किया जिसके दौरान उन्हें कई वैभवशाली निर्देशकों का संगत प्राप्त हुआ। उनके द्वारा अभिनित कथाचित्र है - **अश्विनी, अगला मौसम, बैंडिट क्वीन** तथा **खामोशी**। उन्हें प्रसिद्ध बलराज साहनी पुरस्कार से भी नवाज़ा जा चुका है।

ये उनकी प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार है।

Seema Biswas was born and brought up in Nalbari, Assam. She has graduated with a Bachelor of Arts degree from Guwahati University and after that proceeded on to graduate in Dramatics from National School of Drama with a specialisation in Acting. Seema worked with the National School of Drama's Repertory company for nearly a decade.

During the 15 years span of her career, she has acted in more than 50 plays under eminent directors of India and abroad. She has also acted in feature films - **Ashwini, Agla Mausam, Bandit Queen** and **Khamoshi**. She has received the prestigious Balraj Sahani award for her contribution to theatre.

This is her first National Award in films.

सर्वोत्तम सह-अभिनेता पुरस्कार

मिथुन चक्रवर्ती

सह-अभिनेता : **मिथुन चक्रवर्ती** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह-अभिनेता का 1995 का पुरस्कार मिथुन चक्रवर्ती को हिन्दी फिल्म **स्वामी विवेकानन्द (भाग-1)** में श्री रामकृष्ण परमहंस की शानदार आत्म परीक्षक की भूमिका करने के लिए और पात्र को आध्यात्मिक स्तर पर सफलतापूर्वक उभारने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTOR

MITHUN CHAKRABORTY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Actor: **MITHUN CHAKRABORTY**

Citation

The Award for the Best Supporting Actor of 1995 is given to **MITHUN CHAKRABORTY** for his brilliant and soul searching portrayal of Shree Ram-Krishan Paramahansa in the Hindi film **SWAMI VIVEKANANDA (PART-I)** and succeeds in elevating the character to a spiritual level.

मिथुन चक्रवर्ती भारत के जाने माने कलाकार हैं जिनके अभिनय का आरम्भ मृनाल सेन की फिल्म **मृगया** से हुआ।

उन्होंने विज्ञान में स्नातक का दूसरा वर्ष कलकत्ता विश्वविद्यालय में पूर्ण करने के बाद पुणे के फिल्म इनस्टिट्यूट में दाखिला लिया जहाँ से वे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

मिथुन को **मृगया** के लिए 1976-77 में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा सोवियत संघ में पीकॉक पुरस्कार भी दिया गया। उसके बाद उन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हुए जिनमें **ताहादेर कथा** (बंगला) के लिए 1993 का राष्ट्रीय पुरस्कार भी था। उन्होंने बंगला और हिन्दी में कुल मिलाकर 200 से अधिक फिल्मों में मुख्य भूमिकाएँ निभाई हैं। परंतु रामकृष्ण परमहंस के इस पात्र को निभाने के लिए उन्हें अपने आप में बहुत बदलाव लाना पड़ा।

Mithun Chakraborty, a superstar of the Indian film industry and a heart throb of millions started his career from Mrinal Sen's modern classic **Mrigayya**.

Before that he passed II year B. Sc with Distinction from Calcutta University and then passed in I class a course in acting from the Film Institute in Pune.

Mithun won his first National Award for **Mrigayya** in 1976-77 and the Peacock Award from USSR for the same. Since then he has won scores of awards which include National Award for Best Actor for **Tahader Katha** (Bengali) in 1993. He has worked in over 200 films in main leads in both Hindi and Bengali feature films. But he had to transform himself incredibly to do the role of Ramakrishna Parasamhans for which he gets the National Award again.

सर्वोत्तम सह-अभिनेता पुरस्कार

अरनमुला पोनाम्मा

सह-अभिनेता : **अरनमुला पोनाम्मा** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री का 1995 का पुरस्कार **अरनमुला पोनाम्मा** को मलयालम फिल्म **कथापुरुषम** में उनकी दादी मां की भूमिका के लिए दिया गया है जिसे उन्होंने गहरी संवेदनशीलता से निभाया है जिसके कारण उनकी उपस्थिति फिल्म में स्मरणीय हो गई है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTOR

ARANMULA PONNAMMA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Supporting Actress: **ARANMULA PONNAMMA**

Citation

The Award for the Best Supporting Actress of 1995 is given to **ARANMULA PONNAMMA** for her work in the Malayalam Film **KATHAPURUSHAN** in which she plays the role of a grand mother with tremendous sensitivity which makes her presence in the film memorable.

अरनमुला पोनाम्मा का जन्म 1915 में हुआ तथा उन्हें संगीत की प्रेरणा अपनी माता से मिली। उन्होंने संगीत की उच्च परीक्षा अल्प आयु में उत्तीर्ण की तथा कई स्कूलों में संगीत अध्यापिका का काम किया। 1940 में उन्होंने स्वाती तिरूनल संगीत अकादमी से शिक्षण प्राप्त किया और तीन वर्ष के बाद उन्हें गायिका की उपाधी मिली। उसके पश्चात् उन्हें तरक्की मिली और उनकी त्रिवेन्द्रम के कॉटन हिल हाई स्कूल में नियुक्ति हुई। 1945 में उन्होंने प्रथम नाटक भाग्यलक्ष्मी में मुख्य अभिनेत्री का अभिनय किया। उन्होंने दर्शकों को अपने अभिनय और उत्तम गायन से मुग्ध कर दिया।

कैलाश पिक्चरस् की **शशीधरन** (1950) उनकी प्रथम फिल्म थी जिसमें उन्होंने मुख्य अभिनेत्री के माँ का अभिनय किया। उसके पश्चात् अब तक वे लगभग 300 फिल्मों में माँ के पात्र में अभिनय किया है जो अपने आप में एक कीर्तिमान है।

Aranmula Ponnamma was born in 1915, and inherited a keen taste for music from her mother. After passing the higher examination in music at an early age, she worked as a music teacher in several schools. In 1940, she joined the Swati Tirunal Music Academy and at the end of the three year course secured the title, 'Gayika'. Subsequently she was promoted and posted at Cotton Hill High School, Thiruvananthapuram. In 1945, already a mother of two, she joined the theatre. Her first play was, **Bhagyalakshmi** and she did the heroine's role. She could enthrall the audiences with her elegant acting and excellent singing.

Kailash Pictures' **Sasidharan** (1950) was her first film in which she enacted the part of the heroine's mother. Ever since she has appeared in nearly 300 movies creating a record of sorts for the maximum number of mother-roles.

सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार

मास्टर विश्वास

बाल कलाकार : **मास्टर विश्वास** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कलाकार का 1995 का पुरस्कार **मास्टर विश्वास** को कन्नड़ फिल्म **क्राउर्या** में वयस्कों की क्रूर और गैर समझ वाली दुनिया में डरे हुए एक बच्चे की संवेदनशील भूमिका के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CHILD ARTISTE

MASTER VISHWAS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Child Actor: **MASTER VISHWAS**

Citation

The Award for the Best Child Actor of 1995 is given to **MASTER VISHWAS** for his work in the Kannada Film **KRAURYA** for his sensitive portrayal of a child, traumatised in an adult world devoid of love and understanding.

मास्टर विश्वास की आयु 12 वर्ष है और वे नवोदय विद्यालय, बंगलौर की आठवीं कक्षा के छात्र हैं। उन्होंने अब तक 8 फिल्मों में कार्य किया जिसमें से **क्रौर्य** ही प्रमुख है। उनकी फिल्में है **कीर्ति तांड पुरानीगलु, माना मेचिडा सोस, चिन्न नी नागुतिरू, जाना, हालुन्ड तवारू, रवि तीज, पुतननजा तथा क्रौर्य।**

विश्वास ने 2 वर्ष की आयु से ही भरतनाट्यम की शिक्षा प्राप्त की और मांजेश्वर तथा उसके आस-पास अपने सह कलाकारों के साथ कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए। बंगलौर आकर उन्हें अभिनय का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने बंगलौर में भी नृत्य नाटिकाओं में नृत्य प्रस्तुत किया है। विश्वास एक अच्छे डबिंग कलाकार भी हैं। उन्होंने टी.वी. सीरीयल में भी काम किया है।

Master Vishwas is 12 years old and is a student of 8th Standard in Navodaya Vidyanikethana, Bangalore. He has as yet acted in 8 films with the character in **Kraurya,** being the major one. His films include **Keerthi Tanda Puranigalu, Mana Mechida Sose, Chinna Nee Nagutiru, Jaana, Halunda Tavaru, Ravi Teja, Putnanja** besides **Kraurya.**

He has been learning Bharatnatyam since the age of 2 years and has given many performances in and around Manjeshwar as a member of his dance troupe. In Bangalore he got the opportunity to act in films. He has performed in many a ballets in Bangalore also. Vishwas is also a good dubbing artist. He has acted in TV serials also.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार

एस.पी. बालासुब्रमण्यम

पार्श्व गायक : **एस.पी. बालसुब्रमण्यम** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायक का 1995 का पुरस्कार **एस.पी. बालसुब्रमण्यम** को कन्नड़ फिल्म **संगीत सागर ज्ञानयोगी पंचाक्षर गवई** में शास्त्रीय गीत ''उमड़-घुमड़ गरजे बदरा..... '' के भावपूर्ण गायन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST MALE PLAYBACK SINGER

S.P. BALASUBRAMANYAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Male Playback Singer: **S.P. BALASUBRAMANYAM**

Citation

The Award for the Best Male Playback Singer of 1995 is given to **S.P. BALASUBRAMANYAM** for his soulful rendering of the classical song "umenda ghumanda garaje badara....." in the Kannada Film **SANGEETHA SAAGARA GAANAYOGI PANCHAKSHARA GAVAI.**

श्रीपति पांडिथराध्यूला बालासुब्रमण्यम को उनके चाहने वाले बालू नाम से जानते हैं। वे एक सुविख्यात गायक है और कई भारतीय भाषाओं की फिल्मों में गाना गा चुके हैं - तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालय तथा हिन्दी। उन्होंने 28,000 से अधिक गाने गाए हैं और वे दक्षिण भारत में बहुत प्रसिद्ध हैं।

बालू के रक्त में संगीत बचपन से है। उन्हें संगीत की शिक्षा उनके पिता ने दी। टैलेन्ट कॉनटेस्ट मद्रास में बालू की एस.पी. कोडन्डापानी से मुलाकात हुई। उन्होंने बालू से उसका प्रथम गीत फिल्म **श्री श्री मर्यादा रमन्ना** (तेलगु, 1966) में गवाया। बालू को शौहरत प्राप्त हुई और उन्होंने कई प्रसिद्ध संगीत निर्देशकों के सुरों पर गीत गाए - एम.एस. विश्वनाथन, एम. रंगा राव, देवराजन आदि। उनकी हिन्दी फिल्मों की शुरूआत 1979 में **एक दूजे के लिए** से हुई।

बालू अब एक संगीत निर्देशक भी हैं। उन्होंने तेलगु, कन्नड़, तमिल तथा हिन्दी के 35 फिल्मों में संगीत निर्देशन किया है।

बालू को भारत सरकार के सर्वश्रेष्ठ गायक का पुरस्कार **शंकरभरनम** (1979) के लिए मिला। उन्हें **एक दूजे के लिए** (1981), **सागर संगमम** (1983) तथा **रूद्र वीना** (1988) के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए। उन्होंने मद्रास में कोडन्डापानी की याद में उनके नाम से एक रेकार्डिंग स्टूडिओ खोला है।

Sripathi Panditharadhyula Balasubrahmanyam is called Balu by his followers and fans. He is a renowned singer and has sung in films in many Indian languages - Tamil, Telugu, Kannada, Malayalam and Hindi. He has sung over 28,000 songs in films and is a very popular singer in South India.

Balu has music in his blood and learnt singing from his father at a very young age. S.P. Kodandapani, film music composer spotted him at a Talent search contest in Madras. He gave Balu his break in the film **Sri Sri Maryada Ramanna** (Telugu, 1966). Success followed and Balu sung under renowned film music composers like M.S. Viswanathan, M. Ranga Rao, Devarajan, etc. He came to Hindi cinema in 1979 with **Ek Duje Ke liye**.

Balu has now started composing as well. He has scored music in 35 films in Telugu, Kannada, Tamil and Hindi.

Balu received the Indian Government Award for Best Singer for **Shankarabharanam** (1979). He received the National Award for **Ek Duje Ke Liye** (1981), **Sagara Sangamam** (1983) and Rudra Veena (1988). He has set up a modern sound studio in memory of Kodandapani in Madras. He has toured various countries widely and has given performances with his musical troupe.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार

अंजलि मराठे

पार्श्व गायिका : **अंजलि मराठे** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का 1995 का पुरस्कार **अंजलि मराठे** को मराठी फिल्म **डोघी** में सुरीले और हृदयग्राही ढंग से जीवन की शुष्कता का गीत गाने के लिए दिया गया है।

BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

ANJALI MARATHE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Female Playback Singer: **ANJALI MARATHE**

Citation

The Award for the Best Female Playback Singer of 1995 is given to **ANJALI MARATHE** for her melodious and heartrendering song expressing the aridness of life in the Marathi Film **DOGHI.**

अंजलि मराठे अल्प आयु से ही अपनी माँ के पास शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। उनकी माता अनुराधा मराठे विख्यात शास्त्रीय तथा अल्प शास्त्रीय गायिका हैं और वे हिन्दी तथा मराठी गानों का मंच प्रस्तुती करती हैं। अंजलि ने **चौकट राजा** (माराठी), **सांइबाबा** (मराठी) तथा **दोघी** (मराठी) के लिए गीत लिपिबद्ध किये हैं। उन्होंने टी वी. सीरियल **झूठे सच्चे गुडड़े बच्चे** (हिन्दी) तथा **ओलक संगना** (मराठी) के लिए भी केवल 9 वर्ष की आयु से गीत लिपिबद्ध किए है। उन्होंने पुणे रेडिओ के बालोद्यान (बच्चों के कार्यक्रम) के लिए गीत प्रस्तुत किया है। अंजलि ने कई मंचों पर गाना गाया है। उन्होंने जागतिक मराठी परिषद, बम्बई द्वारा आयोजित स्मरनयात्रा में भी अंश लिया था। बच्चों के कार्यक्रम चिमनगनी में उन्होंने गीत प्रस्तुत किया था। इनके अलावा, अंजलि इलोक्यूशन, डिबेट, नृत्य, नाटक, खेल कूद, समाज सेवा तथा स्ट्रीट प्लेज में भी भाग लेती हैं।

ये उनका पहला राष्ट्रीय पुरस्कार है।

Anjali Marathe has been learning classical music from her mother Anuradha Marathe who is herself a renowned classical and light vocalist and conducts stage shows of Marathi as well as Hindi songs. Anjali has recorded songs for Chaukat Raja (Marathi), Saibaba (Marathi), besides Doghi (Marathi) and title songs for serial - **Jhuthe Sacche Gudde Bacche** (Hindi), **Olak Sangana** (Marathi) at a very young age of 9 years. She has also recorded songs for AIR Pune for Balodyan (Programme for Children). She has participated in many stage shows. She participated in 'Smaranyatra' held at the Jagtik Marathi Parishad in Bombay. She participated in a programme for children, Chimangani. Anjali, besides these shows, also participates in elocution, debate, dance, drama, sports, social work and street plays.

This is her first National Award.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

संतोष सीवान

कैमरामैन : **संतोष सीवान** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

फिल्म को प्रोसेसिंग करने वाली प्रयोगशाला : **जेमिनी कॅलर लैबोरेटरी**, मद्रास को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम छायांकन का 1995 का पुरस्कार **संतोष सीवान** को मलयालम फिल्म **काला पानी** में रंगों, छाया और प्रकाश के निपुण उपयोग से तत्कालीन युग की झलक की प्रामाणिकता उभारने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

SANTOSH SIVAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Cameraman: **SANTOSH SIVAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the laboratory processing the film : **Gemini Colour Laboratory, Madras.**

Citation

The Award for the Best Cinematography of 1995 is given to **SANTOSH SIVAN** for bringing out the flavour and authenticity of a period with a remarkable use of lights, shades and colours in the Malayalam Film **KAALA PAANI.**

संतोष सिवान की पहली फिल्म थी 'स्टोरी आफ टिब्लू' जिसकी अवधि 60 मि. थी और ये फिल्म डिविज़न के लिए बनाई गई थी। ये फिल्म अरूनाचल प्रदेश में स्थित थी। इस फिल्म को लघु चित्र का सर्वोत्तम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। संतोष सिवान 1990 के ग़ैर कथाचित्र मण्डल के सदस्य थे। उन्होंने 17 कथाचित्र तथा 41 ग़ैर कथचित्रों का छायांकन किया जो हिन्दी, तमिल, मलयालम भाषाओं में है। उनकी कुछ फिल्में हैं **राख, रूदाली, गर्दिश** (सभी हिन्दी में) **रोजा** (तमिल/हिन्दी), **दलपती** (तमिल), **अभयम** (मलयालम), **इन्दिरा** (तमिल) इत्यादि। उन्हें **पेरूमथाचन** (मलयालम) के लिए छायांकन का 1991 का राष्ट्रीय पुरस्कार तथा ग़ैर कथाचित्र **में मोहिनिअट्टम** के लिए 1991 का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्हें कई राज्य स्तर के पुरस्कार भी प्राप्त हुए।
ये उनकी द्वितीय कथाचित्र है।

Santosh Sivan has directed a 60 min. film 'Story of Tiblue' for Films Division and received the National Award for Best Short Fiction film (1988). The film was shot in Arunachal Pradesh. He has been the Jury member for documentaries for National Awards in 1990. He has done the cinematography for 17 feature films and 41 documentaries in Hindi, Tamil and Malayalam languages. Some of his films are **Raakh, Rudali, Gardish** (all in Hindi), **Roja** (Tamil/Hindi), **Thalapathi** (Tamil), **Abhayam** (Malayalam) **Indira** (Tamil), etc. He received the National Award for Cinematography for Feature film for **Perumthachan** (Malayalam) (1991) and for documentary for **Mohiniyattam** (1991). He has received quite a few state awards as well.

सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार

अशोक मिश्रा एवं **सईद अख्तर मिर्ज़ा** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पटकथा का 1995 का पुरस्कार **अशोक मिश्रा** और **सईद अख्तर मिर्ज़ा** को हिन्दी फिल्म **नसीम** में 1992 के भारत की अस्थिर और गड़बड़ी वाली स्थिति की कौशलपूर्ण, संवेदनशील दृश्यों को गहराई एवं सीधे-सादे शब्दों में उभारने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SCREENPLAY

ASHOK MISHRA & SAEED AKHTAR MIRZA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Screenplay Writer: **ASHOK MISHRA & SAEED AKHTAR MIRZA**

Citation

The Award for the Best Screenplay of 1995 is given to **ASHOK MISHRA & SAEED AKHTAR MIRZA** for the Hindi Film **NASEEM,** for their masterly and sensitive visual narration of a volatile and confused situation of the year 1992 in India with great depth and simplicity of words.

अशोक मिश्रा

सईद अख्तर मिर्ज़ा ने अर्थ शास्त्र तथा राजनीति विज्ञान में बम्बई विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधी प्राप्त की। उन्होंने 6 वर्ष विज्ञापन के क्षेत्र में कार्य किया जिसके पश्चात उन्होंने 1976 में पुणे के फिल्म एवं टेलिविजन संस्था से फिल्म निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया। उनकी प्रथम फिल्म थी **अरविंद देसाई की अजीब दास्तां** (1978), जिसके पश्चात उन्होंने **एल्बर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है?** (1981), **मोहन जोशी हाज़िर हो** (1983) और **सलीम लंगड़े पे मत रो** (1989) का निर्देशन किया। उनके विषय के चयन तथा उसके व्यवहार को अत्यंत सराहा गया। **अरविंद देसाई की अजीब दास्तां** को बर्लिन फिल्म समारोह में दर्शाया गया तथा **एल्बर्ट पिन्टो को गुस्सा क्यों आता है?** को सईद की श्रेष्ठ फिल्म माना जाता है। **मोहन जोशी हाज़िर हो** को रायो डी जानेइरो फिल्म समारोह ब्राज़ील को सराहा गया तथा उसे सर्वोत्तम परिवार कल्याण का राष्ट्रीय पुरस्कार (1984) प्राप्त हुआ। उन्हें 1989 में **सलीम लंगड़े पे मत रो** के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला तथा इस फिल्म को उसी वर्ष टोक्यो के अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में दर्शाया गया। उनकी गैर कथाचित्रों में प्रमुख हैं - **द प्राब्लेमस् आफ अर्बन हाउसिंग, स्लम एविक्शन, पिपारसोड, इज़ एनिबडी लिस्निंग?, थर्ड वाएस** आदि। उन्होंने कई लोकप्रिय टेलिविजन धारावाहिक भी बनाए - नुक्कड़, इंतेजार और नया नुक्कड़।

Ashok Mishra

Saeed Akhtar Mirza graduated in economic and political science from the University of Bombay. He worked in advertising for 6 years and obtained a diploma in film direction from Film and Television Institute of India, Pune in 1976. His debut film was **Arvind Desai Ki Ajeeb Dastan** (1978), which was followed by **Albert Pinto Ko Gussa Kyoon Atta Hai?** (1981), **Mohan Joshi Hazir Ho** (1983) and **Salim Langde Pe Matt Ro** (1989). His work was highly appreciated for the choice of subjects as well as its handling. **Arvind Desai Ki Ajeeb Dastan** was shown at Berlin film festival while **Albert Pinto Ko Gussa Kyon Atta Hai?** is considered Saeed's best film. **Mohan Joshi Hazir Ho** won high praise at Rio de Janeiro film festival, Brazil and received the National Award for Best Film on family welfare in 1984. He won the National Award for **Salim Langde Pe Matt Ro** in 1989 and the film was screened at International Film Festival in Tokyo in 1989. His documentaries include **The problems of urban housing, Slum eviction, Piparsod, Is anybody listening? The third voice,** etc. He has made popular television serials like Nukkad, Intezar and Naya Nukkad.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

दीपन चटर्जी

ध्वनि आलेखक : **दीपन चटर्जी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1995 का पुरस्कार **दीपन चटर्जी** को मलयालम फिल्म **काला पानी** में सावधानीपूर्वक ध्वनि के उपयोग के द्वारा अंडमान की सेलुलर जेल के असाधारण वातावरण को उभारने और फिल्म **हलो** में प्रासंगिक और ध्वनि प्रभावों के मिश्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

DEEPAN CHATTERJI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000/- to the Audiographer: **DEEPAN CHATTERJI**

Citation

The Award for the Best Audiographer of 1995 is given to **DEEPAN CHATTERJI** for the meticulous use of sound, creating the unusual aura of Cellular Jail of Andaman in the Malayalam Film **KAALA PAANI** and also for the unique mixing of incidental and effect sound in the Hindi Film **HALO.**

दीपन चटर्जी ने अपना कार्य जीवन (स्व) आर.डी. बर्मन के साथ संगीतज्ञ के रूप में आरम्भ किया पर 1975 में **शोले** फिल्म से वे ध्वनि आलेखक का काम करने लगे। उन्हें **अभिमन्यु** (मलयालम) के लिए 1991 में केरला का राज्य पुरस्कार प्राप्त हुआ था।
ये उनका प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार है।

Deepan Chatterji started his career as a musician with late R.D. Burman but changed his stream to sound recordist with the film **Sholey** in 1975. He received the Kerala State award for the film **Abhimanyu** (Malayalam) in 1991 for sound.
This is his first National Award.

सर्वोत्तम संपादन पुरस्कार

सुरेश उर्स

संपादक : **सुरेश उर्स** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संपादक का 1995 का पुरस्कार **सुरेश उर्स** को तमिल फिल्म **बॉम्बे** में उत्तम शिल्पकारिता के माध्यम से कथानक में गति, लय और बहाव पैदा करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

SURESH URS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Editor: **SURESH URS**

Citation

The Award for the Best Editor of 1995 is given to **SURESH URS** for his work in the Tamil Film **BOMBAY,** for its impeccable craftmanship in bringing about the pace, rhythm and flow in narrating the story.

सुरेश उर्स ने 150 से अधिक कन्नड़ चित्रों तथा 140 गैर कथाचित्रों का संपादन किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने तमिल, कोंकणी, कोडवा, तुलु तथा एक हिन्दी चित्र का भी संपादन किया है। उनके चित्रों में प्रमुख हैं **दलपति, रोजा, थिरूड़ा थिरूड़ा, मैसूर मलीज, मूरूडारिगलु, स्वामि, मधुमास** आदि। उनके गैर कथाचित्र तथा टी.वी. सीरीयल के संपादन के लिए उन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हुए । उन्होंने विख्यात निर्देशकों के लिए काम किया जैसे मणिरत्नम, गिरीश कसारावल्ली, टी.एस. नागभरना, बरागूर रामा चन्द्रप्पा, प्रेम कारन्द, नारायना स्वामी, गिरीश कर्नाड आदि। उन्होंने **रूरल स्पोर्टस, कैन्सर, लेप्रौसी, एड्स द किलर, द सागा आफ इन्डियन इम्मिग्रेरान टू मौरिशस, द लैंड आफ जिवेल्स, कनका पुरन्दरा** आदि गैर कथाचित्रों का संपादन किया है।

उन्हें राज्य तथा अन्य स्तरों पर कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

Suresh Urs has edited over 150 Kannada films and 40 documentaries besides films in Tamil, Konkani, Kodava, Tulu and one Hindi film. The list of the films is endless which include **Dalapati, Roja, Thiruda Thiruda, Mysore Mallige, Moorudarigalu, Swamy, Madhumasa,** etc. He has also worked for documentaries and T.V. serials and received many an award. He has worked with reputed directors like Maniratnam, Girish Kasaravalli, T.S. Nagabharana, Baragoor Rama Chandrappa, Prema Karanth, Narayana Swamy, Girish Karnad and so many other reputed directors. His documentaries include **Rural sports, Cancer, Leprosy, Aids the Killer, The saga of Indian immigration to Mauritius, The land of jewels, Kanake Purandra,** etc.

He has been awarded many a times at the state and other levels.

सर्वोत्तम कला निर्देशन पुरस्कार

साबु सिरिल

कला निर्देशक : **साबु सिरिल** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला निर्देशन का 1995 का पुरस्कार **साबु सिरिल** को मलयालम फिल्म **काला पानी** में इस शताब्दी के प्रथम दशकों के, बड़े ही उपयुक्त और श्रेष्ठ ढंग से उभारने के लिए और बड़ी ही बारीकी से उसके वातावरण को पैदा करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ART DIRECTION

SABU CYRIL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Art Director: **SABU CYRIL**

Citation

The Award for the Best Art Direction of 1995 in given to **SABU CYRIL** for his very apt and outstanding recreation of the early decades of this century, with a remarkably detailed work of mis-en-scene in the Malayalam Film **KAALA PAANI.**

साबु सिरिल विजुअल कम्यूनिकेशन डिजाइन में मद्रास विश्वविद्यालय के फैकल्टी आफ इन्जीनियरिंग से विज्ञान के स्नातक बनें। उन्हें तमिलनाडू सरकार के सर्वोत्तम उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थी का पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्होंने अपना कार्य जीवन एक फ्रीलांस ग्राफिक डिजाइनर के रूप में आरम्भ किया (1983-88) तथा साथ ही विडिओ और चलचित्र में स्पेशल एफेक्ट का काम भी किया। 1988 में उन्होंने विज्ञापन फिल्मों तथा कथाचित्रों में कला निर्देशन का कार्य आरम्भ किया। उन्होंने हिन्दी, मलयालम, तमिल, तेलुगु तथा कन्नड़ भाषाओं में 39 कथाचित्र तथा 60 विज्ञापनों में काम किया है। उनकी फिल्मों में प्रमुख हैं **अइयर द ग्रेट, अमरम, आदमी और अपसरा, करेन्ट, अंकल बन, सूर्य मानसन, अदवैथन, चेलुवी, मुस्कुराहट, पूधिया मुगम, गांडीवम, गर्दिश, पवित्रम, मंत्रिकम, कालापानी**, आदि। साबु सिरिल को **थेनमाविन कोम्बाथ** के लिए कला निर्देशन का राज्य तथा राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त है। उन्हें राज्य स्तर पर कई अन्य पुरस्कार भी प्राप्त हैं।

Sabu Cyril obtained a B. Sc Degree in visual communication design from the Faculty of Engineering, Madras University. He was awarded the best outgoing student by the government of Tamil Nadu. He started by working as a freelance graphic designer (1983-88) and simultaneously worked on Special Effects for videos and motion pictures. In 1988, he started working as an Art Director for ad films and feature films. He has worked in 60 ad-films and 39 feature films in Hindi, Malayalam, Tamil, Telugu and Kannada languages. His films include **Iyer the Great, Amaram, Aadmi Aur Apsara, Current, Uncle Bun, Surya Manesan, Advaitham, Cheluvi, Muskurahat, Pudhia Mugam, Gandeebam, Gardish, Puvithram, Manthrikam, Kaalapani,** etc. **Thenmavin Kombath** won him the state as well as the National Award for the Best Art Direction. He has won many other state awards.

सर्वोत्तम वेशभूषाकार पुरस्कार

डॉली आहलूवालिया

वेशभूषाकार : **डॉली आहलूवालिया** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वेशभूषाकार का 1995 का पुरस्कार **डॉली आहलूवालिया** को हिन्दी फिल्म **बैंडिट क्वीन** में चम्बल के लोगों और बीहड़ों की कठोर सच्चाई और विभिषण संरचना के अनुरुप प्रामाणिक वेशभूषा तैयार करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST COSTUME DESIGNER

DOLLY AHLUWALLA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Costume Designer: **DOLLY AHLUWALIA**

Citation

The Award for the Best Costume Designer of 1995 is given to **DOLLY AHLUWALIA** in the Hindi Film **BANDIT QUEEN** for her authentic creation of costumes in terms of the tone and texure of the rugged and harsh realities of ravines of Chambal and its people.

डॉली अहलूवालिया ने नैशनल स्कूल आफ ड्रामा से अभिनय में स्नातक उपाधि प्राप्त की। उन्होंने 1993 में सिडनी, ऑस्ट्रेलिया से कौस्ट्यूम डिजाइनिंग टीचिंग मेथडोलाजी एट नेशनल इन्सटिट्यूट आफ ड्रामेटिक आर्ट से सर्टिफिकेट कोर्स उत्तीर्ण किया। उन्होंने नेशनल स्कूल आफ ड्रामा में 9 वर्ष कार्य किया - अभिनेत्री, वेशभूषाकार, मंच प्रबंधका उन्होंने प्रसिद्ध निर्देशकों के साथ भी काम किया है - ई अल्काजी, बी.वी. कारंथ, बैरी जॉन, एम.के. राइना, सत्यदेव दूबे, बंसी कौल, आदि। डॉली के कुछ प्रमुख नाटक है सूर्य की अंतिल किरन से, आजर का ख्वाब, विरासत, आदि। वेशभूषाकार के रूप में उमराओ, आषाढ़ का एक दिन, लेहरों के राजहंस, अंधा युग, यम गाथा, आदि में डॉली ने काम किया। डॉली आहलूवालिया ने टी वी. सीरीयल तथा फिल्मों में भी काम किया है जैसे आधारशिला, ज़मीन, एक घर आस पास, मंजिलें, तनाव, आदि। उन्होंने कई फिल्मों तथा सीरियल में वेशभूषाकार के रूप में काम किया है। वेशभूषाकार के अलावा वे एक अभिनेत्री तथा भूमिका निर्देशिका का काम करती हैं। उन्होंने नाटक की वेशभूषा के ऊपर वर्कशॉप भी आयोजित की है। वे नेशनल स्कूल आफ ड्रामा के फैशन डिजाइनिंग की विसिटिंग फैकल्टी भी है। उन्होंने विदेशों में भी कई प्रदर्शन किये है।

यह उनका प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार है जबकि उन्हें कई और पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है।

Dolly Ahluwalia has a degree in acting from the National School of Drama. She has done a certificate course in 1993 for Costume Designing Teaching Methodology at National Institute of Dramatic Art, Sydney, Australia. She has worked for National School of Drama for 9 years as an actress, costume designer, stage manager with eminent directors like E. Alkazi, B.V. Karanth, Barry John, M.K. Raina, Satydev Dubey, Bansi Kaul and scores of others. Her major assignments in theatre include Surya Ki Antim Kiran Se, Aazar ka Khwab, Virasat, etc. As a costume designer, her play include Umrao, Ashad Ka Ek Din, Lehron Ke Rajhans, Andha Yug, Yum Gatha, etc.

Dolly has worked in television serials and films, names of some of them are Aadharshila, Zameen, Ek Ghar Aas Paas, Manzilen, Tanaav, etc. She has designed the costume for many a films and serials as well. Besides costume designer she is an actress and a casting director, for plays and films. She has conducted workshops on Theatre Costume Designing. She is a visiting Faculty for Fashion Designing in NSD and conducts teaching assignments in Costume Designing at National Institute of Fashion Technology, Delhi. She has given many a performances abroad.

This is her first National Award although she has been the recipient of many other awards.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

हंसलेखा

संगीत निर्देशक: **हंसलेखा** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संगीत निर्देशक का 1995 का पुरस्कार **हंसलेखा** को कन्नड़ फिल्म **संगीत सागर ज्ञानयोगी पंचाक्षर गवई** में स्वस्थ संगीतमय संरचना और हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक शास्त्रीय संगीत का प्रामाणिक उपयोग करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

HAMSALEKHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Music Director: **HAMSALEKHA**

Citation

The Award for the Best Music Director of 1995 is given to **HAMSALEKHA** for the Kannada Film **SANGEETHA SAAGARA GAANAYOGI PANCHAKSHARA GAVAI** for his authentic utilisation of classical Indian music in both the Hindustani and Karnatic style and presenting a wholesome musical structure to the film.

हंसलेखा का वास्तविक वास्तविक नाम है जी. गंगाराजू जिन्होंने संगीत अपने माता-पिता से प्राप्त किया। उन्होंने श्री शिवराम (कर्नाटक शैली), श्री दास (हिन्दुस्तानी शैली) तथा श्री एस.के. जोसेफ (पाश्चात्य शैली) से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने अपना पहला गीत त्रिवेनी फिल्म के लिए 1970 में लिखा। उन्होंने 1974 में अपना नाट्य दल आरम्भ किया तथा कई संगीतात्मक नाटक का निर्माण किया। 1981 में **राहू चन्द्र** के लिए उन्होंने गीत तथा वार्त्तालय लिखे, संगीत दिया तथा निर्देशन किया। उन्होंने **नानू नन्ना हेन्डटी** (1985) के लिए गीत लिखे। **प्रीमा लोका** (1987) के लिए उन्होंने गीत लिखे, पटकथा लिखा तथा संगीत निर्देशन किया। **अवाले नन्ना हेन्डटी** (1988) की कहानी, पटकथा, गीत, वार्त्तालाप लिखा तथा संगीत निर्देशन किया। उन्होंने 10 वर्षा में 250 से अधिक फिल्मों में गीत लिखे तथा संगीत निर्देशन किया है।

उन्हें फिल्मों में योगदान के लिए कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उन्होंने हम्सलोक नामक एक व्यवसाय आरम्भ किया है जहाँ पूर्व रेकार्ड किए औडिओ तथा विडिओ कैसेट का निर्माण किया जाता है तथा विज्ञापनों और धारावाहिकों का निर्माण होता है।

Hamsalekha is the popular name of G. Gangaraju who inherited the qualities of music from his parents. He underwent training under Shri Shivaram (Carnatic music), Shri Das (Hindustani music) and Shri S.K. Joseph (Western music). He penned his first song for the feature film **Triveni** in 1970. He formed his own drama troupe in 1974 and produced many musical plays. In 1981, he directed, wrote lyrics, dialogues and composed music for **Rahu Chandra.** He wrote lyrics for **Naanu Nanna Hendti** (1985), screen-play, dialogues, lyrics and scored music for **Preema Loka** (1987), story, scree-play, lyrics, dialogues and was the music director for **Avale Nanna Hendti** (1988). He has written lyrics and scored music for over two hundred and fifty films in a short span of ten years.

He has been awarded many times for his contributions in films. He has set up a unit named Hamsaloka which produces pre-recorded audio cassettes, video cassettes and advertisements and serials.

सर्वोत्तम गीत पुरस्कार

अमित खन्ना

गीतकार: **अमित खन्ना** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गीतकार का 1995 का पुरस्कार **अमित खन्ना** को हिन्दी फिल्म **भैरवी** में उनके गीत ''कुछ इस तरह दो दिल मिले'' को दिया गया है। यह गीत अर्थपूर्ण, कवित्वमय और अपनी संवेदनशीलता से गीत-सिक्वेंस में भावपक्ष उभार देता है जिससे फिल्म उभरती है।

AWARD FOR THE BEST LYRICS

AMIT KHANNA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Lyricist: **AMIT KHANNA**

Citation

The Award for the Best Lyricist for the year 1995 is given to **AMIT KHANNA** for his lyrics **Kuch is Tareh Do Dil Mile'** in the Hindi Film **BHAIRAVI.** The lyrics are meaningful, poetic and sensitively enhance the overall mood of the song sequence, thereby elevating the film.

अमित खन्ना एक बहुरूपी प्रतिभा हैं जिन्होंने दिल्ली के सेंट स्टीफेन्स कॉलेज से अंग्रेजी में हॉनर्स लेकर स्नातक किया। उसके बाद उन्होंने 1966-70 तक कुछ प्रमुख थियेटर और संगीत के कलाकारों के साथ कार्य किया। उन्होंने 1971-81 तक देव आनन्द के नवकेतन में काम किया। नवकेतन के बैनर तले उन्होंने **हीरा पन्ना** (1974), **देस परदेस** (1977), **लूटमार** (1980), **मनपसंद** (1981) आदि फिल्मों का निर्माण किया। उन्होंने **शीशे का घर** (1984) और **शेष** (1988) फिल्मों का निर्माण तथा निर्देशन किया। अमित खन्ना ने कई प्रसिद्ध टी वी सीरियल का भी निर्माण किया है - बुनियाद, छपते छपते, अपने आप, आदि। उन्होंने मिर्च मसाला (1993), मेरे साथ चल (1993), संगीत सितारे (1994), रंगोली (1994), स्वाभिमान (1995), ए माउथ फुल आफ स्काई (1996) आदि का दूरदर्शन के लिए निर्माता तथा निर्देशन किया है। उन्होंने कई विज्ञापन तथा गैर कथाचित्र भी बनाए है। उन्होंने 40 से अधिक फिल्मों के लिए गीत लिखे हैं जिनमें प्रमुख हैं - **चलते चलते** (1975), **बातों बातों में** (1979), **दूसरी दुल्हन** (1983) **अव्वल नम्बर** (1988) **सच्चे का बोल बाला** (1988) **और एक प्रेम कहानी** (1993) आदि। उन्होंने शैरन प्रभाकर, सल्मा आगा, महेन्द्र कुमार आदि के निजी ऐल्बम के लिए भी गीत लिखे हैं। कुछ प्रमुख टीवी सीरियलों के लिए भी उन्होंने गीत लिखें हैं जैसे - देख भाई देख, हमराही, जमीन आसमान, गुमराह, स्वाभिमान, आदि। अमित खन्ना प्लस चैनेल (इंडिया) लि. के प्रबंध निदेशक हैं तथा कई संस्थाओं के सदस्य भी हैं। वे कई पत्रिकाओं के लेखक भी हैं।

Amit Khanna is a versatile personality with an honours in English from St. Stephen's, Delhi. He worked backstage with prominent theatre and music personalities from 1966-70 in Delhi. He was associated with Dev Anand's Navketan from 1971-1981. He has produced films like **Heera Panna** (1974), **Des Pardesh** (1977), **Lootmaar** (1980), **Manpasand** (1981) etc. He has produced and directed **Sheeshay Ka Ghar** (1984), **Shesh** (1988) also. He has produced TV serials like Buniyaad, Chapte Chapte, Apne Aaap etc. He has produced and directed serials like - Mirch Masala (1993), Mere Saath Chal (1993), Sangeet Sitare (1994), Rangoli (1994) Swabhimaan (1995) A Mouthful of Sky for the Doordarshan. He has also produced and directed several advertising shorts and documentaries. He has written lyrics for over 40 films which include **Chalte Chalte** (1975) **Baton Baton Mein** (1979) **Doosri Dulhan** (1983) **Awwal Number** (1988) **Sachche Ka Bol Bala** (1988) **Aur Ek Prem Kahani** (1995) etc. He has written lyrics for private albums of Sharon Prabhakar, Salma Agha, Mahendra Kapoor and others. He has written lyrics for scores of TV serials - Dekh Bhai Dekh, Humrahi, Zameen Aasmaan, Gumraah, Swabhimaan etc. He is the Managing Director of Plus Channel (India) Ltd. and is a member of many organisations. He is also a regular contributor to various magazines and periodicals.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

श्याम बेनेगल

श्याम बेनेगल को रजत कमल तथा 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्णायक मंडल का 1995 का विशेष पुरस्कार निर्देशक **श्याम बेनेगल** को अंग्रेजी फिल्म द **मेकिंग ऑफ द महात्मा** में दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी के विकास के आरम्भिक वर्षों की प्रभावी पुनर्रचना करने और भविष्य के ''महात्मा'' की अंतर्दृष्टि देने के लिए प्रदान किया गया है।

SPECIAL JURY AWARD

SHYAM BENEGAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to: **SHYAM BENEGAL** (for The Making of The Mahatma)

Citation

The Special Jury Award of 1995 is given to the Director **SHYAM BENEGAL** in the English Film **THE MAKING OF THE MAHATMA** for effectively recreating the formative years of Gandhi during his early years in South Africa thereby giving insight into the future "Mahatma".

श्याम बेनेगल अपनी पहली फिल्म अंकुर (1973) के बाद से ही एक माने हुए फिल्म निर्माता माने जाते हैं। उनकी फिल्मों को भारत में ही नहीं विदेशों में भी सराहा गया। उनकी फिल्में विभिन्न पहलूओं को नज़र में रखकर बनाई गई हैं पर मूलत: वे भारतीय विषयों पर ही आधारित हैं। वे पुणे के फिल्म एवं टेलिविज़न इंस्टिट्यूट तथा राष्ट्रीय फिल्म स्कूल से संबंध रखते हैं। उन्होंने 1965-70 तक मास कम्यूनिकेशन के तकनीक के विषय का शिक्षण दिया। उनकी लगभग सभी फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। कई फिल्मों को अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले हैं। वे 1970-72 तक होमी बाबा फैलो रह चुके हैं जिस समय उन्होंने बाल टेलिविज़न में शिक्षा प्राप्त किया और कुछ महीने बॉसटन के डब्लू.जी.बी.एच. में सह-निर्माता के रूप में कार्य किया। उन्होंने न्यू यार्क के बाल टेलिविज़न वर्कशॉप में भी कुछ समय व्यतीत किया। श्याम बेनेगल को पद्मश्री (1976) तथा पद्मभूषण (1991) से भी सम्मानित किया गया है।

श्याम बेनेगल की कुछ प्रमुख फिल्में हैं **अंकुर** (1973), **निशांत** (1975), **मंथन** (1976), **भूमिका** (1977), **कोन्डूरा** (1977), **जुनून** (1978), **कल्युग** (1981), **आरोहन** (1982), **मण्डी** (1983), **त्रीकाल** (1986), **सूरज का सातवाँ छोड़ा** (1993), तथा मम्मो (1995) उन्होंने कई लोकप्रिय टेलिविज़न सीरियल भी बनाए हैं - भारत एक खोज (1988-89), अम्रावती की कहानियाँ (1994)। इसके अलावा उन्होंने कई ग़ैर कथाचित्र तथा विज्ञापन भी बनाए हैं।

Shyam Benegal has been considered one of the leading film-makers of the country since his first feature film **Ankur** (1973). His films have been seen and acclaimed widely not only in India but in International Film Festivals as well. The core subject of his films has been varied in nature but mainly centered around contempory Indian experience. He has been associated with FTII, Pune and National Film School. He has also taught mass communication techniques between 1965-70. Practically all his films have won National Awards and several of them have been awarded internationally. He was a Homi Baba fellow (1970-72) during which time, he studied Children's Television and worked for a few months as Associate Producer with WGBH, Boston and devoted some time with Children Televisions workshop in New York. Shyam Benegal was awarded Padma Shri (1976) and Padma Bhushan (1991).

Some of his films besides **Ankur** are **Nishant** (1975), **Manthan** (1976,) **Bhumika** (1977), **Kondura** (1977), **Junoon** (1978), **Kalyug** (1981), **Arohan** (1982), **Mandi** (1983), **Trikal** (1986), **Suraj Ka Satvan Ghoda** (1993) and **Mammo** (1995). He has also to his credit some very popular television serials - Bharat Ek Khoj (1988-89), Amravati Ki Kathayen (1994). Besides he has also directed many documentaries and advertising commercials.

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव पुरस्कार

वेंकी

प्रभाव सृजक: **वेंकी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव का 1995 का पुरस्कार **वैंकी** को मलयालम फिल्म **काला पानी** में नवीन और भव्य दृश्य प्रभावों की रचना के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SPECIAL EFFECTS

VENKI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Creator: **VENKI**

Citation

The Award for the Best Special Effects of 1995 is given to **VENKI** creating innovative and spectacular visual effects for the Malayalam Film **KAALA PAANI.**

वेंकी सेम्बामूर्ती ने मद्रास के गर्वनमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट से फाईन आर्ट में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। वे विशेष प्रभाव सृजक के विशेषज्ञ हैं। उन्होंने 11 वर्ष एनिमेशन, ऑप्टिकल तथा कम्प्यूटर ग्राफिक्स में काम किया है। उनकी कुछ प्रमुख फिल्में हैं - **अपूर्वा सागोथरारगल** (तमिल 1989), **अंजलि** (तमिल 1990), **जेन्टलमैन** (तमिल 1993), **भैरवा द्वीपम** (तेलगु 1996), **कादलन** (तमिल 1994), **रंगीला** (हिन्दी 1995) आदि।

Venki Sambamoorthy is a post graduate in Fine Arts from the Govt. College of Arts & Craft, Madras and specializes in special visual effects. He has 11 years experience in Animation, Optical & Computer Graphics. Some of his important films are **Apoorva Sagotharargal** (Tamil 1989), **Anjali** (Tamil 1990), **Gentleman** (Tamil 1993), **Bhairava Dweepam** (Telugu 1996), **Kaadlan** (Tamil 1994), **Rangila** (Hindi 1995), etc.

सर्वोत्तम नृत्य संयोजन पुरस्कार

इलियाना सिटारिस्टी

नृत्य संयोजक : **इलियाना सिटारिस्टी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम नृत्य संयोजक का 1995 का पुरस्कार **इलियाना सिटारिस्टी** को बंगला फिल्म **युगान्त** में नृत्य-सिक्वेंस की मनोहारी और कल्पनापूर्ण रचना के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CHOREOGRAPHY

ILLEANA CITARISTI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Choreographer: **ILLEANA CITARISTI**

Citation

The Award for the Best Choreographer of 1995 is given to **ILLEANA CITARISTI** for her simply graceful and imaginative compositions of the dance sequence in the Bengali Film **YUGANT.**

इलियाना सिटारिस्टी को दर्शन में डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त है जिसमें उनका विषय था 'साइको-एनालिसिस एण्ड ईस्टर्न माइथोलॉजी'। जन्म से वे इटालियन हैं पर उन्होंने कई वर्ष परंपरागत तथा प्रयोगात्मक थियेटर से यूरोप में अनुभव अर्जन किया जिसके पश्चात वे भारतीय नृत्य कला सीखने लगीं। वे 1979 से उड़िसा में रह रही हैं तथा वहां के लोग, उनकी भाषा तथा उनके संस्कृति के स्पर्श में अपना समय व्यतीत कर रही हैं। उन्होंने पद्मभूषण केलुचरण महापात्रा से ओडिसी नृत्य का शिक्षण लिया। वे मयूरभंजी छऊ में भी निपुण हैं जिसका शिक्षण उन्हें गुरू हरि नायक ने दिया। उन्हें भूबनेश्वर के संगीत महाविद्यालय से आचार्य की उपाधि प्रदान की गई है।

इलियाना ने भारत के सभी मुख्य शहरों मेंअपने नृत्य का प्रदर्शन किया है तथा उनके लेख भारत तथा विदेशों की पत्रिकाओं में प्रकाशित किए जाते हैं। मयूरभंजी छऊ नृत्य शैली में बनी ग्रीक माइथोलॉजी की 'इको एण्ड नारसिसस' के नवीनता पूर्ण नृत्य संयोजन के लिए इलियाना को 1985 में बाम्बे के ईस्ट वेस्ट डांस एनकाउंटर में अत्यंत सराहना प्राप्त हुई।

वे कटक दूरदर्शन की प्रथम श्रेणी की कलाकार हैं तथा उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इन दिनों वे इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आर्टस् के लिए उड़िसा के मार्शियल आर्ट पर खोज करने में व्यस्त हैं।

Illeana Citaristi holds a Doctorate in Philosophy with a thesis in 'Psycho-analysis and eastern mythology.' Italian by birth, she has picked up Indian dance after years of experience in traditional as well as experimental theatre in Europe. She has been living in Orissa since 1979 in close contact with people, their language and culture. She has learnt Odissi from Padmabhushan Kelucharan Mohapatra. She is equally at home with the different martial postures of Mayurbhanji Chhau which she learnt under the guidance of Guru Shri Hari Nayak, obtaining the title of 'Acharya' from the Sangeet Mahavidyalaya of Bhubaneshwar in Orissa.

Illeana has given lecture-demontrations in all major cities in India and her articles have been published in India and abroad. Her innovative choreography of the Greek myth 'Echo and Narcissus' in Mayurbhanji Chaau style was a revelation during the East-West Dance Encounter held in Bombay in 1985.

She is an 'A' grade artist of Cuttack Television and has been awarded many times. She is at present working on a research project on the Martial Art of Orissa under the auspices of Indira Gandhi National Centre for the Arts.

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र पुरस्कार

इतिहास

निर्माता : **लीना बोरा** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **डा. भवेन्द्र नाथ साइकिया** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार **इतिहास** को शहरीकरण से जीवन की जटिलताओं के कुशल चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ASSAMESE

ITIHAAS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **LEENA BORA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **DR. BHABENDRA NATH SAIKIA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Assamese of 1995 is given to **ITIHAAS** for its able depiction of complexity of life brought about by urbanisation.

लीना बोरा ने गुवाहाटी से स्नातक किया और नागाँव और गुवाहाटी में होटल मैनेजमेंट से जुड़ी हुई हैं। अपने जेठ रुपम बोरा की मृत्यु के बाद उन्होंने फिल्म निर्माण कार्य आरंभ किया। रुपम बोरा का ये सपना था कि वे एक अच्छी फिल्म का निर्माण करें परंतु वे पिछले 20 सालों से बीमार थे। उनके सपने ने **इतिहास** का रूप पाया लेकिन उनकी फिल्म के बनने के दौरान 46 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई। उस समय खासीर बाबुल, प्रदीप हाजारिका तथा बिक्रमजीत बोरा के सहयोग से लीना बोरा ने रूपम बोरा के सपने को पूरा करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

Leena Bora graduated from Guwahati University and is associated with hotel management at Nagaon and Guwahati. She took up the production of this film after the demise of her brother-in-law Rupam Bora. Production of a good film was a dream plan of Rupam Bora, who was ailing for the last twenty years. His earnest desire found shape in **Itihaas** but he expired in the middle of the shooting at the age of forty six. Hence Leena in association with Khasgir Babul, Pradip Hazarika and Bikramjit Bora took up the production of the film with a deep sense of love and respect to the departed soul.

डा. भवेन्द्र नाथ साइकिया आजादी के बाद कला, संस्कृति तथा शिक्षा शास्त्र के एक माने हुए व्यक्ति हैं। उन्होंने अपने आपको एक लघु कथाकार, नाट्यकार, उपन्यासकार, पत्रकार तथा फिल्म निर्माता के रूप में स्थापित किया है। उनकी सभी फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं - **संध्याराग** (1977), **अनिर्बान** (1981), **अग्निस्नान** (1985), **कोलाहल** (1988), **सारोथी** (1992) तथा **आबर्तन** (1993)।
इन दिनों वे असम की एक प्रसिद्ध पाक्षिक पत्रिका 'प्रांतिक' के प्रधान संपादक तथा बालकों की पत्रिका 'सोफूरा' के संपादक के रूप में कार्यरत हैं।

Dr. Bhabendra Nath Saikia is a distinctive man in the fields of art, culture and education in the post independence period. He is an established short story writer as well as play write, novelist, journalist & filmmaker.
All his films - **Sandhyarag** (1977), **Anirban** (1981), **Agnisnan** (1985), **Kolahal** (1988), **Sarothi** (1992) and **Abartan** (1993) received National Awards.
Presenthy, he is the Chief Editor of 'Prantik' a prestigious fortnightly magatize of Assam and the editor of 'Sofura', a children's magazine in Assamese.

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र पुरस्कार

युगान्त

निर्माता : **एन.एफ.डी.सी.लि.** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अपर्णा सेन** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार **युगान्त** को समकालीन विषय और फार्म और एक टूटी हुई शादी के जटिल विषय का दक्षतापूर्ण निर्वहन के लिए दिया गया है। यह फिल्म दुनिया भर के लिए आकर्षक है और आज के समाज के लिए अत्यन्त ही प्रासंगिक है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN BENGALI

YUGANT

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **N.F.D.C. LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **APARNA SEN**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Bengali of 1995 is given to **YUGANT** for its contemporary form and thematic content, and subtle handling of the complex subject of a broken marriage. The film has universal appeal which has great relevance in today's society.

अपर्णा सेन प्रसिद्ध फिल्म आलोचक तथा फिल्म निर्माता चिदानन्द दासगुप्ता की पुत्री हैं। बचपन से ही उन्हें अच्छी फिल्मों का संगत प्राप्त हुआ और उनके फिल्म जीवन का आरंभ 1961 में सत्यजीत रे की फिल्म **समाप्ति** से हुआ जो गुरूदेव रविन्द्रनाथ ठाकुर की तीन कहानियों पर आधारित रे की प्रसिद्ध ट्रीलजी **तीन कन्या** की एक कहानी है। अपर्णा सेन के तीन दशक के अभिनय के दौरान उन्होंने मृनाल सेन, तपन सिन्हा, ऋषिकेष मुखर्जी तथा जेम्स आइवरी के साथ काम किया है। उन्हें कारलोवी वैरी फाउंडेशन फिल्म समारोह में **महा पृथिबी** के अभिनय के लिए सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

1981 में उन्होंने **36 चौरंगी लेन** का निर्देशन किया जिसके लिए उन्हें सर्वोत्तम निर्देशक का पुरस्कार मिला। इस फिल्म को अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। इसे 1982 के अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह के भारतीय पैनोरमा में भी दर्शाया गया। अपर्णा सेन की फिल्म **परोमा** (1985) को सर्वोत्तम बंगला फिल्म का पुरस्कार मिला तथा **सती** (1990) को अंतरराष्ट्रीय समारोह के भारतीय पैनोरमा में प्रदर्शित किया गया। उनकी लघु टेलिफिल्म **पिकनिक** को दूरदर्शन पर कई बार दिखाया जा चुका है।

अपर्णा सेन 1976 के अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह के निर्णायक मण्डल की सदस्या रह चुकी हैं। उन्हें 1983 में हवाई से आमंत्रित किया गया तथा 1991 में वे हवाई फिल्म समारोह की अध्यक्षा थीं। मॉस्को फिल्म समारोह (1989) में भी वे निर्णायक मण्डल की सदस्या थीं।

Aparna Sen is the daughter of noted film critic and film maker Chidananda Dasgupta. She was exposed to good film since childhood and hence made her film debut in 1961 in Satyajit Ray's **Samapti**, one of the three film that formed his trilogy, **Teen Kanya** based on three short stories of Tagore. In her three decade long film career, she has worked with Mrinal Sen, Tapan Sinha, Hrishikesh Mukherjee and James Ivory. She won the Best Actress Award in Karlory Vary Foundation Film Festival for her performance in **Maha Prithibi**.

In 1981, she made her own film **36 Chowringhee Lane** for which she received the National Award for Direction. The film received other high accolades as well. It was also screened in Indian Panorama in International Film Festival of India in 1982. **Paroma** (1985) was adjudged the Best Bengali Film while **Sati** (1990) was screened in Indian Panorama at the International Film Festival of India. Aparna Sen also made a short telefilm **Picnic** for Doordarshan, which has been telecast several times.

She was the jury member at the IFFI in 1976. She was invited to Hawaii in 1983 and in 1991 she was the chairperson at the Hawaii Film Festival. She was the jury member at Moscow Film Festival in 1989.

सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र पुरस्कार

(संविधान की आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भाषाओं के अलावा प्रत्येक भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार)

द मेकिंग ऑफ द महात्मा

निर्माता : **एन.एफ.डी.सी.लि.** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **श्याम बेनेगल** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार **द मेकिंग ऑफ द महात्मा** को दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी के प्रारम्भिक वर्षों के संघर्ष और प्रयासों को वास्तविक और गीतिमय रुप से पुनर्रचना के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ENGLISH

(Best Feature Film in a language other than those specified in Schedule VIII of the consitution).

THE MAKING OF THE MAHATMA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **N.F.D.C. LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **SHYAM BENEGAL**

Citation

The Award for the Best Feature Film in English of 1995 is given to **THE MAKING OF THE MAHATMA** for tracing the significant early years of strife and struggle of Gandhi in South Africa in a realistic and lyrical form.

श्याम बेनेगल अपनी पहली फिल्म अंकुर (1973) के बाद से ही एक माने हुए फिल्म निर्माता माने जाते हैं। उनकी फिल्मों को भारत में ही नहीं विदेशों में भी सराहा गया। उनकी फिल्में विभिन्न पहलूओं को नज़र में रखकर बनाई गई हैं पर मूलत: वे भारतीय विषयों पर ही आधारित हैं। वे पुणे के फिल्म एवं टेलिविज़न इंस्टिट्यूट तथा राष्ट्रीय फिल्म स्कूल से संबंध रखते हैं। उन्होंने 1965-70 तक मास कम्यूनिकेशन के तकनीक के विषय का शिक्षण दिया। उनकी लगभग सभी फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। कई फिल्मों को अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले हैं। वे 1970-72 तक होमी बाबा फैलो रह चुके हैं जिस समय उन्होंने बाल टेलिविज़न में शिक्षा प्राप्त किया और कुछ महीने बॉसटन के डब्लू.जी.बी.एच. में सह-निर्माता के रूप में कार्य किया। उन्होंने न्यू यार्क के बाल टेलिविज़न वर्कशॉप में भी कुछ समय व्यतीत किया। श्याम बेनेगल को पद्मश्री (1976) तथा पद्मभूषण (1991) से भी सम्मानित किया गया है।

श्याम बेनेगल की कुछ प्रमुख फिल्में हैं **अंकुर** (1973), **निशांत** (1975), **मंथन** (1976), **भूमिका** (1977), **कोन्डुरा** (1977), **जुनून** (1978), **कल्युग** (1981), **आरोहन** (1982), **मण्डी** (1983), **त्रीकाल** (1986), **सूरज का सातवाँ छोड़ा** (1993), तथा मम्मो (1995) उन्होंने कई लोकप्रिय टेलिविज़न सीरियल भी बनाए हैं - भारत एक खोज (1988-89), अम्रावती की कहानियाँ (1994)। इसके अलावा उन्होंने कई ग़ैर कथाचित्र तथा विज्ञापन भी बनाए हैं।

Shyam Benegal has been considered one of the leading film-makers of the country since his first feature film **Ankur** (1973). His films have been seen and acclaimed widely not only in India but in International Film Festivals as well. The core subject of his films has been varied in nature but mainly centered around contempory Indian experience. He has been associated with FTII, Pune and National Film School. He has also taught mass communication techniques between 1965-70. Practically all his films have won National Awards and several of them have been awarded internationally. He was a Homi Baba fellow (1970-72) during which time, he studied Children's Television and worked for a few months as Associate Producer with WGBH, Boston and devoted some time with Children Televisions workshop in New York. Shyam Benegal was awarded Padma Shri (1976) and Padma Bhushan (1991).

Some of his films besides **Ankur** are **Nishant** (1975), **Manthan** (1976,) **Bhumika** (1977), **Kondura** (1977), **Junoon** (1978), **Kalyug** (1981), **Arohan** (1982), **Mandi** (1983), **Trikal** (1986), **Suraj Ka Satvan Ghoda** (1993) and **Mammo** (1995). He has also to his credit some very popular television serials - Bharat Ek Khoj (1988-89), Amravati Ki Kathayen (1994). Besides he has also directed many documentaries and advertising commercials.

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र पुरस्कार

बैंडिट क्वीन

निर्माता : **संदीप सिंह बेदी** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **शेखर कपूर** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार **बैंडिट क्वीन** को जाति-पाति के बंधनों से बंधे समाज में एक भारतीय नारी के नितांत, निस्संकोच चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN HINDI

BANDIT QUEEN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **SUNDEEP SINGH BEDI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **SHEKHAR KAPUR**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Hindi of 1995 is given to **BANDIT QUEEN** for its stark and frank portrayal of an Indian woman in a caste ridden society.

संदीप सिंह बेदी ने दिल्ली के सेन्ट स्टीफैन्स कॉलेज से अर्थशास्त्र में स्नातक की उपाधी प्राप्त की जिसके उपरांत उन्होंने बम्बई के जमनालाल बजाज इन्सटिट्यूट से एम.बी.ए. किया। उन्होंने एच.सी.एल. तथा फिलिप्स जैसी नामी कम्पनियों में कार्य भी किया। फिल्म जगत में सबसे पहले उन्होंने एक 13 भागों के बच्चों के धारावाहिक का निर्माण तथा निर्देशन किया। उसके बाद उन्होंने कई धारावाहिक तथा फिल्म बनाए। उनकी फिल्म **इन विच एनी गिवस इट दोज़ वन्ज** को अंग्रेजी में सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनकी निर्मित अन्य फिल्म तथा गैर कथचित्र हैं - **विल आफ स्टील, इलेक्ट्रिक मून, लड़कियाँ, पंजाब इलेक्शन 1993, अर्थक्वेक, फायर**, आदि।

Sundeep Singh Bedi is a graduate in Economics from St. Stephens College, Delhi and has a masters in Management Studies from Jamnalal Bajaj Institute of Management, Bombay. He has worked for companies like HCL and Philips India Ltd. He first produced and directed a 13 part TV serial Telefun for children. Since then he has produced and directed many serials and films. **In which Annie gives it those ones** won the National Award for the Best Film in English. Other films and documentaries produced by him include **Will of Steel, Electric Moon, Ladkiyan, Punjab Election** 1993, **Earthquake, Fire**, etc.

शेखर कपूर का जन्म लाहोर में हुआ पर भारत बटवारे के समय वे अपने परिवार के साथ दिल्ली आ गए थे। उन्होंने स्नातक सेन्ट स्टीफैन्स से अर्थशास्त्र में किया जिसके पश्चात् वे चार्टर्ड अकांउटेन्सी पढ़ने लंदन चले गए। वहाँ उन्होंने कई प्रसिद्ध कम्पनियों में काम किया जिसके बाद वे नाटक व फिल्मों में काम करने भारत वापस आए। उन्होंने **दृष्टि, नज़र, सारा आकाश, टूटे खिलौने, गवाही**, आदि में काम किया। टेलिविज़न में भी उन्होंने कई धारावाहिकों में काम किया - उड़ान, महानगर, उपन्यास, खानदान, आदि। निर्देशक के रूप में उनकी फिल्म **मासूम** और **मिस्टर इंडिया** बहुत ही लोकप्रिय हुई तथा उन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हुए। शेखर कपूर बाल फिल्म समारोह, 1993 के निर्णायक मण्डल के अध्यक्ष थे तथा मांट्रीयल फिल्म समारोह, 1994 के निर्णायक मण्डल के सदस्य थे।

Shekhar Kapur was born in Lahore and moved to Delhi during partition with his family. He graduated from St. Stephens with Honours in Economics and then left for London to study Chartered Accountancy. He worked for many reputed companies before he returned to India to work in theatre and films. He has acted in **Dristi, Nazar, Saara Aakash, Toote Khilone, Gawahi**, etc. He also worked in some important roles in many popular television serials - Udaan, Mahanagar, Upanyas, Khaandan, etc. As a director, his films **Masoom** and **Mr. India** were highly acclaimed and successful at the box office. His films have won many awards as well.

Shekhar Kapur was the Chairman of the Jury at the International Children's Film Festival, 1993 and Jury at the Montreal International Film Festival in 1994.

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र पुरस्कार

क्राउर्या

निर्माता : **निर्मला चित्गोपी** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **गिरीश कसारावल्ली** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार **क्राउर्या** को एक मध्यमवर्गीय परिवार में एक वृद्धा के मर्मस्पर्शी घोर परिश्रम और तीन पीढ़ियों के व्यक्तियों से जटिल संबंधों को दर्शाने के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN KANNADA

KRAURYA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **NIRMALA CHITGOPI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **GIRISH KASARAVALLI**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Kannada of 1995 is given to **KRAURYA** for its poignant travail of an old woman's agony in a middle class family and her complex relationship with the individuals of three generation.

निर्मला चित्गोपी कन्नड़ फिल्मों के प्रसिद्ध निर्माता-निर्देशक (स्व.) डा. वी.एम. चितगोपी की पत्नी है।
ये फिल्म **क्राउर्या** उनकी अपनी प्रथम फिल्म है।

Nirmala Chitgopi is the wife of late Dr. V.M. Chitgopi a reputed film director and producer of Kannada screen. This film **Kraurya** is her first venture.

गिरीश कसारावल्ली ने भारतीय फिल्म एवं टेलिविजन इन्सटिट्यूट, पूणे से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने अपने 20 वर्ष के कार्यकाल में 6 फिल्मों का निर्देशन किया। **घाट श्रद्धा** तथा **ताबारना कथा** को स्वर्ण कमल तथा **माने** और **बन्नाड़ वेश** को रजत कमल पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उनके चित्रों को अंतरराष्ट्रीय समारोहों में दर्शाया गया है। उन्हें कर्नाटक राज्य फिल्म संस्था के कई पुरस्कार प्राप्त हैं।

Girish Kasaravalli is a graduate from Film and Television Institute of India, Pune and has made 6 films in 20 years. **Ghata Shraddha** and **Tabarana Kathe** have won the President's Swarna Kamal while **Mane** and **Bannada Vesha** have won Rajat Kamal awards. His films have been screened at International Festivals and have been awarded. All his films have been awarded by the Karnataka State Film Society.

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र पुरस्कार

ओरमाकलुन्डइरिक्कानम

निर्माता : **सालम क्रासेरी** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **टी.वी. चन्द्रन** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार **ओरमाकलुन्डइरिक्कानम** को एक बालक के नज़रिये से केरल के राजनीतिक परिवर्तन को दर्शाने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

ORMAKALUNDAYIRIKKANAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **SALAM KARASSERY**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **T.V. CHANDRAN**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Malayalam of 1995 is given to **ORMAKALUNDAYIRIKKANAM,** which through the eyes of a young boy traces the graph of a political transformation in Kerala.

सलाम क्रासेरी ने अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर किया है। उन्होंने अपने नवोदय मूवी मेकर्स के सौजन्य से कई फिल्मों का निर्माण किया है - **चुवन्ना विथूकल, संगा गानम, पथिनालम रावे** आदि। उनकी लगभग सभी फिल्मों को पुरस्कार प्राप्त हुए हैं तथा उन्हें अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह के भारतीय पैनोरमा में दिखाया जा चुका है। उनकी फिल्में दूरदर्शन पर भी दिखाई गई हैं। **नुट्टनटिन्टे साक्षी**, उनकी प्रथम गैर कथाचित्र को राज्य स्तर तथा राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हैं। उन्होंने सिनेमा पर कई पुस्तक भी लिखी हैं - सिनेमा-सिनेमा, इन्डियन सिनेमा, सिनेमालोचना। सिनेमालोचना को राज्य स्तर पर सर्वोत्तम पुस्तक पुरस्कार (1995) प्राप्त हुआ था।
इन दिनों वे केरला स्टेट फिल्म डेवेलपमेंट कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष हैं।

Salam Karassery is a master degree holder in commerce. He has produced notable films like **Chuvanna Vithukal, Sanga Ganam, Pathinalam Rave**, etc. Almost all his film were awarded with several awards and were screened in the Indian Panoramas and on National network of Doordarshan. **Noottantinte Sakshi** his first documentary received both National and state awards. He has also written several books in cinema - Cinema-cinema, Indian Cinema and Cinemalochana. Cinemalochana won the Best Book Award by the state in 1995.
He is presently one of the directors of Kerala State Film Development Corporation.

टी.वी. चन्द्रन ने कई फिल्मों का निर्देशन किया है - **कृष्णनकुट्टी** (1981), **हेमाविन कथालार्गल** (1984), **अलिसिंते अन्वेशन** (1989), **पंथन माडा** (1993)। **अलिसिंते अन्वेशन** को 3 राज्य पुरस्कार मिले तथा इसे कलकत्ता के 1990 के अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में प्रदर्शन किया गया। ये फिल्म अकेली भारतीय फिल्म थी जिसे लोकार्नो समारोह (1990) में दर्शाया गया था। **पंथन माडा** को 3 राज्य तथा 4 राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए जिनमें सर्वोत्तम निर्देशक का पुरस्कार भी था। इसे बम्बई के अंतरराष्ट्रीय समारोह (1995) में भी प्रदर्शित किया गया था।

T.V. Chandran has directed many films **Krishnankutty** (1981), **Hemavin Kathalargal** (1984), **Alicinte Anweshana** (1989), **Ponthan Made** (1993). His **Alicinte Anweshanam** won 3 state awards and was screened at the International Film Festival in Calcutta in 1990 and was the sole Indian entry at Locarno Festival in 1990. **Ponthan Mada** was awarded 3 state and 4 National awards including that of Best Director. It was also screened at International Festival in Bombay in 1995.

सर्वोत्तम मणिपुरी कथाचित्र पुरस्कार

सनबी

निर्माता : **एन.एफ.डी.सी.लि.** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अरिबम स्याम शर्मा** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मणिपुरी कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार **सनबी** को प्रतीकात्मक रूप से एक खच्चर को लेकर आधुनिक और परंपरागत मूल्यों के संघर्ष की उपयुक्त और कवित्व के चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MANIPURI

SANABI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **N.F.D.C. LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **ARIBAM SYAM SHARMA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Manipuri of 1995 is given to **SANABI** for its apt and poetic handling of the conflict between the traditional and modern values, knitted around a pony symbolically.

अरिबम स्याम शर्मा मणिपुरी थियेटर एवं फिल्मों के प्रसिद्ध अभिनेता तथा निर्देशक होने के साथ ही वे गायक व संगीतकार भी हैं। उन्होंने अपनी प्रथम फिल्म **लम्जा परसुराम** 1974 में बनाई। उसके पश्चात् उनकी तीनों फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए। **इमाजी निंगथेम** (1981) को तीन महादेशों के समारोह नैनटेस में 1982 में ग्रौड प्रिक्स से सम्मानित किया गया था तथा कई अंतरराष्ट्रीय समारोहों में दर्शाया गया। **इशानऊ** (1990) को कान्स समारोह में 1991 में चुना गया।

उनकी गैर कथाचित्र में प्रसिद्ध हैं - **संगाई** (द डांसिंग डियर आफ मणिपुर, 1988), एक बैले फिल्म, **द डियर औन द लेक** (1989) एक पर्यावरण फिल्म, **कोरो कोसी** (1988), **इन्डिजिनस गेम्स आफ मणिपुर** (1990), **मेइतेई पुंग** (1991), **लाई हाराओबा** (1993) तथा **आरकिड्स आफ मणिपुर** (1994)। इन फिल्मों को भारत तथा विदेशों में सराहा गया।

Aribam Syam Sharma has been a reputable actor and director of Manipur theatre and films, as well as a vocalist and composer. He made his first film, **Lamja Parsuram**, in 1974. His next three films were all awarded National Awards for the Best Film in Manipuri. **Imagi Ningthem** (My son, My previous) 1981, was awarded The Grand Prix at the Festival of three continents at Nantes 1982, and featured at several International festivals. His film **Ishanou** (The chosen one), 1990 has been a Selection Officialle, Cannes 1991.

His documentaries like **Sangai** (The Dancing Dear of Manipur) (1988), a ballet film, **The dear on the Lake** 1989, an environment-film, **Koro Kosii** (1988), **Indigenous Games of Manipur** (1990), **Meitei Pung** (1991), **Lai Haraoba** (1993) and **Orchids of Manipur**, (1994), were well-received in India and abroad.

सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र पुरस्कार

बंगारवाड़ी

निर्माता : **एन.एफ.डी.सी.लि.** एवं दूरदर्शन इंडिया को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अमोल पालेकर** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार **बंगारवाड़ी** को इस सदी के तीसरे दशक में एक युवक अध्यापक के अनुभव के माध्यम से जो सभी मुश्किलों और अंध विश्वासों से मुकाबला करने के प्रयास करता है, महाराष्ट्र के एक गांव के वास्तविक चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MARATHI

BANAGARWADI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **N.F.D.C. LTD. & DOORDASHAN, INDIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **AMOL PALEKAR**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Marathi of 1995 is given to **BANAGARWADI** for its realistic portrayal of a Maharashtrian village in the thirties through the experience of a young school teacher who tries to fight against all odds and superstition.

अमोल पालेकर ने सर जे.जे. स्कूल आफ आर्ट से कला में स्नातकोत्तर की उपाधी प्राप्त कर, अपना कार्य काल चित्रकलाकारीता से शुरू किया। उन्होंने अपनी कला की 7 प्रदर्शनियाँ दी और कई प्रदर्शनियों में अन्य कलाकारों के साथ भाग लिया। उन्हें नाटक के क्षेत्र में एक जाने माने व्यक्तित्व के रूप में जाना जाता है। वे 1967 से मराठी तथा हिन्दी नाटकों में अभिनेता, निर्देशक तथा निर्माता भी रहे हैं। 1974 से वे एक प्रसिद्ध एवं बहु चर्चित फिल्म अभिनेता भी रहे हैं जिन्होंने देश के लगभग सभी प्रमुख फिल्म निर्माता-निर्देशकों के साथ कार्य किया है। उन्हें कई पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

उनकी निर्देशन द्वारा बनी फिल्म अक्रियत (1981) को ३ी महादेशों के समारोह, नैनटेस, फ्रंस में निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार मिला था। इस फिल्म को 4 राज्य पुरस्कार मिले तथा इसे भारतीय पैनोरामा में प्रदर्शित भी किया गया। **अनकही** (1984) को 4 राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए तथा ये भी भारतीय पैनोरामा से प्रदर्शित हुई। **थोड़ा सा रूमानी हो जाए** (1990) को भी पैनोरमा में दर्शाया गया। अमोल पालेकर ने कई अत्यन्त परिचित टी.वी. सीरियल भी प्रस्तुत किए हैं – कच्ची धूप, नकाब, मृगनयनी, आदि। वे चिल्ड्रन फिल्म सोसाइटी के अध्यक्ष हैं और उन्होंने दो अत्यंत पसंदीदा बाल फिल्म समारोह का अयोजन किया था।

Amol Palekar with post graduation in Fine Arts from the Sir. J.J. School of Art, began his artistic career as a painter. He has held 7 one-man shows of paintings and participated in many group shows. He has been acknowledged as one of the leading theatre personalities of India, and has been active in Marathi and Hindi theatre as an actor, director and producer since 1967. He has been very successful and highly acclaimed actor in the world of cinema since 1974, having acted with almost every noteworthy filmmaker of the country. He has received several awards.

His film **Akriet** (1981) won the Special Jury Award at the Three Continent's Festival, Nantes, Trance, received 4 state awards and was selected for the Indian Panorama. **Ankahee** (1984) was awarded 4 National Awards and was selected for Indian Panorama. **Thodasa Roomani Ho Jayen** (1990) was also selected for Indian Panorama. He has made some very successful TV serials - Kachchi Dhoop, Naquab, Mrignayani, etc. He is the Chariman of Children's Film Society of India and has organised two highly acclaimed children's film festivals.

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र पुरस्कार

मोक्ष

निर्माता : **जयदेव मल्लिक** एवं **प्रमोद कुमार नायक** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **गौरी शंकर दास** एवं **मलय कुमार राय** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार **मोक्ष** को समाज की सख्त परंपराओं के कारण जीवन भर एकाकीपन और अपूर्णता भुगतते दो ग्रामीणों के जीवन के चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ORIYA

MOKSHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **JAYADEV MALLICK AND PRAMODA KUMAR NAYAK**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **GOURI SHANKAR DAS AND MALAYA KUMAR ROY**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Oriya of 1995 is given to **MOKSHA** for depicting the life of two people in a rural set up who suffer an entire life of loneliness and unfulfilment, because of the rigid traditional values of society.

जयदेव मल्लिक ने निर्माण प्रबंधक के रूप में कई यूनिटों में काम किया है।
ये उनके निर्माता के रूप में पहली फिल्म तथा पहला राष्ट्रीय पुरस्कार है।

Jayadeva Mallick has worked as Production controllor earlier in many units. This is his first film.

प्रमोद कुमार नायक इस कार्य में बिल्कुल नए हैं। ये उनका पहला पुरस्कार है।

Pramoda Kumar Nayak is new in the production line. This is his first film as well.

गौरी शंकर दास ने उत्कल विश्वविद्यालय के संगीत महाविद्यालय से ड्रामा निर्देशन की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने थियेटर के कई वर्कशॉप में भाग लिया है तथा भुवनेश्वर के नाटक दलों से भी जुड़े हुए हैं। उन्होंने एक सह-निर्देशक के रूप में पिछले दस सालों तक फिल्म एवं टेलिविज़न में काम किया है। इस फिल्म का पटकथा एवं संवाद लेखन भी उन्होंने ही किया है।
ये उनकी पहली फिल्म तथा पहला राष्ट्रीय पुरस्कार है।

Gouri Shankar Das is a graduate in drama direction from Utkal Sangeet Mahabidyalaya under Utkal University. He has worked in many theatre workshops and is attached to some theatre troops in Bhubaneswar. He has worked as an Asstt. Director in film and television for the last ten years. He has written the screenplay and dialogues of the film. This is his first film as a Director.

मलय कुमार राय ने उत्कल विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान में डिग्री प्राप्त की। उसके बाद उन्होंने सिनेमाटोग्राफी का डिप्लोमा पुणे के फिल्म एवं टेलिविज़न इन्सटिट्यूट से प्राप्त किया। उन्हें कैमरामैन के रूप में बहुत अभिज्ञता है। पर सह निर्देशक के रूप में ये इनकी प्रथम फिल्म है।
ये उनका प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार भी है।

Malaya Kumar Ray is a graduate in Physics from Utkal University and has a diploma in Cinematography from Film and Television Institute of India, Pune. He has a wide experience as a cameraman. This is his first film as a co-director and cinematographer.

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र पुरस्कार

अंति मंतराई

निर्माता : **मेगा मूवीज़** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **भारतीराजा** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार **अंति मंतराई** को इस देश की आजादी के लिए संघर्ष करने वालों के एकाकी और अनजाने जीवन का अत्यन्त ही दुखद चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TAMIL

ANTHI MANTHARAI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **MEGAA MOVIES**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **BHARATHIRAJAA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Tamil of 1995 is given to **ANTHI MANTHARAI** for a most heart breaking portrayal of the unrecognised and lonely life of people who fought for the freedom of this country.

तिलक गणेष का जन्म सिंगापोर में हुआ और उनकी पढ़ाई इंग्लैंड में हुई। उन्होंने 8 वर्ष तक यूनाइटेड अरब अमिरात के लंदन दूतावास में शिक्षण विभाग में अध्यक्ष के रूप में काम किया। आजकल वे मेगा मूवीज़ में भागीदार हैं।

भारती राजा एक नामी फिल्म निर्माता हैं तथा तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश में बहुत ही लोकप्रिय हैं। वे सीमाहीन अर्थपूर्ण भाव से सोचते हैं और उन्होंने चित्र के माध्यम को दूर दराज़ के गांवों तक पहुंचा दिया। उन्होंने फिल्मों को स्टूडियों के बंद कमरों से निकालकर बाहर के खुले वातावरण में ला दिया जिससे तमिल की फिल्में खुले स्वच्छ वायु में बनने लगीं। उनकी कुछ प्रमुख फिल्में हैं - **16 वयाथिनिले** (1977), **किज़ाक्के पोगुन रायिल** (1978), **निज़ालगल** (1980), **सीता कोका चिलका** (1981), **मुथल मरियाथाई** (1985), **कादालोरा कविथाईगल** (1986), **वेदम पुडिथु** (1986), **कारूथम्मा** (1995)। **16 वयाथिनिले** को सर्वोत्तम गीत का राष्ट्रीय पुरसकार प्राप्त हुआ था तथा **निज़ालगल** को भारतीय पैनोरमा में दर्शाया गया। **मुथल मरियाथाई** को सर्वोत्तम निर्देशक, सर्वोत्तम गीतकार तथा सर्वोत्तम तमिल फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। **कादालोरा कविथाईगल** को भी भारतीय पैनोरमा में दिखाया गया। **वेदम पुडिथु** को सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम पुरस्कार मिला। **कारूथम्मा** को परिवार एवं समाज कल्याण का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

Tilaka Ganesh was born in Singapore and was educated in England. She worked for 8 years in United Arab Emirate's Embassy in London as the Head of the Education Department. Presently she is the partner in the Megaa Movies.

Bharati Rajaa is a renowned film maker and is very popular in Tamil Nadu and Andhra Pradesh. He is a man with unlimited meaningful imagination with zest and zeal. He brought the visual media to villages and made everyone move out of the artificial suffocating studio atmosphere and reach the nature with its full form. Under him Tamil film breathed the unpolluted air of the villages. Some of his popular films include - **16 Vayathinile** (1977), **Kizhakke Pogum Rayil** (1978), **Nizhalgal** (1980), **Seetha Koka Chilaka**(1981), **Muthal Mariyathai** (1985), **Kadalora Kavithaigal** (1986), **Vedam Pudhithu** (1986), **Karuthamma** (1995). **16 Vayathinile** received the National Award for Best Song and **Nizhalgal** was screened in the Indian Panorama. **Muthal Mariyathai** was awarded National Awards for Best Director, Best Lyrics and Best Tamil Film. **Kadalora Kavithaigal** was screened in the Indian Panorama while **Vedam Puddhithu** received the National Award for Best Film on social issues. **Karuthamma** received the National Award for Best Film on family and social welfare in 1995.

सर्वोत्तम तेलगु कथाचित्र पुरस्कार

स्त्री

निर्माता : **एन.एफ.डी.सी.लि.** एवं **दूरदर्शन** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **के.एस. सेथुमाधवन** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तेलगु कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार **स्त्री** को प्रदान किया गया है। यह फिल्म एक सीधी ग्रामीण महिला के चौकाने वाले विचारों को प्रकट करती है जो अपने पति के साथ हर स्थिति में खड़ी होती है, उस पर अपने अधिकार का दावा करती है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TELUGU

STRI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **N.F.D.C. LTD. & DOORDASHAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **K.S. SETHUMADHAVAN**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Telugu of 1995 is given to **STRI.** The film is a startling revelation of the mind of a simple village woman, who asserts her right over her man and stands by him under all circumstances.

के.एस. सेथुमाधवन मद्रास विश्वविद्यालय के स्नातक हैं तथा मलयालम सिनेमा के एक विख्यात व्यक्तित्व हैं। उन्होंने सिन्हाली, मलयालम, कन्नड़, तमिल तथा हिन्दी भाषाओं में फिल्में बनाई हैं। उनकी फिल्मों में मानवीय मूल्यों को खोजने की कोशिश की जाती है। वे एक बहु सर्जक फिल्म निर्माता हैं और नई धारणा के मनुष्य हैं। उनकी फिल्में साहित्यिक अंग के लिए प्रचलित हैं। उनकी तमिल फिल्म **मारूपक्कम** प्रा. इंदिरा पार्थसारथी की उपन्यास उस्सी वेयिल पर आधारित है। इस फिल्म को 1991 में सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इस पुरस्कार को पाने वाली यह प्रथम तमिल फिल्म थी। उन्होंने कई राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाली फिल्में बनाई - **ऊदायिल निन्नु, आदिमाकल, कारा काना कादल, पनीतीर्थ वीडु, अचानुम्बाप्पायुम, ओल्लाथुमुथाई, ओप्पोल** (सभी मलयालम में) तथा **मारूपक्कम** और **नाम्मावर** (तमिल)। के.एस. सेथुमाधवन के सभी फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। वे 1975 तथा 1980 के राष्ट्रीय पुरस्कार निर्णायक मण्डल के सदस्य थे तथा केरला राज्य पुरस्कार समीति (1982) के निर्णायक मण्डल के अध्यक्ष थे।

K.S. Sethumadhavan is a graduate from the Madras University and is a stalwart in Malayalam Cinema. He has directed pictures Sinhalese, Malayalam, Kannada, Tamil and Hindi languages also. He consistently explores human values in his films. He is a prolific film maker and a man of progressive ideas. He is known to use literary works for almost all his films. His Tamil film, **Marupakkam** based on Prof. Indira Parthasarthis novel "Ucci Veyil' bagged the National Award for Best Feature Film in 1991. It was the first Tamil film to get this award. He has many National Award winning films to his credit - **Oadayil Ninnu, Adimakal, Kara Kana Kadal, Panitheeratha Veedu, Achanumbappayum, Ollathumathi, Oppol** (all in Malayam) and **Marupakkam** and **Nammavar** (in Tamil).

K.S. Sethumadhavan has been receiving National Awards for most of his films. He has been member for the Jury for National Awards in 1975 & 1980 and Chairman of the Jury for Kerala State Film Award Committee in 1982.

This is his first National Award for a telugu film.

विशेष उल्लेख

उत्तरा बावकर (दोघी), रोहिणी (स्त्री) एवं बेनाफ दादाचांजी (हैलो)

प्रशस्ति

कथाचित्र निर्णायक मंडल ने 1995 के लिए विशेष उल्लेख किया है :-

1. **उत्तराबावकर** (अभिनेत्री), जिसने मराठी फिल्म **डोघी** में सम्मान और गरीबी से जुझती एक मां के दुखों की संवेदनशील भूमिका निभाई है।
2. तेलुगु फिल्म **स्त्री** में **रोहिणी** (अभिनेत्री), जिसने अपने तरंगी पति का प्रेम मांगने वाली एक ग्रामीण स्त्री की सजीव और मर्मस्पर्शी भूमिका निभाई है।
3. **बेनाफ दादाचांजी** (बाल कलाकार) को, जिसने हिन्दी फिल्म **हैलो** में अत्यन्त ही वास्तविक और बालकमय भूमिका निभाई है।

SPECIAL MENTION

ROHINI (for STRI), UTTRA BAOKAR (for DOGHI) and BENAF DADACHANJI (for HALO)

Citation

The Feature Film Jury makes Special Mention for 1995 of (1) **Uttra Baokar** (Actress) for her sensitive portrayal of the agony of a mother in the midst of poverty and honour in the Marathi Film **Doghi** (2) **Rohini** (Actress) for the Telugu Film **Stri** for her lively and poignant performance in the role of a village woman longing for love from her unpredictable paramour, and (3) **Benaf Dadachanji** (Child Artiste) in the Hindi Film **Halo** for her charming and natural performance.

रोहिनी ने 5 वर्ष की आयु से ही फिल्मों में अभिनय प्रारंभ किया था। उन्होंने तेलगु, तमिल तथा मलयालम फिल्मों में प्रसिद्ध निर्देशकों के साथ काम किया। मुख्य अभिनेत्री के रूप में उन्होंने भारतन, सेथुमाधवन आदि के साथ काम किया। उनकी कुछ प्रमुख फिल्में है **कक्का, मारूपादियुम, मागलिर माट्टुम।** रोहिनी ने **जवानी जिंदाबाद** और **मेरी लल्कार** नामक हिन्दी फिल्मों में काम भी किया है। उन्होंने अब तक 145 फिल्मों में काम किया है। रोहिनी एक शास्त्रिय नृत्यांगना तथा सिनेमा की छात्रा भी हैं।

Rohini started her career at a very young age of five in Telgu, Tamil and Malayalam films. She has worked as heroine with film makers like Bharathan, Sethumadhavan, Balachandra Menon, and Bhagyarij. Her major films as a heroine include **Kakka, Marupadiyum, Magalir Mattum**. Rohini acted in two Hindi films also - **Javani Zindabad** and **Meri Lalkar**. She has acted in 145 films in total. She is also a classical dancer and a serious student of cinema.

उत्तरा बाओकर दिल्ली विश्वविद्यालय की स्नातक है और गंधर्व महाविद्यालय से संगीत विशारद हैं। उन्होंने एन.एस.डी. से डिग्री प्राप्त कर 1968-87 तक रेपर्टरी कम्पनी में काम किया है। उन्होंने 50 से अधिक नाटकों में अभिनय किया तथा एक नाटक का निर्देशन भी किया। उन्होंने कुछ समय एन.एस.डी. में सहयोगी प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। उन्होंने अनेक फिल्म, टेलिफिल्म तथा टीवी सीरियल में काम किया है - **एक दिन अचानक, दोघी, तमस, उड़ान,** आदि। उन्हें **एक दिन अचानक** (1989) के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

Uttra Baokar is a graduate from Delhi University and a Sangeet Visharad from Gandharva Mahavidyalaya. She is a diploma holder from NSD and was associated with its Repertory Company from 1968-87. She has participated in more than 50 plays. She has directed a play as well and worked as an Associate Professor with the NSD. She has worked in numerous films, tele-films and TV sevials - **Ek Din Achanak, Doghi, Tamas, Udaan**, etc. She has won the National Award for Best Suporting actress role in **Ek Din Achanak** (1989).

बेनाफ दादाचानजी सेन्ट एनीस हाई स्कूल बम्बई की छठी कक्षा की छात्रा हैं। उन्होंने विज्ञापनों में कई चरित्रों में अभिनय किया है। बेनाफ को हैदराबाद के अंतरराष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह (1995) में सर्वोत्तम बाल कलाकार का पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

Benaf Dadachanji is a IVth Standard student in St. Anne's High School in Bombay. She has modelled in many adverisements. Benaf had won the Award for Best Child Artist in the International Children Film Festival in Hyderabad in 1995.

गैर–कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Non-Feature Film

सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र पुरस्कार

तराना (अंग्रेज़ी)

निर्माता : **वाई.एन. इंजीनियर** को स्वर्ण कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **रजत कपूर** को स्वर्ण कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार **तराना** को, परम्परागत और रहस्यमय संगीत की अनोखी सिनेमेटिक व्याख्या के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

TARANA (ENGLISH)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **Y.N. ENGINEER, FILMS DIVISION**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **RAJAT KAPOOR**

Citation

The Award for the Best Non-Feature Film of 1995 is given to **TARANA,** for its excellent cinematic interpretation of a traditional, mystic music form.

वाई.एन. इंजीनियर ने 1968 में पुणे के फिल्म संस्था में सिनेमा पर डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने प्रसिद्ध सिनेमाटोग्राफर जाल मिस्त्री के सहायक के रूप में हिन्दी फिल्मों में काम किया। उसके पश्चात् वे दूरदर्शन में कैमरामैन और फिल्म एवं टेलिविज़न संस्था पुणे के अध्यापक भी रहे। फिल्म डिविज़न के निर्देशक के रूप में उन्होंने 40 गैर-कथाचित्रों का निर्माण किया। इन दिनों वे फिल्म डिविज़न में ही निर्माता के रूप में कार्यरत हैं।

Y.N. Engineer did his Diploma in Cinema (Motion Picture Photography) in 1968 from the Film Institute of India, Pune. He has worked in the Hindi Film Industry as an assistant to Cinematographer Jal Mistry, as a Cameraman in Doordarshan and as a Lecturer in the Film and Television Institute of India.
A Director in Films Division, he has 40 documentaries to his crdit. He is at present working as a Producer in Films Division.

रजत कपूर ने भारतीय फिल्म एवं टेलिविज़न संस्था, पुणे से 1988 में फिल्म निर्देशन का शिक्षण पूर्ण किया। उन्होंने **तराना** की कहानी लिखी तथा निर्देशित की। ये फिल्म शास्त्रीय संगीत पर आधारित है। रजत ने 1995 में **प्राइवेट डिटेक्टिव** एक रोमांचक कथाचित्र का निर्देशन किया है। रजत ने कई नाटकों का निर्देशन तथा रूपांतर भी किया है।

Rajat Kapoor has studied Film Direction at Film and Television Institute of India, Pune in 1988. He has written and directed **Tarana,** a film inspired by classical music. Rajat has written and directed a fiction-feature film in 1995 which is now nearing completion. The film, a Killer, is tentatively titled **Private Detective.** Besides being active in theatre, Rajat has been directing and translating many plays.

निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार

औल अलोन इफ नीड बी (अंग्रेज़ी)

निर्माता : **अमूल्य ककाती** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **रंजीत दास** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्देशक के प्रथम सर्वोत्तम ग़ैर कथाचित्र का 1995 का पुरस्कार **औल अलोन इफ नीड बी** को, एक सत्यनिष्ठ, उच्च और मानवीय गुणों वाले सिद्धान्तवादी, साधारण एवं ईमानदार श्री शरतचंद्र सिन्हा के निजी और आम जीवन के संवेदनशील चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FIRST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

ALL ALONE IF NEED BE (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **AMULYA KAKATI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **RANJIT DAS**

Citation

The Award for the Best First Non-Feature Film of a Director of 1995 is given to **ALL ALONE IF NEED BE** for a sensitive portrayal of Shri Sarat Chandra Sinha simple upright man of principles with uncompromising integrity and human qualities both in his personal and public life.

अमूल्य ककाती गुवाहाटी विश्वविद्यालय के कला स्नातक हैं। वे बचपन से ही मंच पर नाटक के क्षेत्र से जुड़े हैं। उन्होंनी कई अत्यन्त सराहनीय नाटक लिखे हैं। वे एक लोकप्रिय अभिनेता, नाट्यकार तथा निर्देशक हैं। उन्होंने **मेघमुक्ती** फिल्म से अपना अभिनय जीवन आरंभ किया। उनकी अभिनित कुछ अन्य फिल्में हैं - **रजनी गंधा, देवी, जीवन सुरभी, बोहागार दुपारिया, पूजा, पापोरी, एई देश मोर देश, हालोदिया चोराए बावोधन खाई, रोंगा नदी**, आदि। **पिता पुत्र, प्रभाती पाखीर गान** दो अत्यंत लोकप्रिय असमिया फिल्म ककाती की लघु कथाओं पर आधारित हैं। फिल्म तथा टीवी के स्क्रीप्ट लेखन में ककाती की एक अलग पहचान है। उनकी रचनात्मक कहनियाँ और प्रबंध असम के प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित की गई हैं।
औल अलोन इफ नीड बी ककाती की निर्मित प्रथम फिल्म है।

Amulya Kakati is an Arts graduate from Guwahati University. He has been involved in the field of stage play since childhood. He has written a number of plays which have been critically acclaimed. He is a distinguished actor, playwright and director and entered films as an actor in **Meghamukti.** He has acted in other films like **Rajani Gandha, Devi, Jeevan Surabhi, Bohagar Dupariya, Puja, Papori, Ei Desh Mor Desh, Halodia Choraye Baodhan Khai, Ronga Nadi** etc. **Pita Putra** and **Prabhati Pakhir Gaan,** two very popular Assamese films are based on Kakati's short stories. He has a distinct identity as a film and the script writer. In creative literature he has published stories and essays in almost all leading newspapers and periodicals in Assam.
All Alone if need be is his first venture as a producer.

रंजीत दास ने अपना कार्यकाल (स्व) देबोन बरूआ के असमिया कथाचित्र **मोन ओरू मोराम** के सहयोगी निर्देशक से आरंभ किया। उसके बाद वे मुख्य सहयोगी निर्देशक के रूप में जाहनु बरूआ के यूनिट में युक्त हो गए। उनके साथ उस समय की फिल्में हैं **पपोरी, हालोदिया चोराए बाओधन खाई, बनानी, फिरिंगोती, तिंगखांग** (हिन्दी टीवी फिल्म) आदि। वे **फिरिंगोती** तथा **तिंगखांग** के सह-संपादक भी थे। रंजीत ने अपनी पहली असमिया कथाचित्र **प्रत्यावर्तन** 1993 में बनाई। **औल अलोन इफ नीड बी** उनकी प्रथम लघु चित्र है।

Ranjit Das started as an Assistant Director in the late D'bon Barua's Assamese feature film, **Mon Aru Moram.** He later joined Jahnu Barua's unit and was Chief Assistant Director for his films **Papori, Halodhia Choraye Baodhan Khai, Banani, Firingoti, Tingkhang** (Hindi tele film) etc. He has also worked as co-editor for **Firingoti** and **Tingkhang.** Ranjit made his debut feature film in Assamese - **Pratyavartan** (The Return) in 1993. **All Alone if need be** is his first short film.

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म पुरस्कार

येल्हऊ जागोई (मणिपुरी)

निर्माता : **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला संस्था** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अरिबाम स्याम शर्मा** को स्वर्ण कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मानव-शास्त्रीय/मानव जातीय फिल्म का 1995 का पुरस्कार **येल्हऊ जागोई** को मणिपुर के परम्परागत नृत्य के प्रामाणिक एवं कलामय प्रलेखन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ANTHROPOLOGICAL ETHNOGRAPHIC FILM

YELHOU JAGOI (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **ARIBAM SYAM SHARMA**

Citation

The Award for the Best Anthropological/Ethnographic Film of 1995 is given to **YELHOU JAGOI** for documenting authentically and artistically a traditional dance form of Manipur.

कपिला वात्सायन ने **येल्हऊ जागोई : डान्सेज आफ लाई हाराओबा** की संकल्पना की। वे स्वयं एक प्रदर्शिका, शिक्षिका तथा शास्त्रीय नृत्य की व्याख्याकार हैं। उन्होंने भारतीय शास्त्रीय नृत्य तथा आधुनिक नृत्य भी सीखा है। उन्होंने कई नृत्य नाटिकाओं का नृत्य संयोजन किया तथा वे नाटकों में भी सक्रीय हैं। उन्होंने नाट्यशास्त्र का अध्ययन किया तथा उस पर किताबें और लेख लिखे हैं। वे संगीत नाटक अकादमी, ललित कला अकादमी की फैलो रही हैं। उन्हें ज्वाहरलाल नेहरू मेमोरियल फैलोशिप तथा शंकरादेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वे इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्टस् की संस्थापिका हैं।

अरिबाम स्याम शर्मा मणिपुरी थियेटर एवं फिल्मों के प्रसिद्ध अभिनेता तथा निर्देशक होने के साथ ही वे गायक व संगीतकार भी हैं। उन्होंने अपनी प्रथम फिल्म **लम्जा परसुराम** 1974 में बनाई। उसके पश्चात् उनकी तीनों फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए। **इमाजी निंगथेम** (1981) को तीन महादेशों के समारोह नैनटेस में 1982 में ग्रैंड प्रिक्स से सम्मानित किया गया था तथा कई अंतरराष्ट्रीय समारोहों में दर्शाया गया। **इशानऊ** (1990) को कान्स समारोह में 1991 में चुना गया। उनकी गैर कथाचित्र में प्रसिद्ध हैं - **संगाई** (1988), **द डियर औन द लेक** (1989), **कोरो कोसी** (1988), **इन्डिजिनस गेम्स आफ मणिपुर** (1990), **मेइतेई पुंग** (1991), **लाई हाराओबा** (1993) तथा **आरकिड्स आफ मणिपुर** (1994)। इन फिल्मों को भारत तथा विदेशों में सराहा गया।

Kapila Vatsayan is the conceptualizer of the film **Yelhou Jagoi : Dances of the Lai Haraoba** and is herself trained as a performer, teacher, notator in classical dances of India under India's foremost gurus. She has received training in modern dance as well. She has choreographed ballets and has been active in the field of theatre for many years. She has explored the aesthetics of the Natyasastra through her books and articles. She has been fellow of Sangeet Natak Akademi, Lalit Kala Akademi, a recipient of the Jawaharlal Nehru Memorial Fellowship and Shankaradeva Award. She is the founder of the Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA)

Aribam Syam Sharma has been a reputable actor and director of Manipur theatre and films, as well as a vocalist and composer. He made his first film, **Lamja Parsuram**, in 1974. His next three films were all awarded National Awards for the Best Film in Manipuri. **Imagi Ningthem** (My son, My previous) 1981, was awarded The Grand Prix at the Festival of three continents at Nantes 1982, and featured at several International festivals. His film **Ishanou** (The chosen one), 1990 has been a Selection Officialle, Cannes 1991.
His documentaries like **Sangai** (1988), **The dear on the Lake** 1989, **Koro Kosii** (1988), **Indigenous Games of Manipur** (1990), **Meitei Pung** (1991), **Lai Haraoba** (1993) and **Orchids of Manipur**, (1994), were well-received in India and abroad.

सर्वोत्तम जीवनी फिल्म पुरस्कार

अ लिविंग लिजेन्ड (अंग्रेज़ी)

निर्माता : **औरोरा फिल्म कॉरपोरेशन प.लि.** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **शतद्रु चाकी** को स्वर्ण कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम जीवनी फिल्म का 1995 का पुरस्कार **ए लिविंग लिजैंड** को शिक्षाविद और सांसद, प्रोफेसर हीरेन मुखर्जी के जीवन के यथार्थ चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST BIOGRAPHICAL FILM

A LIVING LEGEND (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **AURORA FILM CORPORATION PVT. LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **SATADRU CHAKI**

Citation

The Award for the Best Biographical Film of 1995 is given to **A LIVING LEGEND** for portraying with sincerity the life of an educationist and parliamentarian Prof. Hiren Mukherjee.

शतद्रू चाकी विडिओ एवं सेलूलौएड के लघु चित्रों के स्वतंत्र फिल्म निर्माता-निर्देशक है। उन्होंने अंग्रेज़ी में कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नानक किया पर कला एवं संस्कृति में उनकी रूचि बचपन से थी। इस कारण वे फिल्मों की ओर आकर्शित हुए। वे राज्य फिल्म संस्था में भी सक्रीय रहे और पुणे से उन्होंनें फिल्म परखने का कोर्स उत्तीर्ण किया। इसके बाद वे राजन तरफदार के साथ एक सहायक के रूप में कार्य करने लगे। उन्होंने तरूण मजुमदार के प्रमुख सहायक के रूप में भी उनकी फिल्म **पथ-ओ-प्रासाद** में काम किया। उन्होंने सिनेमा के कला पर कई लेख लिखे हैं जो चलचित्रम के नाम से जानी जाती है। उनकी कुछ गैर कथाचित्र है **निरौब समुद्र, आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय, अ पोर्ट्रेट ऑफ ए साइनटिस्ट, सोपान,** आदि।

Satadru Chaki is a full time short film maker both in video and in celluloid on an independent basis. An honours in English from Calcutta University he had a knack for various art forms since his early childhood that contributed as a rule to his early interest in films. He became active, consequentially in the state film society. He completed a film appreciation course at Pune and joined late veteran Film Director Rajen Tarafder as one of his assistants. He also worked as the first assistant to Sri Tarun Majumdar in his **Path-O-Prasad**. He has also to his credit a collection of articles on the Art of Cinema in vernacular named Chalachitra. His documentaries include **Nirab Samudra, Acharya Prafulla Chandra Roy, A portrait of a Scientist, Sopan etc.**

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म पुरस्कार

पाकरन्नाट्टम अम्मानूर द एक्टर (मलयालम)

निर्माता : **पी.जी. मोहन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **एम.आर. राजन** एवं **सी.एस. वेंकटेश्वरन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म का 1995 का पुरस्कार **पाकरन्नाट्टम अम्मानूर द एक्टर** को कूडियाट्टम अभिनेता अम्मानूर माधव चक्यार द्वारा यथा अभिनीत कुडियाट्टम की प्राचीन मंचीय कृति के संवेदनशील आलेखन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ARTS/CULTURAL FILM

PAKARNNATTAM AMMANNUR THE ACTOR (MALAYALAM)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **P.G. MOHAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **M.R. RAJAN & C.S. VENKITESWARAN**

Citation

The Award for the Best Arts/Cultural Film of 1995 is given to **PAKARNNATTAM AMMANNUR THE ACTOR** for recording sensitively the ancient theatre form of Koodiyattam as interpreted by the legendary Koodiyattam actor Ammannur Madhava Chakyar.

पी.जी. मोहन विज्ञान में स्नातक है। वे एक व्यावसायिक हैं और पार्को ग्रुप के निदेशक हैं।

P.G. Mohan is a science graduate and a businessman. He is the Director of Parco Group.

एम.आर. राजन ने श्री केरलावर्मा कॉलेज से दर्शन में स्नातक किया जिसके बाद उन्होंने फिल्म एवं टेलिवीजन संस्था, पुणे से फिल्म निर्देशन में डिप्लोमा किया। उनकी डिप्लोमा फिल्म **दूरम** को भारतीय फिल्म समारोह (1989), ओपरहाउसन (1988), कार्लोवी वैरी (1989) तथा बम्बई (1990) के समारोहों में दर्शाया गया। **छाया** को अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह, 1992 के भारतीय पैनोरमा तथा ईजिप्ट फिल्म समारोह, 1992 में दिखाया गया।
उनकी विडिओ फिल्म **चेनकलील ओरू संकीर्थनम** को सर्वोत्तम विडिओ गैर कथाचित्र का 1994 का राज्य सरकार पुरस्कार प्राप्त हुआ। **पाकरन्नाट्टम अम्मानूर** को 1995 का राज्य पुरस्कार मिला तथा अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह के 1996 के भारतीय पैनोरमा में दर्शाया गया।

M.R. Rajan took his degree in Philosophy from Shree Keralavarma College and then completed his Diploma in Cinema with specialisation in Direction from Film and Television Institute of India, Pune in 1988. His diploma film **Dooram** was screened at the Indian Film Festival (1989), Operhausen (1988), Karlovy Vary (1989), of Bombay (1990). **Chhaya** was screened in the Indian Panorama of IFFI 1992 and was selected to Egypt Film Festival (1992).
Rajan's video film **Chenkallil oru Sankeerthanam** won the State Government Award for best video documentary in 1994.
Pakarnnattam Ammannur won the state Award in 1995 and was screened in Indian Panorama of IFFI 1996.

सी.एस. वेंकटेस्वरन का जन्म 1959 में हुआ तथा उन्होंने कैलिकट विश्वविद्यालय से स्नातक और 1990 में वाणिज्य शास्त्र में डॉक्टरेट किया। वे फिल्म, कला तथा संस्कृति पर कभी-कभी लेख लिखते हैं। वे फिल्म संस्था आंदोलन में भी सक्रीय थे। **पाकरन्नाट्टम** को 1996 के भारतीय पैनोरमा में दर्शाया गया। वे इस समय त्रिवान्द्रेम के सेंटर फार टैक्सेशान स्टडीज के अध्यापक हैं।

C.S. Venkiteswaran, born in 1959, took post-graduate degree from the University of Calicut and Doctorate in Commerce in 1990. He writes occasionally on film, arts and culture. He was active in the film society movement. **Pakarnnattam** was selected to the Indian Panorama of IFFI 96 and won the State Award for the Best Documentary Film. At present he is working as faculty in Centre for Taxation Studies, Trivandrum.

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म पुरस्कार (विज्ञान की पद्धति, प्रक्रिया एवं वैज्ञानिकों का योगदान सहित)

ए सलैश्चियल ट्राइस्ट (एन.एम.नं. 291) (अंग्रेज़ी)

निर्माता : **वाई.एन. इंजीनियर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **वाई.एन. इंजीनियर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म का 1995 का पुरस्कार **ए सलैश्चियल टाइस्ट (एन.एम.नं. 291)** को सम्पूर्ण सूर्य-ग्रहण के मनोहारी सौदर्य की प्रस्तुति और सम्बन्धित वैज्ञानिक सूचना देने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST SCIENTIFIC FILM

(including method and process of science, contribution of scientists etc.)

A CELESTIAL TRYST (N.M.NO. 291) (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **Y.N. ENGINEER, FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **Y.N. ENGINEER, FILMS DIVISION**

Citation

The Award for the Best Scientific Film of 1995 is given to **A CELESTIAL TRYST (N.M.NO. 291)** for presenting the total solar eclipse in all its captivating beauty, while providing relevant scientific information.

वाई.एन. इंजीनियर ने 1968 में पुणे के फिल्म संस्था में सिनेमा पर डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने प्रसिद्ध सिनेमाटोग्राफर जाल मिस्त्री के सहायक के रूप में हिन्दी फिल्मों में काम किया। उसके पश्चात् वे दूरदर्शन में कैमरामैन और फिल्म एवं टेलिविज़न संस्था पुणे के अध्यापक भी रहे। फिल्म डिविज़न के निर्देशक के रूप में उन्होंने 40 गैर-कथाचित्रों का निर्माण किया। इन दिनों वे फिल्म डिविज़न में ही निर्माता के रूप में कार्यरत हैं।

Y.N. Engineer did his Diploma in Cinema (Motion Picture Photography) in 1968 from the Film Institute of India, Pune. He has worked in the Hindi Film Industry as an assistant to Cinematographer Jal Mistry, as a Cameraman in Doordarshan and as a Lecturer in the Film and Television Institute of India.

A Director in Films Division, he has 40 documentaries to his crdit. He is at present working as a Producer in Films Division.

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परीरक्षण फिल्म पुरस्कार (जानकारी सहित)

अमृत बीज (अंग्रेज़ी/कन्नड़)

निर्माता : **मीरा दीवान** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **मीरा दीवान** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फिल्म का 1995 का पुरस्कार **अमृत बीज** को, महिलाओं द्वारा पर्यावरण के संरक्षण के क्षेत्र में हमारी परम्पराओं की सफल रिकोर्डिंग के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ENVIRONMENT/ CONSERVATION/PRESERVATION FILM

(including awareness)

AMRIT BEEJA (ENGLISH/KANNADA)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **MEERA DEWAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **MEERA DEWAN**

Citation

The Award for the Best Environment/Conservation/Preservation Film of 1995 is given to **AMRIT BEEJA** for successfully recording our traditions in the field of preservation of environment by women.

मीरा दीवान ने बम्बई एवं नई दिल्ली के विज्ञापन संस्थाओं में 6 वर्ष कार्य किया। 1982 से वे गैर कथाचित्र बनाने लगीं। उनकी पहली फिल्म थी फिल्म डिवीज़न के लिए दहेज विरोधी **गिफ्ट आफ लव** जिसे 11 अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उन्होंने दूरदर्शन और भारत के विभिन्न मंत्रालयों के लिए 20 गैर कथाचित्रों का निर्माण किया है। उन्हें कई राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हैं। वे भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह, ओवरहाऊसन समारोह, लेइपज़िग अंतरराष्ट्रीय समारोह, ओकोमीडिया पर्यावरण फिल्म समारोह (फ्रेइबर्ग, गर्मनी) के निर्णायक मंडल की सदस्या रही हैं। वे डाइरेक्टरेट आफ फिल्म फेस्टिवल की परामर्शदाता भी रही हैं जिनके लिए उन्होंने डाक्यूमीडिया नामक पहली डाक्यूमेंटरी फिल्म समारोह का आयोजन भी किया था। उन्होंने एन.एफ.डी.सी. के साथ सिने वुमैन - महिला समारोह का आयोजन भी किया है। वे फिल्म एवं टी.वी. के विषयों का शिक्षण देने वाली संस्थाओं से अतिथी लेक्चरर के रूप में युक्त हैं।

अमृत बीज को बम्बई अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह, 1995 में पुरस्कार प्राप्त हुआ।

Meera Dewan has an experience in advertising for 6 years in Bombay and New Delhi. She moved to documentary film-making in 1982. Her first documentary, an anti-dowry film for Films Division **Gift of love** won 11 International awards at leading films festivals world wide. She has produced over 20 documentaries for Doordarshan and various Ministries of Government of India. She has won various National and International awards. She has been Jury member to Internation Film Festival of India, Oberhausen Festival, Leipzig International Festival, Okomedia Environment Film Festival at Freiburg, Germany. She has been consultant to the Directorate of Film Festivals, India for whom she organised Documedia, India's first Documentary Film Festival. She organised Cine Woman, a Festival of Women's Films with National Film Development Corporation. She is a lecturer at Film & TV teaching institutions.

Amrit Beeja was awarded at the Bombay International Film Festival, 1995.

सर्वोत्तम कृषि फिल्म पुरस्कार

(पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, आदि जैसे कृषि से संबंधित विषयों को शामिल करना)

ड्रिप एण्ड स्प्रिंकलर इरीगेशन (हिन्दी)

निर्माता : **एल.के. उपाध्याय** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **ए.के. गूर्हा** को स्वर्ण कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कृषि फिल्म का 1995 का पुरस्कार **ड्रिप एण्ड स्प्रिंकलर इरीगेशन** को, नई सिंचाई प्रणाली के सत्य, प्रत्यक्ष और स्पष्ट प्रदर्शन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AGRICULTURAL FILM

(to include subject related to and allied to agriculture like animal husbandary, dairying etc.)

DRIP AND SPRINKLER IRRIGATION (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **L.K. UPADHYAYA, FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **A.K. GOORHA, FILMS DIVISION**

Citation

The Award for the Best Agricultural Film of 1995 is given to **DRIP AND SPRINKLER IRRIGATION** for its simple, direct and clear demonstration of new irrigation systems.

एल.के. उपाध्याय ने 1966 में पटकथा लेखन तथा फिल्म निर्देशन में पूणे फिल्म एवं टेलिविज़न संस्था से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उसके पश्चात् उन्होंने कांति लाल राठोड़ के साथ काम किया और दूरदर्शन में एक स्वच्छद लेखक के रूप में काम किया। उन्होंने 1971 में निर्देशक के पद पर फिल्म डिविज़न में कार्य करना आरंभ किया और 1979 से 1984 तक हरयाणा सरकार के लिए निर्माता का कार्य किया। उसके बाद से वे फिल्म डिविज़न में निर्माता बने। उन्होंने सेन्ट्रल बोर्ड आफ फिल्म सर्टीफिकेशन और डाइरेक्टेरट आफ फिल्म डिविज़न में भी काम किया है। इस समय वे फिल्म डिवीज़न में उप-मुख्य निर्माता नियुक्त हैं। उन्होंने कई गैर कथाचित्र, प्रशिक्षण फिल्म तथा न्यूज़रील का निर्माता-निर्देशन किया है।

L.K. Upadhyaya graduated from FTII, Pune in Screen play writing and Film Direction in 1966. He then worked with Kanti Lal Rathore and as a freelancer for Doordarshan. He joined Films Division as Director in 1971 & worked as Film Producer with Haryana Government from 1979 to 1984. Thereafter he has worked as Producer for Films Division. He also worked for Central Board of Film Certification and for the Directorate of Film Festivals. At present, he is posted as Deputy Chief Producer, Films Division. He has produced and directed scores of documentaries, training films and newsreels.

ए.के. गूहा ने फिल्म एवं टेलिविज़न संस्था पुणे के प्रथम बैच में 1964 में चलचित्र छायांकन का डिप्लोमा प्राप्त किया। उसके बाद उन्होंने दूरदर्शन का भी प्रशिक्षण पाया। उन्होंने दूरदर्शन केन्द्र, परिवार कल्याण विभाग तथा फिल्म डिवीज़न में कैमरामैन और न्यूज़रील अध्यक्ष के रूप में 1984 तक कार्य किया जिसके पश्चात उन्होंने फिल्म डिवीज़न के निर्देशक और कैमरामैन के रूप में न्यूज़ मैगज़ीन बनाई। इन दिनों वे फिल्म डिवीज़न के निर्माता है।

उन्हें कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। **हिल एडवेंचर न्यू विस्टास** को 1992 के निट्रा के 9वे अंतरराष्ट्रीय कृषि फिल्म समारोह में एफ.ए.ओ पुरस्कार प्राप्त हुआ। **रूरल एनर्जी नन कन्वेंशनल** को 1993 के अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में चुना गया।

A.K. Goorha graduated from among the 1st batch of FTII, Pune and completed his Diploma of Motion Picture Photography in 1964. He also received TV training at FTII later. He served at Doordarshan Kendra, Department of Family Welfare and Films Division as Cameraman and Newsreel Officer till 1984. He has since directed many documentaries, news magazines in the capacity of Director, Cameraman at Films Division. He is presently posted as Producer at Films Division.

He has been awarded many International Awards for his documentary films. His film **Hill Agriculture New Vistas** won the FAO Award in the 9th International Agro Film Festival at Nitra in 1992. **Rural Energy - Non Conventional** was selected by the Jury of the 4th International Film Festival in 1993.

सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म पुरस्कार

भालजी पेंढारकर (अंग्रेज़ी)

निर्माता : **सी.एस. नायर** एवं **बी.आर. शेन्डे** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **पी.बी. पेंढारकर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म का 1995 का पुरस्कार **भालजी पेंढारकर** को, राष्ट्रीय आन्दोलन एवं आजादी के बाद के परिदृश्य के साथ एक पथ प्रदर्शक फिल्म निर्माता की जीवनी के सावधानीपूर्ण पुनर्निर्माण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST HISTORICAL RECONSTRUCTION/COMPILATION FILM

BHALJI PENDHARKAR (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **C.S. NAIR & B.R. SHENDGE, FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director **P.B. PENDHARKAR, FILMS DIVISION**

Citation

The Award for the Best Historical Reconstruction/Compilation Film of 1995 is given to **BHALJI PENDHARKAR** for its careful reconstruction of the life of a pioneering film-maker, vis-a-vis the national movement and post independence scenario.

चंद्रशेखर नायर फिल्म डिविज़न में निर्माता के पद पर कार्य करते हैं। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से 1960 में आर्टस में स्नातक तथा प्रयोगात्मक साईकोलाजी और हिन्दी में स्नातकोत्तर किया। उन्होंने फिल्म एवं टेलिविजन संस्था से 1964 में प्रथम श्रेणी में डिप्लोमा प्राप्त किया। वे बाद में वहाँ कुछ समय के लिए शिक्षक भी रहे। वे एक प्रसारक, पत्रकार, नाट्यकार, फिल्म लेखक, निर्माता और निर्देशक रह चुके हैं। उन्होंने **(स्व) श्रीमती इंदिरा गांधी, (स्व) श्री जय प्रकाश नारायण, (स्व) श्री राजीव गांधी,** आदि। उन्हें 1976 में **बस्तर- रिदम आफ प्रॉग्रेस** के लिए राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

बी.आर. शेन्डे ने 1961 में फिल्म डिविज़न के कार्टून फिल्म यूनिट में कार्य करना प्रारंभ किया तथा उन्होंने विभिन्न क्षमताओं में कार्य किया। वे निर्माता के पद से सेवानिवृत हुए। उन्होंने कार्टूनकार, निर्माता तथा निर्देशक का कार्य किया। उन्हें 11 राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं तथा कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

पी.बी. पेंढारकर 1961 से फिल्मस् डिविज़न में उपमुख्य निर्माता हैं। उन्होंने 1952 से 1959 तक भाल्जी पेंढारकर और वी. शांताराम की **दो आँखें बारह हाथ, तूफान और दीया, नवरंग,** आदि फिल्मों में सहायक का कार्य किया। उन्होंने मराठी फिल्म **भाऊ ताते देव** तथा **बाल शिवाजी** की कहानी का लेखन-निर्देशन किया जिसके लिए 1981 में मद्रास के नीओ यूथ अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में उन्हें दूसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्हें **फोर्टस एण्ड द मैन** और **वीव मी सम फ्लावरस्** के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए।

Chandrashckhar Nair is a producer for the Films Division. He graduated in Arts in 1960 and did his masters in Experimental Pshyhology and Hindi. He obtained a I class Diploma from in 1964. He was also an Instructor. He has been a journalist, playwright, film-writer, director and producer. He has made films on **The lives of (late) Smt. Indira Gandhi, (Late) Shri Jaya Prakash Narayan, (Late) Shri Rajiv Gandhi** and others. He received National Award for **Bastar - Rhythm of Progress** (1976) and several International Awards.

B.R. Shendge joined the cartoon film unit of the Films Division in 1961 and worked in various capacities till he retired as its Producer. He has animated, directed and produced various types of animation and documentary films. He has won 11 National Awards and many international recognitions.

P.B. Pendharkar has been working as the Deputy Chief Producer with Films Division since 1961. He has worked as assistant to Bhalji Pendharkar and V. Shantaram from 1952 to 1959 for **Do Aakken Barah Haath, Tufan aur Diya, Navrang,** etc. He has written and directed feature films **Bhau Tate Dev** (Marathi) and **Bal Shivaji** which won the 2nd Best Feature Film Award in the Neo Youth International Film Festival (1981) in Madras. He has received National Awards for **Forts and the Man** and **Weave me some flowers.**

सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार (जैसे मद्य-निषेध, महिला और बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों से हानियाँ, विकलांग कल्याण आदि)

मेमोरीज़ ऑफ फीयर (हिन्दी/अंग्रेज़ी)

निर्माता : **फ्लाविया एग्नेस, मजलिस प्रोडक्शन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **मधुश्री दत्ता** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म का 1995 का पुरस्कार **मेमोरीज़ ऑफ फीयर** को, पितृसत्ता प्रधान समाज में महिलाओं के और अवमानना को गहराई से उजागर करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES

(such as prohibition, women and child welfare, and dowry, drug abuse, welfare of the handicapped etc.)

MEMORIES OF FEAR (HINDI/ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **FLAVIA AGNES, MAJLIS PRODUCTION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **MADHUSREE DUTTA**

Citation

The Award for the Best Film on Social Issues of 1995 is given to **MEMORIES OF FEAR** for exposing with insight the fear psychosis and humiliation of women in the patriarchal Indian society.

फ्लाविया एग्नेस एक वकील हैं तथा वे महिला अधिकारों के लिए लड़ती हैं। उन्हें महिलाओं को उनका कानूनी अधिकार दिलाने के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य के लिए 1994 में नीरजा भनोत का प्रथम पुरस्कार दिया गया। वे एक बहुसर्जक लेखिका हैं और उन्हें कई गैर कथाचित्रों में दिखाया गया है। उन्होंने कई गैर कथाचित्रों के लिए खोज किए हैं जिसमें से एक है **आई लिव इन बहरामपेड़ा।** **मेमोरीज़ ऑफ फियर** उनके निर्माण की प्रथम फिल्म है।

Flavia Agnes is an advocate and a women's rights activist. She is the first recipient of Neerja Bhanot award for outstanding work in the field of women's legal rights in the year 1992 and also received the Bharat Nirman Award in 1994 for her outstanding contribution in the field of law. She is a prolific writer and has featured in a number of documentaries. She has conducted research for several documentaries including **I live in Behrampada**.
Memories of fear is her first foray into film production.

मधुश्री दत्ता जादवपुर विश्वविद्यालय कलकत्ता से अर्थशास्त्र की स्नातक हैं तथा उन्होंने नैशनल स्कूल आफ ड्रामा, नई दिल्ली से ड्रामाटिक्स का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। मधुश्री ने कलकत्ता और बम्बई मंच के लिए कई बंगला, हिन्दी और गुजराती नाटकों का निर्माता-निर्देशन किया। उन्होंने दूरदर्शन के लिए कई धारावाहिकों का निर्देशन किया तथा पुरस्कृत विडिओ गैर कथाचित्र **आई लिव इन बहरामपेड़ा** का निर्देशन भी किया। **मेमोरीज़ ऑफ फियर** उनकी प्रथम गैर कथाचित्र है और इसे भारतीय पैनोरमा में 1994 के अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में दर्शाया गया।

Madhusree Dutta is a graduate of Economics from Jadavpur University. Calcutta and then studied Dramatics from National School of Drama, New Delhi. Madhusree has produced and directed several plays in Bengali, Hindi and Gujrati for Calcutta and Bombay stage. She has directed television serials and her video documentary **I live in Behrampada** was an award wining film.
Memories of fear is her first film and has already been screened in the non-feature section of the Indian Panorama of Internation Film Festival of India, 1996.

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फिल्म पुरस्कार

होम अवे फ्रॉम होम (अंग्रेज़ी)

निर्माता : **वी.बी. जोशी, महर्षी कर्वे स्त्री शिक्षण संस्था** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : (स्व) **विश्राम रेवांकर, अवीर फिल्मस्** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फिल्म का 1995 का पुरस्कार **होम अवे फ्रॉम होम** को, महिलाओं की शिक्षा और उनके विकास के डॉ. कर्वे के सपने को वास्तविकता में बदलने की प्रक्रिया के उत्तम प्रदर्शन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDUCATIONAL/ MOTIVATIONAL/INSTRUCTIONAL FILM

HOME AWAY FROM HOME (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **V.B. JOSHI, SECRETARY, MAHARSHI KARVE STREE SHIKSHAN SANSTHA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **LATE MR. VISHRAM REVANKAR, C/O AVEER FILMS**

Citation

The Award for the Best Film on Social Issues of 1995 is given to **HOME AWAY FROM HOME** for presenting ably how the vision of Dr. Karve has been turned into a reality for education and development of women.

वी.बी. जोशी 1981 से महर्षि कर्वे स्त्री-शिक्षण संस्था के सचिव हैं। वे इसी संस्था में वाणिज्य विषय के लेक्चरर भी हैं। इस संस्था में एक इंजिनीयरिंग तथा एक आर्किटेक्चर कॉलेज है। श्री सिद्धीविनायक आर्टस एण्ड कामर्स कॉलेज भी इसी संस्था का अंग है। ये संस्था लड़कियों को वोकेशनल शिक्षण देती है और इस संस्था की कई सामाजिक, शैक्षिक और वाणिज्यिक शाखाएँ हैं।

V.B. Joshi has been the Secretary of Maharshi Karve Sree Shikshan Sanstha since 1981. He is also a lecturer in Commerce in the college of the Sanstha. The Institute has an Engineering and an Architecture College for Women. Shri Siddhivinayak Arts and Commerce College for girls is also part of this Institute. The Centre imparts vocational training to girls and has many other social, educational & commercial branches.

(स्व) श्री विश्राम रेवांकर कई गैर कथाचित्रों के निर्माता-निर्देशक हैं। उन्हें चार राष्ट्रीय तथा तीन अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हैं। वे फिल्म एवं टेलिविज़न संस्था पुणे के शैक्षिक टेलिविज़न के सहायक प्रोफेसर भी थे। उनकी 15 जनवरी, 1996 में एक दुर्घटना में मृत्यु हो गयी।

(Late) Shri Vishram Revankar was producer and director of many documentaries. He had won four National awards and three International awards. He was formerly Asstt. Professor, Educational Television at Film and Television Institute of India, Pune. He expired in an accident on15th Jan. 1996.

सर्वोत्तम खोजी फिल्म पुरस्कार

लिमिट टू फ्रीडम (अंग्रेज़ी)

निर्माता : **दीपक राय** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **दीपक राय** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

सर्वोत्तम खोजी फिल्म का 1995 का पुरस्कार **लिमिट टू फ्रीडम** को, महिला कैदियों की दयनीय स्थिति एवं उनके अंधकारमय भविष्य के चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST INVESTIGATIVE FILM

LIMIT TO FREEDOM (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **DEEPAK ROY**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **DEEPAK ROY**

Citation

The Award for the Best Investigative Film of 1995 is given to **LIMIT TO FREEDOM,** for depicting the miserable plight of women prisoners and their bleak prospects for any future.

दीपक राय

Deepak Roy

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म पुरस्कार

'ओ' (अंग्रेज़ी)

निर्माता : **भीमसेन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **किरीट खुराना** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

एनिमेटर : **किरीट खुराना** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म का 1995 का पुरस्कार **'ओ'** को, मानव जीवन में बोझ बनने वाले संग्रहों को फेंकने के बाद आने वाली बच्चों जैसी प्रफुल्लता को संक्षिप्त और मौज के साथ प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ANIMATION FILM

'O' (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **BHIMSAIN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **KIREET KHURANA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Animator: **KIREET KHURANA**

Citation

The Award for the Best Animation Film of 1995 is given to the film **'O'**, for succintly and with humour showing that acquisitions can become a burden and only after this load is cast off that human beings become happy like children.

भीमसैन फिल्म डिविज़न के बैकग्राउन्ड कलाकार के रूप में कार्य करते थे। उन्हें शिकागों फिल्म समारोह में **द क्लाइंब** (1970) के लिए रजत पदक मिला। 1975 में उनके **एक अनेक और एकता** को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्होंने कई कार्टून फिल्म एवं विज्ञापनों, टेलिविज़न के लिए धारावाहिक और गैर-कथाचित्रों का निर्माण तथा निर्देशन किया है। भीमसेन की पहली फिल्म **घरोंदा** (1976) को कई पुरस्कार मिले। बाद में उन्होंने **दूरियाँ** तथा **तुम लौट आओ** का निर्देशन किया। उन्होंने **लोक गाथा** (1991) में पहली बार कम्प्यूटर से कार्टून बनाया और 3 राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए। उन्हें 1995 में **महागिरी** के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

Bhimsain worked as a background artist with Films Division. He was awarded the Silver Hugo Award at Chicago Film Festival for **The Climb** (1970). In 1975 **Ek Anek Aur Ekta** won him the President's National Award. Bhimsain made his first feature film **Gharonda** (1970) which fetched him numerous awards. He has directed and produced several animation films and commercials, TV serials and documentaries. He later successfully directed **Dooriyan** and **Tum Laut Aao**. In 1991 he made his first computer aided animation series **Lok Gatha** which fetched him 3 National Awards. He also won the National Award for **Mahagiri** (1995).

किरीट खुराना ने कैनेडा के शेरिडन कॉलेज से 3 साल का क्लासिकल सेल-एनिमेशन का कोर्स किया। उन्होंने कई कार्टून फिल्मों का निर्देशन किया जैसे **अल्फाकैट, सीमा, एनकोर** और **द लव नेक्टर**। उन्होंने इन्दो-कैनेडियन सहयोग से बनी **राइट्स फ्रम द हार्ट, लॉक्ड** तथा अब भी चल रही **फ्लेश ट्रेड** फिल्मों के निर्देशक हैं। उन्होंने कुछ अति लोकप्रिय विज्ञापनों का भी कम्प्यूटर ऐनिमेशन किया है। उन्हें 1995 में **महागिरी** के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

Kireet Khurana graduated with high honours from Sheridan College, Canada where he did a 3 year classical Cel-Animation Course. He has directed several animation short films independently like **Alphacat, Seema, Encore** and **The Love Nectar.** He has also directed Indo-Canadian Co-productions like **Rights from the Heart, Locked** and the ongoing flesh trade. He has been doing some very popular ad films with his extensive knowledge of computer animation. He won the National Award for best animation film for **Mahagiri** (1995).

विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार

सोना माटी (मारवाड़ी)

निर्माता : **सहजो सिंह एवं अन्वर जमाल** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

विशेष निर्णायक मंडल का 1995 का पुरस्कार **सोना माटी** को, भूमि हड़पने के विरुद्ध महिला संग्राम का नेतृत्व करने वाली एक किसान महिला के जीवन के उत्कृष्ट प्रेरक प्रसंगों के चित्रण के लिए दिया गया है।

SPECIAL JURY AWARD

SONA MAATI (MARWARI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **SEHJO SINGH & ANWAR JAMAL**

Citation

The Special Jury Award of 1995 is given to **SONA MAATI,** for presenting an excellent, inspiring portrait of a woman peasant who is leading the struggle of women against land grabbing.

सहजो सिंह ने राजनीति विज्ञान तथा मास कम्यूनिकेशन में स्नातकोत्तर किया तथा वे महिला और मानव अधिकार गुटों से संबंध रखती हैं। द **वूमेन बिट्रेयड**, उनकी प्रथम गैर कथाचित्र को 1993 का सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार तथा तोक्यो में निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार प्राप्त हुआ।

सोना माटी उनकी द्वितीय गैर कथाचित्र है और इसे 1996 के अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह के भारतीय पैनोरमा में दर्शाया गया। इस फिल्म को बम्बई अंतरराष्ट्रीय गैर कथाचित्र समारोह में स्वर्ण शंख प्राप्त हुआ था।

Sehjo Singh did her masters in Political Science and Mass Communication and was actively involved with women's and Human Rights groups. **The Women betrayed** was her first independent documentary which won the National Award for the Best Film on social issues in 1993 and the Special Jury Award in Tokyo 1994.

Sona Maati is her second independent film and was screened in the Indian Panorama of International Film Festival of India, 1996. The film also won the Golden conch at the Bombay International Documentary Festival.

अन्वर जमाल ने हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर करने के बाद जामिया मिलिया इस्लामिया से मास कम्यूनिकेशन में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने 1992 का सर्वोत्तम पुरस्कार पाने वाली फिल्म **भागीरथी की पुकार** का निर्माता-निर्देशन किया है। उन्होंने कई गैर कथाचित्र और लघु चित्रों का निर्माता-निर्देशन किया। दूरदर्शन के लिए उन्होंने साहित्यिक तथा सामाजिक विषयों पर फिल्म बनाए हैं। इन दिनों वे वृद्ध नागरिकों पर एक सांस्कृतिक धारावाहिक का निर्माता-निर्देशन कर रहे हैं।

Anwar Jamal has a masters in Hindi literature and a training in Mass Communication in Jamia Millia Ismalia. He has produced and directed **Bhagirathi Ki Pukar**, the National Award winning film in 1992. He has also directed and produced a number of documentaries and short films for television on literary and aesthetic subjects apart from issues of social concern. He is currently directing and producing a serial on culturally accomplished senior citizens.

लघु कल्पित सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार (फिल्म की अवधि 70 मिनट से अधिक न हो)

द रेबेल (हिन्दी)

निर्माता : **जॉन शंकरमंगलम, निर्देशक, एफ.टी.आई.आई.** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **राजश्री** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म का 1995 का पुरस्कार **द रेबेल** को, एक किशोर के परिपक्वता में प्रवेश करने और अपनी मां के साथ समझौता करने के प्रदर्शन के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

(Films not exceeding 70 minutes duration)

THE REBEL (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **JOHN SHANKARMANGALAM, DIRECTOR, FTII**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **RAJASHREE**

Citation

The Award for the Best Short Fiction Film of 1995 is given to **THE REBEL,** for showing an adolescent's journey to maturity and his coming to terms with his mother.

जॉन शंकरमंगलम

John Shankarmangalam

राजश्री का जन्म 1971 में नागपुर में हुआ। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से बी.ए. की डिग्री प्राप्त कर फिल्म एवं टेलिविज़न संस्था, पुणे से फिल्म निर्देशन में स्नातक किया।
द रेबेल उनकी डिप्लोमा फिल्म है।

Rajashree was born at Nagpur in 1971. She did her B.A from Nagpur University and then graduated in Film Direction from the Film and Television Institute of India, Pune. **The Rebel** is her diploma film.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार

सोच समझ के (हिन्दी)

निर्माता : **शांता गोखेले** एवं **अरूण खोपकर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अरूण खोपकर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम परिवार कल्याण फिल्म का 1995 का पुरस्कार **सोच समझ के** को, जटिल पारिवारिक सम्बन्धों के बावजूद भी परिवार कल्याण की स्वीकृति को सुन्दर रूप से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

SOCH SAMAJH KE (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **SHANTA GOKHALE & ARUN KHOPKAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **ARUN KHOPKAR**

Citation

The Award for the Best Film on Family Welfare of 1995 is given to **SOCH SAMAJH KE,** for presenting aesthetically how family welfare could be achieved despite complex family relationships.

शांता गोखले एक शिक्षिका, जन संपर्क अधिकारी, पत्रकार, लेखिका तथा अनुवादिका हैं। वे 1988 से 1993 तक टाईम्स आफ इंडिया, बम्बई की कला संपादिका रह चुकी है। उन्होंने कई कविता, कहानी तथा नाटकों का मराठी से अंग्रेजी में रूपातर किया है जो विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित की गई हैं। उन्हें 1990 में महाराष्ट्र राज्य का वी.एस. खांडकर पुरस्कार उनके मराठी उपन्यास **रीता वेलिंकर** के लिए प्राप्त हुआ। वे **कलर्स आफ ऐबसेन्स** की सह-निर्माता तथा सह-कहानिकार हैं जिसे 1993 का सर्वोत्तम जीवनी के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

Shanta Gokhale has been a teacher, public relations executive, journalist, writer and translator. She was Arts Editor of the Times of India, Bombay from 1988 to 1993. She has translated poetry fiction and drama from Marathi into English which have been published in journals and as books. She received the V.S. Khandekar award for the Best Novel in 1990 for her Marathi novel **Rita Welinkar** from Maharashtra state. She was the co-producer and script-writer for **Colour of Absence** which won the National Award for the Best Biographical Film in 1993.

अरूण खोपकर फिल्म एवं टेलिविज़न संस्था, पुणे के स्नातक हैं तथा कई देशों में घूमे हुए बहुभाषी हैं। वे 1985-87 तक होमी भाबा फैलो रह चुके हैं। उन्होंने कई जगह लेक्चर भी दिए हैं। **गुरू दत्त** पर मराठी में लिखी उनकी पुस्तक को 1986 का सर्वोत्तम पुस्तक का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्होंने 20 से अधिक फिल्में बनाई हैं तथा उन्हे कई राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हैं। उनके कुछ फिल्म हैं - **टोबाको हैबिट्स एण्ड ओरल कैंसर, फिगर्स आफ थॉट** (तीन आधुनिक भारतीय चित्रकारों की कहानी) **संचारी** (शास्त्रीय नृत्य पर बनी फिल्म), **कलर्स आफ ऐबसेन्स** (जहाँगीर साबालावा की कहानी) आदि। **फिगर्स आफ थॉट, संचारी** और **कलर्स आफ ऐबसेन्स** को क्रमानुसार मद्रास (1991), बंगलोर (1992) और कलकत्ता (1994) के भारतीय पैनोरमा में दिखाई गई हैं।

Arun Khopkar is a graduate of the Film and Television Institute of India, Pune and a widely travelled polyglot. He was a Homi Bhabha fellow from 1985-87. He has lectured extensively at prestigious institutions. His book in Marathi on Guru Dutt won him the National Award for The Best Book on Cinema in 1986. He has made more than 20 films and has won National and International awards for **Tobacco Habits and Oral Cancer, Figures of Thought** (a film on the work of three modern Indian painters), **Sanchari** (on the classical Indian dance form), **Colours of Absence** (an evocative tribute to the work of artist Jehangir Sabavala) etc. **Figures of Thought, Sanchari** and **Colours of Absence** were selected in the Indian Panorama of IFFI in Madras (91), Bangalore (92) and Calcutta (94) respectively.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

राफेय महमूद

छायाकार : **राफेय महमूद** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

फिल्म की प्रोसेसिंग करने वाली प्रयोगशाला : **ऐड लैबस** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर कथाचित्र के सर्वोत्तम छायाकार का 1995 का पुरस्कार **राफेय महमूद** को, **तराना** में आकर्षक कैमरा गति, उत्कृष्ट प्रकाश व्यवस्था और संगीतमय कम्पोजीशिनों के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHER

RAFEY MEHMOOD

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000/- to the Cameraman : **RAFEY MEHMOOD**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Laboratory processing the film: **AD LABS.**

Citation

The Award for the Best Cinematography for a Non-Feature Film of 1995 is given to **RAFEY MEHMOOD,** for the beautiful images achieved through fascinating camera movements, excellent lighting, composition in tandem with music in **TARANA.**

राफेय महमूद ने फिल्म एवं टेलिवीज़न संस्था से सिनेमाटोग्राफी पर स्नातकोत्तर की उपाधी प्राप्त की है। उन्होंने 1993 में फिल्म डिवीज़न के लिए जीवनी फिल्म **सरदार पटेल** में काम किया। उनके अन्य फिल्में हैं - एक गैर कथाचित्र **नाइट्स एण्ड डेज़ आफ सतो यादव** (1992), बी.आई. टी.वी. के लिए रोमांचक कथाचित्र **प्राइवेट डिटेक्टिव** (1995), नेशनल फिल्म डेवेलपमेंट कारपोरेशन के लिए अरून खोपकर की मराठी कथाचित्र **द स्टोरी आफ टू गाइपात्राओस,** आदि। उन्होंने टेलिवीज़न के लिए धारावाहिकों में भी काम किया है जैसे केतन मेहता की ग्रामोफोन, भारतीय शास्त्रीय संगीत पर आधारित धारावाहिक राग रंग, अभिनेत्री, गीता प्रहास्य, आदि। उन्होंने प्रोमोशनल फिल्म तथा औद्योगिक कथाचित्रों में भी काम किया है।

Rafey Mehmood is a post graduate in Cinematography from the Film and Television Institute of India, Pune. He worked for **Sardar Patel** (1993), a biographical film by Films Division. Other works include **Nights and Day of Sato Yadav** (1992) — a documentary, **Private Detective** (1995) — a feature length thriller for BiTV, **The Story of two Gaiypatraos** a Marathi feature film by Arun Khopkar for National Film Development Corporation. He has worked in television serials as well — Ketan Mehta's Gramophone, a serial based on Indian Classic Music— Raag Rang, Abhinetri, Gita Rahasya, etc. He has shot promotional films and industrial documentaries also.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

श्याम सुंदर

ध्वनि आलेखक : **श्याम सुंदर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर कथाचित्र के लिए सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1995 का पुरस्कार **श्याम सुंदर** को **तत्व** फिल्म के विषय को ध्वनि के सृजनशील उपायों के जरिए प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

SHYAM SUNDER

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Audiographer: **SHYAM SUNDER**

Citation

The Award for the Best Audiography in a Non-Feature Film of 1995 is given to **SHYAM SUNDER,** for the creative use of sound to interpret the theme of the film **TATVA.**

श्याम सुंदर ने भारतीय फिल्म एवं टेलिविज़न संस्था, पुणे से स्नातक किया है। उसके बाद उन्होंने मद्रास की फिल्मों में कार्य किया।

Shyam Sunder is a graduate from Film and Television Institute of India Pune and has worked in earlier years in Madras film industry.

सर्वोत्तम संपादन का पुरस्कार

बी. लेनिन एवं वी.टी. विजयन

संपादक : **बी. लेनिन** एवं **वी.टी. विजयन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर कथाचित्र का सर्वोत्तम फिल्म सम्पादन का 1995 का पुरस्कार **बी. लेनिन** और **वी.टी. विजयन** को **कुट्टावली** एवं **उदाहा** फिल्मों में उपयुक्त मूड के अनुसार गति के सम्पादन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

B. LENIN & V.T. VIJAYAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Editors: **B. LENIN & V.T. VIJAYAN**

Citation

The Award for the Best Editing in a Non-Feature Film of 1995 is given to **B. LENIN & V.T. VIJAYAN,** for rhythmic pace in relation to the appropriate mood of both the films in **KUTRAVALI** and **OODAHA.**

बी. लेनिन एक पेशेवर फिल्म संपादक तथा निर्देशक है। उन्हें अन्य पुरस्कारों के अलावा 1988 में **नॉक-आऊट** के लिए निर्देशक के प्रथम गैर कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस फिल्म को कई पुरस्कार प्राप्त हुए तथा इसे 1993 के अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह के भारतीय पैनोरमा में दर्शाया गया। उन्हें 1995 में **कादलन** के लिए सर्वोत्तम संपादन का राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया। लेनिन को राज्य स्तर पर कई पुरस्कार प्राप्त हैं तथा उन्होंने कई धारावाहिकों का भी निर्देशन किया है – मुप्पाथुकोडी मुकंगल, एन्डारो माहानामावालु, सोल्लाडी सिवाशक्ती, चीना विज़यम, आदि।
कुट्रावली को 1996 के अंतरराष्ट्रीय समारोह के भारतीय पैनोरमा में दर्शाया गया था।

B. Lenin is professionally a film editor and director. He has received a number of awards since 1988 which includes the National Award for the Best First Non-Feature Film of a Director for **Knock-out**. The film was screened in the Indian Panorama of International Film Festival of India (1993) and has won numerous other awards. He received the National Award for Best Editing for **Kaadlan** (1995). Lenin has also won various state awards and has successfully directed many serials as well — Muppathukodi Mukangal, Endaro Mahanabhavalu, Solladi Sivasakthi, China Vizhayam, etc.
Kutravali was screened in the Indian Panorama of International Film Festival of India, 1996.

वी.टी. विजयन ने तमिल, मलयालम, तेलगु तथा कन्नड़ भाषाओं में बी. लेनिन के साथ 175 से अधिक फिल्मों का संपादन किया है। उन्हें **कादलन** के लिए 1995 का सर्वोत्तम संपादन का पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्हें कई अन्य पुरस्कार भी प्राप्त हुए।

V.T. Vijayan has edited over 175 films in Tamil, Malayalam, Telugu and Kannada with B. Lenin. He has won the National Award for Best Film Editing for **Kaadlan** in 1995. He has received many other awards as well.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

शुभा मुद्गल

संगीत निर्देशक: **शुभा मुद्गल** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर कथाचित्र का सर्वोत्तम फिल्म संगीत निर्देशन का 1995 का पुरस्कार **शुभा मुद्गल** को **अमृत बीज** में शास्त्रीय एवं लोक संगीत के अनूठे मिश्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

SHUBHA MUDGAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Music Director: **SHUBHA MUDGAL**

Citation

The Award for the Best Music Direction of a Non-Feature Film of 1995 is given to **SHUBHA MUDGAL,** for providing suitable support with a mix of classical and folk music in **AMRIT BEEJA.**

शुभा मुद्गल का जन्म इलाहाबाद के एक संगीतकार परिवार में हुआ। उन्होंने राम अश्रय झा से अपनी संगीत शिक्षा आरंभ की और विवाह के बाद उन्होंने पंडित विनय चंद्र मौदगल्य और पंडित कुमार गंधर्व से शिक्षण प्राप्त किया। उन्हें पंडित वसंत ठाकुर, पंडित जीतेन्द्र अभिषेकी से कलात्मक तकनीक तथा नैनी देवी से ठुमरी और दादरा सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके अनुष्ठानों में उन्हें प्रथम से ही आकर्शन मिलता है। उनके गले के सुर और गहराई में एक अनोखी गूंज और जानकार स्वभाव है जो उनके गीतों से अधिक बयान करते हैं। वे राग पर सीधे, दक्ष आघात से उजाले की चमक और अंधकार को प्रदर्शित करती हैं। उन्होंने ये प्रमाण किया है कि कला न केवल अभ्यास और निपुणता से बनती है परंतु जानकारी की भी आवश्कता होती है।

Shubha Mudgal was born in Allahabad in a musically dedicated family. She began her training in music under Ram Ashray Jha and then went on after her marriage to learn under Pandit Vinaya Chandra Mandgalya, Pandit Kumar Gandharva and also under Pandit Vasant Thakar, stylistic techniques under Pandit Jitendra Abhisheki and Thumri and Dadra under Naina Devi. Her performances attract notice from the very first breath she draws on stage. Her voice has range, depth, striking resonance and a knowing quality that say more than she sings. She treats a raga in sure, deft strokes, glowing with light and shade and shows that the vista of a performance is not only practice and skill but also of awareness.

विशेष उल्लेख

(1) **अरविन्द सिन्हा, अजित** फिल्म के निर्देशक को प्रवासी बाल मजदूरों के सजीव चित्रण के लिए विशेष उल्लेख किया गया है।

(2) **रश्मि फिल्म सोसायटी, इथिहासथिले खसक** फिल्म के निर्माता को एक साहित्यिक कृति के साहस पूर्ण व्याख्या के लिए विशेष उल्लेख किया गया है।

(3) **बिश्वदेब दासगुप्ता, माझी** फिल्म के निर्देशक/निर्माता को ईमानदारी के साथ मानव मूल्यों की सदा विजयी होने की प्रस्तुति के लिए विशेष उल्लेख किया गया है।

SPECIAL MENTION

1) **ARVIND SINHA,** director of the film **AJIT,** in acknowledgement of his sensitive portrayal of migrant child labour.

2) **RASHMI FILM SOCIETY,** producer of the film **ITHIHASATHILE KHASAK,** in acknowledgement of its brave attempt to interpret a literary work, cinematically.

3) **BISWADEB DASGUPTA,** director/producer of the film **MAJHI,** in acknowledgement of presenting with sincerity that human values ultimately triumph.

अरविन्द सिन्हा एक स्वं शिक्षित फिल्म निर्माता निर्देशक हैं। वे पिछले पांच वर्षों से फिल्में बना रहे हैं। उनकी प्रथम गैर कथाचित्र **द छऊ डांस आफ सेराइकेल्ला** को अत्यंत सराहा गया। इस फिल्म को 1990 में लेइपज़िग अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में दर्शाया गया। उनकी द्वितीय फिल्म महान ध्रुपद गायक **उस्ताद नासिर अमिनुद्दीन डागर** पर बनी थी जिसके लिए उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

मधू जनार्दन मालाप्पुरम, केरला के रश्मि फिल्म संस्था के सचिव हैं। ये संस्था फिल्म संस्थाओं में सबसे सक्रीय है जिसे दक्षिण भारत के सर्वोत्तम फिल्म संस्था होने पर जॉन अब्राहम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। (ये पुरस्कार फेडरेशन आफ फिल्म सोसइटीस आफ इंडिया, केरला द्वारा स्थापित है)

अजीत उनकी तृतीय फिल्म हैं। वे कलकत्ता से कार्य करते हैं तथा अपनी फिल्मों का स्वयं निर्माण करते हैं। इस फिल्म को 1996 के बम्बई के अंतरराष्ट्रीय गैर कथाचित्र फिल्म समारोह में दर्शाया गया है।

बिश्वदेब दासगुप्ता ने कल्कत्ता विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक किया। उन्होंने प्रसिद्ध फिल्म निर्माता बुद्धादेब दासगुप्ता के साथ सहयोगी निर्देशक के रूप में कार्य किया – **दूरत्व** (1978), **गृहयुद्ध** (1982), **अंधी गलि** (1984), आदि। वे **फेरा** (1986), **बाघ बहादुर** (1988), **ताहादेर कथा** (1993) में सह निर्देशक थे। इन सभी फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए है। गैर कथाचित्रों में उन्होंने **रिदम आफ स्टील, सोना राजा, इंडिया और द मूव,** आदि फिल्में बनाईं। उन्होंने **हेरिटेज आफ स्किल** तथा **नंदन** के विषय पर भी 1985 में गैर कथाचित्र बनाया है।

Arvind Sinha is a self taught film-maker and has been making films for the past five years. His first documentary was on **The Chhau Dance of Seraikella.** It was invited to Leipzig international Film Festival in 1990. For his second film, on the great dhrupad singer, **Ustad Nasir Aminuddin Dagar,** he got the National Award. **Ajit** is Sinha's third film. He is based in Calcutta and produces his own films. This film was screened in the Bombay International Documentary Film Festival held this year.

Madhu Janardanan is the Secretary of Rasmi Film Society, Malappuram, Kerala. It is one of the most active film societies in India which has bagged John Abrahm award for the outstanding film society in South India (Award constituted by Federation of Film Societies of India, Kerala).

Biswadeb Dasgupta is a science graduate from Calcutta University and has worked as the Asstt. Director to the noted film maker Buddhadeb, Dasgupta - **Dooratwa** (1978), **Grihayuddha** (1982) **Andhi Gali** (1984) etc. He was also Associate Director for **Phera** (1986), **Bagh Bahadur** (1988), **Tahader Katha** (1993). All these films have won National awards. Among documentary films **Rhythm of steel, Sona-Raja, India on the move** etc. He has directed **Heritage of skill** and a documentary on **Nandan** in 1985.

पुरस्कार जो नहीं दिए गए

गैर-कथाचित्र निर्णायक मंडल ने

(1) सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फिल्म

(2) सर्वोत्तम गवेषण/साहसी फिल्म पुरस्कार नहीं दिए।

AWARDS NOT GIVEN

The Non-Feature Film Jury did not give awards for the

(1) Best Promotional Film and

(2) Best Exploration/Adventure Film

सिनेमा लेखन पुरस्कार

Awards for Writing on Cinema

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक पुरस्कार

मराठी सिनेमा: इन रेट्रोस्पेक्ट

लेखक: **संजीत नार्वेकर** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

प्रकाशक: **गोविंद स्वरूप, एम.डी., महाराष्ट्र फिल्म, स्टेज एण्ड कल्चर डेवेलमपेंट कार्पपोरेशन, लि.** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक का 1995 का पुरस्कार **संजीत नार्वेकर** की **मराठी सिनेमा: इन रेट्रोस्पेक्ट** को मराठी सिनेमा के मौन युग से अब तक के युग के इतिहास को पूर्ण अनुसंधान करके लिखने के लिए दिया गया है। इसे एक मूल्यवान संदर्भ ग्रंथ बनाने के लिए मूलपाठ के साथ छायाचित्र का उपयोग बड़े ही कल्पनात्मक और रोचक ढंग से किया गया है।

AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA

MARATHI CINEMA : IN RETROSPECT

Swarna Kamal and a cash prize of 15,000/- to the Author : **Sanjit Narwekar**

Swarna Kamal and a cash prize of 15,000/- to the Publisher : **Govind Swarup, M.D., Maharashtra Film, Stage and Culture Development Corporation, Ltd.**

Citation

The Award for the Best Book on Cinema of 1995 is given to **Marathi Cinema: In Retrospect** by **Sanjit Narwekar** for a thoroughly researched and well-written history of Marathi cinema from the silent era to the present. The text is combined with photographs in such a way as to make the book as visually pleasing as it is valuable as a reference book.

संजीत नारवेंकर बम्बई विश्वविद्यालय के स्टैटिस्टिक में स्नातक तथा अर्थ शास्त्र में स्नातकोत्तर हैं। उन्होंने एक वर्ष नेशनल इन्सटिट्यूट ऑफ बैंक मैनेजमेंट में तथा कुछ समय हिन्दुस्तान लीवर में कार्य किया। उसके पश्चात् उन्होंने पूरे समय के लिए फिल्म पत्रकारिता आरंभ कर दिया। उन्होंने 1970 से भारतीय सिनेमा पर 5000 से अधिक लेख लिखे हैं। उन्होंने फिल्म वर्ल्ड, स्टार एण्ड स्टाइल, स्क्रीन, आदि पत्रिकाओं में भी कार्य किया। उनकी लिखी या संपादित कुछ पुस्तक इस प्रकार हैं - **जेन्रेज़ आफ इंडियन सिनेमा** (1988), **इंडियन डाक्यूमेंटन्टरी इन द एइटिस** (1990), **फिल्मस् डिविजन एण्ड द इंडियन डाक्यूमेंटरी** (1992), **डाइरेक्टरी आफ इंडियन सिनेमा : इन रेट्रोस्पेक्ट** (1995), **द अराइवल आफ सिनेमा इन इंडिया** (1996)। उन्होंने रेडिओ तथा टेलीविज़न पर कई कार्यक्रम किए हैं तथा कई फिल्म संस्थाओं से संबंध रखते हैं। उन्होंने कई फिल्मों और टी.वी. सीरियल का सब-टाइटल किया है तथा उनका स्क्रिप्ट भी लिखा है। उन्होंने दो मराठी कथाचित्रों तथा कई गैर कथाचित्रों का निर्माण भी किया है।

गोविन्द स्वरूप महाराष्ट्र केडर के आई.ए.एस. आफिसर हैं तथा वे महाराष्ट्र के फिल्म, मंच तथा सांस्कृतिक विकास परिषद के प्रबन्ध निदेशक हैं। उनके इस पद के लम्बे समय में उन्होंने कला के उन्नति के प्रयास किए। उन्होंने कई प्रगतिशील कार्यक्रम आरंभ किए जिनसे लोगों की कला की ओर नज़रिए में कुछ सुधार हुआ।

Sanjit Narwekar took his Bacheor's degree in Statistics and his Master's degree in Economics from the University of Bombay. He worked for a year at the National Institute of Bank Management and later at Hindustan Lever. He then took up a full-time career in film journalism. He has written over 5000 articles on Indian Cinema since 1970. He has worked for Film World, Star & Style amd Screen magazines. Among the books that he has authored or edited are **Genres of Indian Cinema** (1988), **Indian Documentary in the Eighties** (1990), **Films Division and the Indian Film-makers & Films** (1994), **Marathi Cinema: In Retrospect** (1995), **The Arrival of Cinema in India** (1996). He has given innumerable programmes on Radio & Television and is associated with many a film society. He has also done subtitling for several films and TV serials and written their scripts as well. He has also produced two Marathi feature films and several documentaries.

Govind Swarup is an I.A.S. officer of the Maharashtra cadre and has been associated with the Maharashtra Film, Stage and Cultural Development Corporation as its Managing Director for a fairly long period during which he has striven for the betterment of the Arts. He has initiated several dynamic programmes which have brought about a fundamental change in the way the Arts have been viewed in the State.

सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक पुरस्कार

एम.सी. राजा नारायनन

समीक्षक: **एम.सी. राजा नारायनन** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक का 1995 का पुरस्कार **एम.सी. राजा नारायनन** को उनके विश्व सिनेमा तथा भारतीय निर्देशकों के कृतियों पर सुलिखित और आयोगात्मक अनुच्छेद लिखने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC

M.C. RAJA NARAYANAN

Swarna Kamal and a cash prize of 15,000/- to the Critic : **M.C. Raja Narayanan**

Citation

The Award for the Best Film Critic of 1995 is given to **M.C. Raja Narayanan** for his well-written and analytical articles on both World Cinema and the works of Indian directors. He writes with a rare fluency in Malayalam and in English offering perceptive insights in a direct and readable style.

एम.सी. राजा नारायनन मलयालम और अंग्रेजी के द्वी-भाषीय लेखक हैं। विभिन्न पत्रिकाओं में कहानी, सिनेमा, कला एवं साहित्य आदि विषयों पर उनके लेख प्रकाशित होते हैं।

उनका जन्म केरल के पोन्नई गांव में हुआ था तथा शिक्षा केरल और हैदराबाद में हुई। अल्प आयु में ही वे केरल से निकल गए और इन दिनों दिल्ली में रहते हैं। उन्होंने कई संस्थाओं में विभिन्न प्रकार के काम किए। उनकी प्रथम लघु कहानी साप्ताहिक मथ्रुभूमि में प्रकाशित हुई। वे कहानियां मलयालम में लिखते हैं पर पत्रकारिता अंग्रेजी में भी करते हैं। उनकी कुछ कहानियों का अंग्रेजी में रूपांतर भी हुआ है। उनके सिनेमा, कला, संगीत तथा साहित्य के लेख हिन्दुस्तान टाइम्स, द एशियन एज, द ट्रिब्यून, आदि में प्रकाशित होते हैं। उनकी चार पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं - **क्रायाविक्रयम** (लघु कथा संकलन), **निज़ाल निरंझा निलावु** (उपन्यास), **सिनेमा : यथार्थयावुल स्वप्नगुलम, देवदासी - थीरूविल निन्नु** (लघु कथा संकलन)। उनकी नवीनतम उपन्यास बम्बई के विशालाकेरलम् पत्रिका में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हो रही है।

M.C. Raja Narayanan is a bilingual writer. He writes in Malayalam and English. He has been contributing regularly to leading magazines and dailies in fields of fiction, cinema, art, literature, etc.

He was born in Ponnai in Kerala and was educated in Kerala and later in Hyderabad. He left Kerala at an early age and is presently based in Delhi. He has worked with different organisations in diverse fields gaining wide experience. His first short story was published in Mathrubhumi weekly. His creative writing is confined to Malayalam while his journalistic ventures extend to English as well. Some of his short stories are translated into English. His articles on cinema, art, music and literature have been published in The Hindustan Times, The Asian Age, The Tribune, etc. He has four published books — **Krayavikrayam** (short story collection), **Nizhal Niranjha Nilavu** (Novel), **Cinema: Yadharthyavum Swapnamgalum, Devadasitheruvil Ninnu** (short story collection). His new novel is being serialised in Visalakeralam magazine from Bombay.

विशेष उल्लेख

निर्णायक मण्डल ने दो पुस्तकों का समान विशेष उल्लेख किया है: **के.एन.टी. शास्त्री** के **अलन्ती चलनचित्रम्** को पहले 25 वर्षों में बने सार्थक फिल्मों के कालक्रमक और मूल्यवान विवरण के लिए तथा **अशोक राणे** को **सिनेमाची चित्रकथा** में मराठी पाठकों के लिए विश्व सिनेमा का एक बोधशील परिचय लिखने के लिए दिया गया है।

SPECIAL MENTION

The Jury awards Special Mention equally to two books : **Alanti Chalanchitram** by **K.N.T. Sastry** for his chronological and valuable accounts of the significant films produced in the first 25 years of Telugu Cinema and **Cinemachi Chittarkatha** by **Ashok Rane** for his comprehensive introduction to World Cinema for Marathi readers.

के.एन.टी. शास्त्री कई अंग्रेजी पत्रिकाओं में स्तंभ लेखक हैं और उन्होंने नेशनल फिल्म आर्काइव के साथ कई मोनोग्राफ प्रस्तुत किए। आशीष राध्याध्यक्ष तथा पौल विलेमान द्वारा संपादित, उन्होंने तेलगु में एक संकलन प्रस्तुत किया है - **एनसाइक्लोपीडिआ ऑन इंडियन सिनेमा**। उन्होंने पुरस्कृत फिल्में **दासी** का स्क्रिप्ट अनुसंधान किया तथा वे **मा ओरू** के सह-स्क्रिप्ट लेखक हैं। तेलगु पत्रिका, आंध्रा ज्योति में प्रकाशित उनकी अति प्रसिद्ध कथा **चलन चित्रम** को संकलित कर **अलन्ती चलनचित्रम** के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

अलन्ती चलनचित्रम (तेलगु) के लिए विशेष उल्लेख का राष्ट्रीय पुरस्कार उनका तीसरा राष्ट्रीय पुरस्कार है। इससे पूर्व उन्हें 37वें राष्ट्रीय पुरस्कार में सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक का पुरस्कार तथा सर्वोत्तम पुस्तक का प्रकाशक पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था।

K.N.T. Sastry is a columinst in magazines and has worked with the National Film Archives also. He has compiled the Telugu Section of the recent publication **Encyclopaedia on Indian Cinema** edited by Ashish Rajyadhyaksha and Paul Wilemann. He was also associated with award-winning film **Dasi** as its script researcher, and as co-script writer for yet another award wining documentary, **Ma Oru.** His feature **Chalan Chitram** in Andhra Jyoti, a Telugu daily, became immensely popular. These essays have now been compiled into the present work **Alanati Chalanachitram.** It is a third national honour that K.N.T. Sastry is receiving through this Special Mention for his work **Alannti Chalanachitram** (Telugu). He was earlier awarded Best Film Critic Award in 37th National Film Festival, and received National Award for Best Book on Cinema, as its publisher in the 41st National Film Festival.

अशोक राणे एक फिल्म समीक्षक एवं शोधकर्त्ता हैं। वे पिछले 15 वर्षों से फिल्म समीक्षा कर रहे हैं। वे सकल और महानगर पत्रिकाओं से जुड़े हुए हैं। उन्होंने विश्व सिनेमा पर लिखा तथा उसके इतिहास और समीक्षा का पाठ भी पढ़ाया। उन्होंने 1984 से अभी अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग लिया तथा 1996 के बर्लिन अंतरराष्ट्रीय समारोह में भी योगदान किया। उन्होंने 8 एकांकी नाटक तथा एक पूरा नाटक लिखा, मराठी सीरियल की पटकथा और हिन्दी सीरियल की कहानी लिखी। उनकी दो प्रकाशित पुस्तकें हैं **सिनेमाची चित्रकथा** और **चित्र मनताल**।

Ashok Rane is a film critic, researcher and has been reviewing films for the last 15 years. He is attached to Sakal and Mahanagar papers. He has been writing on World Cinema and teaching its history, appreciation and film criticism. He has attended International Film Festivals of India since 1984. He visited 46th Berlin International Film Festival in 1996. He has written 8 one act play and one full length plays, screenplay for Marathi TV serials and two Hindi TV serials. **Cinemachi Chittarkatha** and **Chitra Manatala** are his published books.

कथासार : Synopses
कथाचित्र Feature Films

अंथी मंथाराई

तमिल/रंगीन/116 मिनट

निर्माता: मेगा मूवीज **निर्देशक/पटकथा लेखक:** भारतीराजा **मुख्य अभिनेता:** विजय कुमार **मुख्य अभिनेत्री:** जया सुधा **सह-अभिनेता:** सुधांगन **सह-अभिनेत्री:** संग्वी **कैमरामैन:** जी. धनबालन **ध्वनि-आलेखक:** एच. श्रीधर/एस. शिवकुमार **संपादक:** के. पालानिवेलु **कला निर्देशक:** ए. पोनराज **वेभूषाकार:** जी. कुमार **संगीत निर्देशक:** ए.आर. रहमान **गीतकार:** वैरामुथु **प्रभाव सृजक:** धामु कुमार

अंथी मंथाराई एक वृद्ध स्वतंत्रता सेनानी कादर कोडी कन्डासामी की कहानी है। कन्डासामी के अपने समय के आदर्शवाद के साथ इस समय के प्रचलित भौतिकवाद की लड़ाई ही ये कहानी है। गांधीवादी होने के नाते, वे स्वतंत्रता सेनानियों को मिलने वाला भत्ता लेने से इन्कार कर देते हैं। उनके भतीजे की पत्नी, जिनके साथ वे रहते थे इस बात पर नाराज हो जाती हैं। कन्डासामी की मुलाकात थंगम्मा से हो जाती है जिनसे 40 साल पूर्व उनकी शादी होने वाली थी।

जब उन्हें थंगम्मा के किसी और को विवाह न करने के निश्चय का पता चलता तब वे विवाह करने की तैयारी करते हैं। पर किस्मत उनका साथ नहीं देती और वे पुन: बिछड़ जाते हैं। कन्डासामी भ्रष्ट पुलिस अफसरों के हाथों मारा जाता है। थंगम्मा को उनका शरीर गणतंत्र दिवस पर मिलता है और वह उसे राष्ट्रीय तिरंगे से ढक देती है। भारत के सच्चे सपूत होने के नाते ये उनका अधिकार है।

ANTHI MANTHARAI

Tamil/Colour/116 min.

Producer : Megaa Movies **Director/ Screenplay Writer :** Bharathirajaa **Leading Actor:** Vijaya Kumar **Leading Actress:** Jaya Sudha **Supporting Actor:** Sudangan **Supporting Actress:** Sangavi **Cameraman:** G. Dhanabalan **Audiographer:** H. Sridhar/S. Sivakmar **Editor:** K. Palanivelu **Art Director:** A. Ponraj **Costume Designer:** G. Kumar **Music Director:** A.R. Rahman **Lyricist:** Vairamuthu **Special Effects Creator:** Dhamu Kumar

Anthi Mantharai is the story of an old freedom fight Kadar Kodi Kandasamy in the twilight of his life in the contrasting backdrop of his unadulterated idealism of yesteryears and the reckless materialism of the present.

Being a true Gandhian follower, he refuses to apply for freedom fighter's pernsion. This angers his newphew's wife with whom he was staying. He meets his beloved Thangamma wife, after 40 years. He had had to leave her behind to escape the Britishers.

When Kandasamy finds out that she is still unmarried he decides to marry her, but fate decides otherwise. They are again seperated. Kandasamy is killed by corrupt police officials. Thangamma finally traces his body on the Republic Day and covers his body with the National Flag, after announcing the worthiness of the son of the soil.

BANAGARWADI

Marathi/Colour/130 min.

Producer: NFDC/Doordarshan **Director/Costume Designer:** Amol Palkar **Screenplay Writer:** Vynakatesh Madgulkar **Leading Actor:** Chandrakant Kulkarni **Leading Actress:** Adhishri Atre **Supporting Actor:** Chandrakant Mandre/Heeralal Jain **Supporting Actress:** Sushma Deshpande **Cameraman:** Debu Deodhar **Audiographer:** Vijay Phope **Editor:** Waman Bhosale **Art Director:** Guruji Brothers **Music Director:** Vanraj Bhatia.

The story is set in the 1940s in Aundh, a small princely state in Maharashtra. It recounts the experience of a young primary school teacher on his very first assignment to Banagarwadi, a village of shepherds.

The teacher arrives with his lofty ideals but in this remote village, the teacher is an errand boy, the judge, the postman and the marriage councillor roled into one. The style of upbringing of the shepherds is absolutely new to this city bred educated middle class teacher. But he learns quickly and warm relationship develops.

When drought hits the village, the teacher feels helpless and suffers while the shepherds take it in their stride. To save their children and their sheep, the shepherds leave even the security of their ancestral homes and wander off to destinations unknown. The young teacher is left behind as an outsider.

बंगड़वाड़ी

मराठी/रंगीन/130 मिनट

निर्माता: एन.एफ.डी.सी./दूरदर्शन **निर्देशक/वेशभूषाकार:** अमोल पालेकर **पटकथा लेखक:** व्यंकटेष मादगुल्कर **मुख्य अभिनेता:** चंद्रकांत कुल्कर्नी **मुख्य अभिनेत्री:** अधिश्री अत्रे **सह अभिनेता:** चंद्रकांत मांद्रे/हीरालाल जैन **सह-अभिनेत्री:** सुश्मा देशपाण्डे **कैमरामैन:** देबू देवधर **ध्वनि-आलेखक:** विजय फोपे **संपादक:** वमन भोंसले **कला निर्देशक:** गुरूजी ब्रदर्स **संगीत निर्देशक:** वनराज भाटिया

ये कहानी 1940 के महाराष्ट्र के एक राज्य औंध में स्थित है। इसमें एक युवा प्राथमिक शिक्षक की अभिज्ञता की कहानी है जिसे अपनी नौकरी में सबसे पहले एक चरवाहों की बस्ती बंगरवाड़ी में भेजा जाता है।

वह शिक्षक अपने ऊँचे आदर्शों को लेकर वहाँ पहुँचता है पर उस अंजान गाँव में उसे संदेशवाहक, न्यायकर्त्ता, डाकिया तथा विवाह सलाहकार का कार्य करना पड़ता है। चरवाहों की जीवन धारा इस शहर में पले-बड़े युवक को अत्यंत विचित्र लगती है पर जल्द ही उनके बीच एक गहरा संबंध बन जाता है।

गाँव में सूखा पड़ने पर वह युवक अपने आप को असहाय महसूस करता है पर चरवाहों को इन सब की आदत है। अपने बच्चों और भेड़ बचाने के लिए वे अपने पुश्तानी मकान छोड़कर दूसरे जगह की खोज के लिए निकल पड़ते हैं। केवल वह शिक्षक पीछे रह जाता है।

BANDIT QUEEN

Hindi/Colour/119 min

Producer : Sundeep Singh Bedi **Director :** Shekhar Kapur **Screenplay Writer :** Mala Sen **Leading Actor :** Nirmal Pandey **Leading Actress:** Seema Biswas **Suporting Actor :** Govind Namdeo **Child Artist :** Sunita Bhatt **Cameraman :** Ashok Mehta **Audiographer :** Robert Taylor **Editor :** Renu Saluja **Art Director :** Eve Mavrakis **Costume Designer:** Dolly Ahluwalia **Music Director/Male Playback Singer :** Ustad Nursat Fateh Ali Khan.

This is a true story of an Indian girl who is kidnapped in her teens by bandits, becomes the leader of the bandit gang, is deceived and defeated by other high-caste bandits who gang-rape her for three days. She gets away, reforms a gang and descends on the village where she is raped to wreck a horrible vengeance. Her gang kills twenty males in the village.

The Indian Government sends an army of police in pursuit. She is subdued and decides to surrender. In 1983 she ceremoniously gives up her weapons and goes to jail in Gwalior.

The film ends with the surrender and the acclaim of the crowd that has gathered to catch a glimpse of this late twentieth century Indian village Robin Hood.

बैंडिट क्वीन

हिन्दी/रंगीन/119 मिनट

निर्माता: संदीप सिंह बेदी **निर्देशक:** शेखर कपूर **पटकथा लेखक:** माला सेन **मुख्य अभिनेता:** निर्मल पाण्डे **मुख्य अभिनेत्री:** सीमा बिस्वास **सह-अभिनेता :** गोविंद नामदेओ **बाल कलाकार :** सुनीता भट्ट **कैमरामैन :** अशोक मेहता **ध्वनि-आलेखक :** रॉबर्ट टेलर **संपादक :** रेनू सलूजा **कला निर्देशक :** ईव मैवरिकस **वेशभूषाकार:** डॉली आहलूवालिया **संगीत निर्देशक/पार्श्व गायक :** उस्ताद नुस्रत फतेह अलि खान

ये एक भारतीय लड़की की सच्ची कहानी है जिसे बचपन में डाकूओं ने आगवाह कर लिया था। वह बड़ी होकर डाकूओं की सरदार बनी पर उसे ऊँची जाति के डाकू अग्वाह कर उसे तीन दिन तक बलात्कार करते हैं। फूलन भागकर अपने दल का पुनर्गठन करती है और अपने बलात्कारियों से बदला लेती है। उसके दल के डाकू उस गाँव के 20 आदमियों की हत्या कर देते हैं।

भारतीय सरकार उसके पीछे पुलिस का दल भेजती है जिनके पास फूलन आत्मसमर्पण करने का तय करती है। फूलन देवी ने 1983 में आत्मसमर्पण किया और उसे ग्वालियर जेल में भेज दिया गया।

ये फिल्म फूलन के आत्मसमर्पण पर खत्म हो जाती है। लोग इस बीसवीं सदी के ग्रामीण भारतीय रोबिन हुड का स्वागत करते हैं।

भैरवी

हिन्दी/रंगीन/145 मिनट

निर्माता: प्लस फिल्मस् **निर्देशक/पटकथा लेखक/संपादक/नृत्य संयोजक:** अरूनाराजे पाटिल **मुख्य अभिनेत्री:** अश्विनी भावे **कैमरामैन:** बरून मुखर्जी **ध्वनि आलेखक:** रघुवीर दाते **गीतकार:** अमित खन्ना **पार्श्व गायक:** उदित नारायन **पार्श्व गायिका:** कविता कृष्णामूर्ती

भैवरी एक जवान अंधी लड़की और उसके जीवन के दुखों की कहानी है। उसके पिता पं. गोविन्द शास्त्री एक शास्त्रीय गायक थे जो मंदिर में गाते और संगीत की शिक्षा प्रदान करके अपने परिवार का पालन करते थे। उसकी माँ अपनी अंधी बेटी रागिनी के लिए परेशान थी। वह उसका विवाह करवाना चाहती थी पर रागिनी अपनी सहेलिओं और संगीत में खुश थी।

रागिनी का विवाह न हो पाने से उसकी माँ की मृत्यु हो जाती है। उसके पिता की भी एक दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है। रागिनी की मुलाकात राजन से होती है और उनकी दोस्ती विवाह में सम्पन्न जाती है। रागिनी अपना सर्वस्व राजन को सौप देती है यहाँ तक कि बैंक का कार्य भी उसके सुपुर्द कर देती है।

राजन जल्द ही रागिनी के सब रूपये एवं जेवरात लेकर भाग जाता है। गिरफ्तार होने पर वह रागिनी से मदद मांगता है पर वह राजन से अपना रिश्ता सदा के लिए तोड़कर अपनी बिन्दी-कुमकुम मिटा कर मंगलसूत्र को नदी में विसर्जित कर देती है। उसके पश्चात् अपनी पूरी भावना और एकाग्रता से भैवरी राग आलापने लगती है जो उसने पहले कभी नहीं गाया था।

BHAIRAVI

Hindi/Colour/145 min.

Producer : Plus Films **Director/Screenplay Writer/Editor/Choreographer:** Arunaraje Patil **Leading Actress:** Ashwini Bhave **Cameraman :** Barun Mukherjee **Audiographer:** Raghuvir Date **Lyricist :** Amit Khanna **Male Playback Singer :** Udit Narayan **Female Playback Singer :** Kavita Krishnamurty

Bhairavi is the story of a young blind girl, Ragini and her misfortunes in life. Her father Pt. Govind Shastry is a classical singer who makes a living by singing in a temple and conducting music classes. Her mother worries about Ragini and wants a secure marital life for her but Ragini is content with her friends and music.

Attempts to get Ragini married backfire and the shock takes her mother's life. Her father also expires in an accident. Ragini meets Rajan then and their friendship extends to marriage. Raginf gives herself totally to Rajan and even includes his name in bank accounts, so that he can handle everything.

Ragini's bliss is only for a year after which Rajan runs away taking all her money and jewellery. When he is arrested he calls her to help him but she refuses and breaks her relation with him. She wipes her bindi, kumkum and immerses her mangalsutra in the river and sings 'Bhairavi' Raag, which she has never sung before, with all her strength and emotions.

बॉम्बे

तमिल/रंगीन/135 मिनट

निर्माता: मणिरत्नम/एस. श्रीराम **निर्देशक/पटकथा लेखक:** मणिरत्नम **मुख्य अभिनेता:** अर्विंद स्वामी **मुख्य अभिनेत्री:** मनीषा कोइराला **सह अभिनेता:** नासेर/किट्टी **बाल कलाकार:** हृदय/हर्ष **कैमरामैन:** राजीव मेनन **ध्वनि आलेखक:** एच. श्रीधर/एस. शिवकुमार/वी. श्रीनिवासमूर्ती/लक्ष्मी नारायनन **संपादक:** सुरेश उर्स **कला निर्देशक:** थोट्टा थरानी **वेशभूषाकार:** नलिनी श्रीराम **संगीत निर्देशक:** ए.आर. रहमान **गीतकार:** वैरामुथु **पार्श्व गयक:** हरिहरन **पार्श्व गायिका:** चित्रा **नृत्य संयोजक:** राजु सुंदरम **प्रभाव सृजक:** लक्ष्मी नारायनन/अरूल पातिल

शेखर बम्बई का एक संवाददाता अपने गाँव में बशीर एक ईंट बनाने वाले की बेटी शैला बानु से प्यार कर बैठता है। विवाह पर आपत्ति होने के कारण वे घर से भाग कर विवाह कर बम्बई में बस जाते हैं। उनके जड़वा बेटों का जन्म होता है। 6 दिसम्बर, 1992 में बाबरी मस्जिद के तोड़े जाने पर बम्बई से साम्प्रदायिक दंगों में उनके बेटे आग में फंस जाते हैं। शैला और शेखर के पिता में दोस्ती हो जाती है। मगर दंगों में उन सब के जानों को खतरा पैदा हो जाता है। बम्बई के लोग दंगों के खिलाफ खड़े होकर अपना शहर बचा लेते हैं। शेखर का परिवार फिर मिल जाता है और लोग मैत्री की एक मानव कड़ी बनाते हैं।

BOMBAY

Tamil/Colour/135 min.

Producer: Mani Ratnam/S. Sri Ram **Director/Screenplay Writer:** Mani Ratnam **Leading Actor:** Arvind Swamy **Leading Actress:** Manisha Koirala **Supporting Actor:** Nasser/Kitty **Child Artist** : Hriday/Harsha **Cameraman:** Rajiv Menon **Audiographers:** H. Sridhar/S. Sivakumar/V. Srinivasamurthy/Lakshmi Narayanan **Editor:** Suresh Urs **Art Director:** Thotta Tharani **Costume Designer:** Nalini Sriram **Music Director:** A.R. Rahman **Lyricist:** Vairamuthu **Male Playback Singer:** Hariharan **Female Playback Singer:** Chitra **Choreographer:** Raju Sundaram **Special Effects Creator:** Lakshmi Narayanan/Arun Patil

Shekhar, a journalist in Bombay, visits his native village and falls in love with Shaila Bhanu, the daughter of Basheer, a brick maker by profession. Due to family discord, they run away and get married and settle down to lead a happy life in Bombay with their twin sons.

On 6th Dec 1992, tearing down of Babri Masjid upsets their life. Riots break out and the twins are caught in a fire to be rescued in the nick of the moment. Subsequently Narayanan and Basheer reconcile. But violence again disrupts the city and Shekhar and Bhanu escape attempts on their lives. The twins are seperated and lost in the crowds. They survive and finally the citizens of Bombay stand up against the communal forces. The family is reunited while people of Bombay form a human chain of harmony.

दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे

हिन्दी/रंगीन/200 मिनट

निर्माता: यश चोपड़ा **निर्देशक/पटकथा लेखक:** आदित्य चोपड़ा **मुख्य अभिनेता:** शाहरूख खान **मुख्य अभिनेत्री:** काजोल **सह अभिनेता:** अमृश पूरी/अनुपम खेर **सह अभिनेत्री:** फरीदा जलाल **बाल कलाकार:** पूजा रूपारेल **कैमरामैन:** मनमोहन सिंह **ध्वनि आलेखक:** अनुज माथुर **संपादक:** केशव नाइडु **कला निर्देशक:** शर्मिश्ठा राय **वेशभूषाकार:** मनीष मल्होत्रा/करण जोहर **कला निर्देशक:** जतिन-ललित **गीतकार:** आनंद बक्शी **पार्श्व गायक:** कुमार शानू/ उदित नारायन **पार्श्व गायिका:** लता मंगेश्कर/ आशा भोंसले **नृत्य संयोजक:** सरोज खान/फराह खान

चौधरी बलदेव सिंह लंदन में बसे एक सच्चे भारतीय हैं जिनका सपना एक दिन पंजाब लौटने का है। बड़ी बेटी, सिमरन एक आदर्श पति का सपना देखती है पर जल्दी ही उसे पता चलता है कि उसका विवाह उसके पिता के दोस्त के बेटे के साथ तय है।

राज एक अमीर बाप का मौज मस्ती करने वाला बेटा है जिसका अपने पिता के साथ बहुत प्यारा संबंध है। राज और सिमरन की मुलाकात यूरेल के सफर में होती है। सफर के अंत में वे एक दूसरे से प्यार करने लगते है। चौधरी को इस बात का पता चलते ही वह रातोंरात पंजाब रवाना हो जाता है और राज का पिता उसे सिमरन को लेकर वापस आने का आदेश देता है।

राज पंजाब पहुँचकर सिमरन के परिवार को मनाकर अपनी दुल्हन को लाने की तैयारी करता है।

DILWALE DULHANIA LE JAYENGE

Hindi/Colour/200 min

Producer: Yash Chopra **Director/ Screenplay Writer:** Aditya Chopra **Leading Actor:** Shah Rukh Khan **Leading Actress:** Kajol **Supporting Actor:** Amrish Puri/Anupam Kher **Supporting Actress:** Farida Jalal **Child Artist:** Pooja Ruparel **Cameraman:** Manmohan Singh **Audiographer:** Anuj Mathur **Editor:** Keshav Naidu **Art Director:** Sharmishta Roy **Costume Designer:** Manish Malhotra/Karan Johar **Music Director:** Jatin-Lalit **Lyricist:** Anand Bakshi **Male Playback Singer:** Kumar Sanu/Udit Narayan **Female Playback Singer:** Lata Mangeshkar/Asha Bhonsle **Choreographer:** Saroj Khan/Farah Khan

Chaudhary Baldev Singh, a London based immigrant has brought up his two daughters like true Indians inspite of living in a foreign land. He longs to return to his roots, Punjab, one day. Simran, his elder daughter, dreams of his perfect man but realises its futility when her marriage is arranged to her father's best friend's son. Raj is the regular spoilt brat of another immigrant and enjoys a beautiful relation with his father. Raj and Simran meet on the Eurail and go through an entire gamut of emotions. They realise their love for each-other when they part at the end of the trip. While Chaudhary leaves for Punjab overnight on hearing this, Raj's father orders him to go and get her back. Raj turns up in Punjab and wooes Simran's family to let him take home his **Dulhan**.

डोघी

मराठी/रंगीन/160 मिनट

निर्माता: एन.एफ.डी.सी./दूरदर्शन **निर्देशक/संपादक:** सुमित्रा भावे/सुनील सुखांकर **पटकथा लेखक/कला निर्देशक/वेशभूषाकार:** सुमित्रा भावे **मुख्य अभिनेता:** सूर्यकांत **मुख्य अभिनेत्री:** रेनुका दफ्तरदार/सोनाली कुल्कर्नी **सह अभिनेता:** सदाशिव आमरपुरकर **सह-अभिनेत्री:** उत्तरा बाओकर **कैमरामैन:** चारूदत्ता दुखांडे **ध्वनि आलेखक:** अस्मत गुल्ला **संगीत निर्देशक:** आनंद मोदक **गीतकार:** एन.जी. माहानोर **पार्श्व गायक:** त्यागराज खांडिलकर/सचिन रास्ते/केशव बागड़े/मुकुन्द फनसाल्कर **पार्श्व गायिका:** माधुरी पुरन्दरे/शिल्पा दातार/अंजलि मराठे/उत्तरा बाओकर/पार्थ उम्रानी

गौरी और कृष्णा गरीब पर मेहंती माँ-बाप के बच्चे थे। वे अपने लिए एक अच्छे भविष्य की कल्पना करते थे। गौरी के विवाह के दिन उसके पति की मृत्यु हो जाती है। समाज में बदनामी और पिता की अचानक बीमारी की वजह से गरीबी गौरी को शहर अपने मामा के पास पहुँचा देती है। शहर में पैसे कमाकर वो अपनी माँ को भेजने लगी जिससे उनकी हालत कुछ सुधर गई। पर उसकी माँ ये न मान पाई कि गौरी ये पैसे वेश्यावृत्ति से रोजगार करती है। कृष्णा के विवाह पर जब गौरी गाँव आई तो उसका तिरस्कार हुआ। पर कृष्णा उसकी मदद करती है। जब एक युवक गौरी से विवाह की इच्छा प्रकाश करता है गौरी पहली बार टूट पड़ती है और रोने लगती है।

DOGHI

Marathi/Colour/160 min

Producer: NFDC/Doordarshan **Director/ Editor:** Sumitra Bhave/Sunil Suktankar **Screenplay Writer/Art Director/Costume Designer:** Sumitra Bhave **Leading Actor:** Sooryakant **Leading Actress:** Renuka Daftardar/Sonali Kulkarni **Supporting Actor:** Sadashiv Amrapurkar **Supporting Actress:** Uttra Baokar **Cameraman:** Charudatta Dukhande **Audiographer:** Asmat Gulla **Music Director:** Anand Modak **Lyricist:** N.G. Mahanor **Male Playback Singer:** Tyagaraj Khadilkar/Sachin Raste/Keshav Bagde/Mukund Fansalkar **Female Playback Singer:** Madhuri Purandare/Shilpa Datar/Anjali Marathe/Uttra Baokar/Parth Umrani.

Gauri and Krishna are daughters of poor hard working parents but they dream of a bright future. Gauri's husband is killed on the wedding day, thus stigmatising her for life. Crushed by social stigma and financial disaster that follows the shocked father's stroke, her mother persuades her city-based brother to take Gauri to the city. Gauri starts earning and sends some money home which improves the family's living conditions. Though her mother accepts the money. She cannot accept that Gauri is a prostitute now. So, when Gauri returns for krishna's wedding she is ostracised. Only Krishna tries to help her. When a boy does show his willingness to mary Gauri she breaks down for the first time in her life.

हैलो

हिन्दी/रंगीन/100 मिनट

निर्माता: एन'सीप **निर्देशक/पटकथा लेखक/कैमरामैन:** संतोष सिवान **बाल कलाकार:** बेनाफ दादाचानजी **ध्वनि-आलेखक:** दीपन चटर्जी **संपादक:** कनिका मैयर **संगीत निर्देशक:** रंजीत बरोत

ये कहानी है सात वर्षीय साशा की, जो अपने खोए हुए कुत्ते हेलो की खोज में बम्बई के भयानक सड़कों पर घूमती है। दर्शकों को ये कहानी एक ईसाई संघ की नन, एक पत्रिका के संवाददाता तथा एक विडिओ कैमरा लिया हुआ डोनाह्यू बच्चे की जबानी पता चलती हैं क्योंकि ये साशा और उसके चार वर्षीय दोस्त अनिल का पीछा करते हैं। ये दोनों एक कुत्ता पकड़ने वाले पागल के घर से एक पत्रिका के विक्षिप्त संपादक के घर पहुँचते हैं। वहाँ से उनकी मुलाकात एक स्मग्गलर से होती हैं जो कुत्ते द्वारा तस्करी करता है। उसके पश्चात् वे एक मनस्तापी पुलिस कमिशनर और सड़क पर रहने वाले एक दल बच्चों से भी इस दौरान मिलते हैं।

HALO

Hindi/Colour/100 min

Producer: N'CYP **Director/Screenplay Writer/Cameraman:** Santosh Sivan **Child Artist:** Benaf Dadachanji **Audiographer:** Deepan Chatterji **Editor:** Kanika Myer **Music Director:** Ranjit Barot

The story is a zany quest of seven year old Sasha for her lost puppy Halo, through the terrifying streets of Bombay. We are guided through the story by an orthodox nun, a newspaper reporter and a 'Donahue' kid with a video camera, who follow Sasha and her four year old friend Anil from the home of a paranoid dog-catcher to the neurotic editor of a newspaper , a smuggler who uses dogs for smuggling, a psychotic Police Commissioner and a colourful gang of street urchins.

इतिहास

असमिया/रंगीन/101 मिनट

निर्माता: लीना बोरा **निर्देशक/पटकथा लेखक:** डा. भबेन्द्र नाथ साइकिया **मुख्य अभिनेता:** तपन दास/बीजू फुकन **मुख्य अभिनेत्री:** नुकुमोनी बरूआ **सह-अभिनेता:** बीजू फुकान **सह अभिनेत्री:** मृदुला बरूआ **कैमरामैन:** कमल नायक **ध्वनि आलखेक:** अनूप बन्द्योपाध्याय/ज्योती चट्टोपाध्याय/एच.पी. भट्टाचार्य **संपादक:** निकुंज भट्टाचार्य **कला निर्देशक:** नूरूद्दीन अहमद **वेशभूषाकार:** प्रीती साइकिया **संगीत निर्देशक:** इंद्रेश्वर शर्मा

ये कहानी शहर के बाहरी भाग में रहने वाली एक गरीब परिवार की कहानी है। विधवा सरला और उसके दो बेटों और दो बेटियों को मकान का बढ़ावा देने वाला व्यक्ति एक अच्छे फ्लैट का प्रलोभन देता है। लालच में पड़कर वे अपनी जमीन उस लालची व्यवसायिक के सुपुर्द कर देते हैं।

दोनों बेटे, नेपाल और भोला, उस आदमी के प्रलोभन के जाल में फँस जाते हैं। मूल्यों की एक लड़ाई छिड़ जाती है। इस बिखरते परिवार को बचाने के लिए लखिमी, एक बेटी, फ्लैटों में घूमकर काम करने लगती है। पैसों की खोज में जीवन का लक्ष्य उससे दूर चला जाता है। यहाँ तक की वह अपने प्रेमिक मधु से भी दूर हो जाती है। वह एक खतरनाक जाल में फँस जाती है और एक दिन उसका मृत देह कुँए से पाया जाता है। कुंए की मिट्टी के साथ करीबी समय के इतिहास का बहुत समान भी मिलता है।

ITIHAAS

Assamese/Colour/101 min

Producer: Leena Bora **Director/Screenplay Writer:** Dr. Bhabendra Nath Saikia **Leading Actor:** Tapan Das/Biju Phukan **Leading Actress:** Nukumoni Barua **Supporting Actor:** Biju Phukan **Supporting Actress:** Mridula Barua **Cameraman:** Kamal Nayak **Audiographer:** Anup Bandopadhyay/Jyoti Chattopadhyay/H.P. Bhattacharyya **Editor:** Nikunja Bhattacharyya **Art Director:** Nuruddin Ahmed **Costume Designer:** Preeti Saikia **Music Director:** Indreswar Sarma

The film explores the travails of a downtrodden class family living in the outskirts of the city. Sarla, a widow and her two sons and two danghters are tempted by a greedy promoter with a modern flat's hope. The family give their land to him but the promoter has other plans. The sons, Nepal and Bhola, fall prey to the promoter's greed. A clash of values flares up. In the process of disintegration, Lakhimi, the daughter gives her services from flat to flat in search of a good living. In the process she looses sight of her love, Madhu, a saviour of the poor family. Lakhimi gets trapped in the vicious cycle and one day her body is discovered from the bottom of a well. Mingled with the mud of the well are materials of an Itihaas of recent times.

कालापानी

मलयालम/रंगीन/210 मिनट

निर्माता: वी. मोहनलाल/आर. मोहन **निर्देशक:** प्रियदर्शन **पटकथा लेखक:** दामूदरन टी. **मुख्य अभिनेता:** मोहन लाल **सह-अभिनेता:** प्रभु **सह-अभिनेत्री:** तबू **कैमरामैन:** संतोष सिवान **ध्वनि आलेखक:** दीपन चटर्जी **संपादक:** गोपालकृष्णन **कला निर्देशक:** साबु सिरिल **वेशभूषाकार:** साजिन राघवन/साइबाबू **संगीत निर्देशक:** इलियाराजा **गीतकार:** गिरीष पुथेनचेरी/जावेद अख्तर **पार्श्व गायिका:** के.एस. चित्रा **प्रभाव सृजक:** वेंकी

ये कहानी 20वीं शताब्दी के शुरू के अन्डमान द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर स्थित सेलूलर जेल की ऐतिहासिक घटनाओं पर बनी है। गोवर्धन नामक एक गाँव के डाक्टर को ट्रैन में बम विस्फोट से जुड़े होने के लिए उसके विवाह के दिन उसे गिरफ्तार किया जाता है। उसको सज़ा होने पर सेलूलर जेल भेजा जाता है। जेल के वार्डन और उसके साथिओं के हाथों बंदियों पर अत्यंत अत्याचार होता है। वार्डन का हुक्म न मानने पर बंदियों की हत्या कर दी जाती है।

द्वीप में बसे अंग्रेज़ डाक्टर को ये अत्याचार पसंद नहीं और वह इन बातों को पत्रकारों तक पहुँचा देता है। सच्चाई जानने के लिए एक कमिशन नियुक्त की जाती है पर जेल में हालात अत्यंत बिगड़ जाते हैं। गोवर्धन अंत में अत्याचारी वार्डन और उसके सहयोगी की हत्या कर फांसी पर चढ़ जाता है।

KAALA PANI

Malayalam/Colour/210 min

Producer: V. Mohanlal/R. Mohan **Director:** Priyadarshan **Screenplay Writer:** Damodaran T. **Leading Actor:** Mohanlal **Supporting Actor:** Prabhu **Supporting Actress:** Tabu **Cameraman:** Santhosh Sivan **Audiographer:** Deepan Chatterji **Editor:** Gopalakrishnan **Art Director:** Sabu Cyril **Costume Designer:** Sajin Raghavan/Sai Babu **Music Director:** Illayaraaja **Lyricist:** Girish Puthencherry/Javed Akhtar **Female Playback Singer:** K.S. Chitra **Special Effects Creator:** Venki.

The story is set in the early 20th century and is based on the historical events that took place in the dreaded Cellular Jail in Port Blair on the Andaman Islands. The story revolves around Govardhan, a village Doctor, who is arrested on his wedding day for suspected involvement in a train bomb blast. He is sentenced and sent to the Cellular Jail. The torture which the prisoners have to endure at the hands of the prison warden and his hench man is too much. The prisoners are massared and made to do things against their will.

The British Doctor on the island Len Hutton has some compassion and reports the matter to the press. A commission is appointed to enquire into the matters. Conditions worsen and Govardhan finally kills the warden and his henchman and is hanged.

KAHINI

Bengali/Colour/105 min

Producer: Chandramala Bhattacharya/ Malay Bhattacharya **Director/Screen-play Writer:** Malay Bhattacharya **Leading Actor:** Dhritiman Chatterjee **Leading Actress:** Anuradha Ghatak **Supporting Actor:** Debesh Roychowdhury **Supporting Actress:** Suranjana Dasgupta **Child Artist:** Soumomoy Bakshi **Cameraman:** Sunny Joseph **Audiographer:** Chinmoy Nath **Editor:** Arghakamal Mitra **Art Director:** Nikhil Baran Sengupta **Costume Designer:** Bijon Ray **Music Director:** Debojyoti Mishra

One day while delving into a heap of old belongings Rajat decides on kidnapping a child. A mysterions stranger gives Rajat some old documents and a burnt photograph of his childhood. Rajat is joined by a taxi driver and a banner painter. Their secret journey takes them through a whirlpool of astonishing events and harrowing characters. They econonter a killer, a petrol pump boy with a bitter childhood and a lonely woman, owner of a road side tea-shop. In time Rajat has a change of heart but the child dies on the way back. Rajat is aghast and contemplates suicide. Rajat sees a similarity with the child and the burnt photograph of his childhood. Rajat is left behind but the two others move on.

काहिनी

बंगला/रंगीन/105 मिनट

निर्माता: चंद्रमाला भट्टाचार्य/मलय भट्टाचार्य **निर्देशक/पटकथा लेखक:** मलय भट्टाचार्य **मुख्य अभिनेता:** धृतिमान चटर्जी **मुख्य अभिनेत्री:** अनुराधा घटक **सह-अभिनेता:** देवेश रायचौधरी **सह-अभिनेत्री:** सुरंजना दासगुप्ता **बाल कलाकार:** सोउमोमय बक्शी **कैमरामैन:** सन्नी जोसेफ **ध्वनि आलेखक:** चिनमय नाथ **संपादक:** अर्घकमल मित्रा **कला निर्देशक:** निखिल बरन सेनगुप्ता **वेशभूषाकार:** बीजन राय **संगीत निर्देशक:** देवज्योति मिश्रा

एक दिन पुराने सामान में खोजते हुए रजत एक बच्चे का अपरहरण करने का निश्चय करता है। एक अंजान आदमी रजत को कुछ पुराने कागजों के साथ उसके बचपन की एक जली हुई तस्वीर दे जाता है। रजत को अपने साथ एक टेक्सी ड्राइवर और एक पताका रंगसाज का सहारा मिल जाता है। उनकी गुप्त यात्रा उन्हें आश्चर्यजनक घटनाओं और उत्पीड़क पात्रों के बीच ले जाता है। इस दौरान उनकी मुलाकात एक हत्यारा, एक पेट्रोल पम्प में काम करने वाला युवक और एक चाय वाली से हो जाती है। इन सब के बीच में किसी समय रजत उस बच्चे को वापस छोड़ आने का निश्चय करता है पर रास्ते में ही उस बच्चे की मृत्यु हो जाती है। रजत हताश होकर आत्महत्या करने की सोचता है।

उस बच्चे से रजत की बचपन की जली हुई तस्वीर में बहुत मेल है। रजत पीछे रह जाता है और उसके साथी आगे चले जाते हैं।

कथापुरूषन

मलयालम/रंगीन/107 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेख : अदूर गोपालकृष्णन **मुख्य अभिनेता :** विश्वनाथ **मुख्य अभिनेत्री** मिनी नायर **सह-अभिनेता :** बाबू नाम्बूदिरी **सह-अभिनेत्री :** अरानभुला पोनम्मा/ उर्मिला उन्नी/ललिता **बाल कलाकार :** मिथुन/ स्त्रीजा/अखिल **कैमरामैन :** रवि वर्मा **ध्वनि आलेखक :** हरिकुमार **संपादक :** एम. मणि **कला निर्देशक :** एन. सिवान **वेशभूषाकार :** ए. सतीशन **संगीत निर्देशक :** विजया भास्कर

ये कहानी मानव आत्मा की अपने आप से किसी भी संस्थान या सरकार के कठोर नियंत्रण तथा दमन के खिलाफ दावा करने की कथा है। कोई भी सरकार किसी भी व्यक्ति के स्वेच्छाकारी मत पर प्रतिबंध अवश्य लगाती है।

इस कहानी में मुख्य पात्र एक कभी न हारने वाला युवक है जो अपनी हार या जीत को मानवता के महान ढांचे में ढाल लेता है।

ये फिल्म एक बदलते समाज के पट पर बनी है जो लोहे जैसे सामंतवाद से आज के लचकदार समाज में परिवर्तित हो रही है।

कथापुरूषन की कहानी तर्कसंगत परंतु मध्यम वर्ग के वृद्धि और विकास के कठिन मार्ग का अनुरेखण है। इस फिल्म का मुख्य पात्र अपने मध्यम वर्ग के विनम्र संवेदन शील और प्रभाव्य मन से कायर और अवरोध को बाहर कर अपने को एक सृजनात्मक लेखक के रूप में प्रकाश करता है।

KATHAPURUSHAN

Malayalam/Colour/107 min

Producer/Director/Screenplay Writer: Adoor Gopalakrishnan **Leading Actor:** Viswanathan **Leading Actress:** Mini Nair **Supporting Actor:** Babu Namboodiri **Supporting Actress:** Aranmula Ponnamma/ Urmila Unni/Lalita **Child Artist:** Mithun/Sreeja/Akhil **Cameraman:** Ravi Verma **Audiographer:** Hari Kumar **Editor:** M. Mani **Art Director:** N. Sivan **Costume Designer:** S. Satheeshan **Music Director:** Vijaya Bhaskar

The story attempts to epitomize the eternal struggle of the human spirit to assert itself against regimentation and repression that any system of establishment or governance is bound to impose on the free will of the individual.

The protagonist is a never-say-die young man who tuns both triumph and failures as moulds for aspiring nobility of mankind.

A society in transition-from a cast-iron feudal order to the plastic present-provides the backdrop as well as the thematic material of the film.

The film traces the rational yet difficult course of the growth and development of a middle class mind - gentle, sensitive and impressionable who ultimately finds release from his timidily and inhibitions as he discovers creativity in himself as a writer.

क्राऊर्या

कन्नड़/रंगीन/125 मिनट

निर्माता: निर्मला चित्गोती **निर्देशक/पटकथा लेखक:** गिरीष कसारावल्ली **मुख्य अभिनेता:** अशोक हेग्ड़े **मुख्य अभिनेत्री:** रेनुकम्मा एम. **सह-अभिनेता:** एच.जी. दत्तात्रेया **सह-अभिनेत्री:** विजय येक्कुडी **बाल कलाकार:** मास्टर विश्वास **कैमरामैन:** एस. रामचन्द्र **ध्वनि आलेखक:** महेन्द्रन **संपादक:** एम.एन. स्वामी **कला निर्देशक:** सुरेश अनजल्ली **वेशभूषाकार:** वैशाली कसारावल्ली **संगीत निर्देशक:** एल. वैद्यनाथन

यह एक परम्परागत मध्यम वर्गीय परिवार की वृद्ध महिला के दुखों की कहानी है। तीन पीढ़ीयों के बीच के जटिल संबंधों का इसमें विवरण है।

रंगाजी, 70 वर्षीय वृद्धा को कहानी सुनाने का बहुत शौक था जो ज्यादातर मनगढ़ंत होती थी। परंतु उसके पुत्र वासु की मृत्यु के उपरांत हालात बदल जाते हैं। उसे अपने दूर के संबंधी राजन्ना के घर जाकर रहना पड़ता है। राजन्ना भी उसे, गाँव के बड़ो के दबाव में आकर घर में रहने देता है। वहाँ रंगाजी मूर्ती नामक बालक से स्नेह करने लगती हैं। मूर्ती को लेकर वह बंगलोर अपने पति के सहयोगी की खोज में जाती हैं पर उसकी मृत्यु की खबर सुन कर वह निराश हो जाती है। वापस आते समय वह आहत होकर पुलिस थाने में दम तोड़ देती है।

KRAURYA

Kannada/Colour/125 min

Producer: Nirmala Chitgopi **Director/ Screenplay Writer:** Girish Kasaravalli **Leading Actor:** Ashok Hegde **Leading Actress:** Renukamma M. **Supporting Actor:** H. G. Dattatreya **Supporting Actress:** Vijaya Yekkundi **Child Artist:** Master Vishwas **Cameraman** S. Ramachandra **Audiographer:** Mahendran **Editor:** M.N. Swamy **Art Director:** Suresh A. **Costume Designer:** Vaishali Kasaravalli **Music Director:** L. Vaidyanathan nagalli.

The film tries to capture the travails of an old lady in a traditional middle class family and the complex relationships between individuals spanning three generations.

Rangaji, a seventy odd years old lady has the passion of telling fascinating stories to children most of which are on the spot improvisations. But when her son Vasu dies, situation changes. Rajanna, a distant relative, has to offer her shelter due to the pressures of the village elders. There she gets close to young Murthy. Rangaji goes to Bangalore with Murthy in search of a close associate of her husband. But when she finds out that he is no more her last hopes are dashed. She is injured while returning back and breathes her last in a police station.

MINI

Malayalam/Colour/76 min

Producer: Madhu **Director:** P. Chandra kumar **Screenplay Writer:** Iskantar Mirsa **Leading Actor:** Chandrahasan **Leading Actress:** Cuckoo Parameswaran **Supporting Actor:** Babu G. Nair **Supporting Actress:** Malini Nayar **Child Artist:** Arati **Cameraman:** Sukmumar **Audiographer:** Krishnan Unni **Editor:** Madhu Kainakari **Art Director:** Premachandran **Costume Designer:** G.K. Ramu **Music Director:** Vishnu Bhatt **Lyricist:** O.N.V. Kurup **Male Playback Singer:** Vishnu Bhatt **Female Playback Singer:** Aswathy **Choreographer:** Saraswathy Malhotra

Mini is a 10-year old school girl from a middle class family whose father is a habitual drunkard who beats up his wife as a rule and throws tantrums into the early hours of the morning. The mother and daughter suffer in silence, but the neighbours find the daily antics a nuisance. Despite their vehement protests things go from bad to worse.

Mini prays to God and wishes that her father stop drinking and turn over a new life. She goes to the temple but to no avail. She then learns about Gandhiji and his hunger strike. She goes on a hunger strike and when she collapses she is admitted to the hospital. Her father realises his fault and breaks down. He then promises never to touch alcohol again. Mini's non-violent approach brings her victory and joy.

मिनी

मलयालम/रंगीन/76 मिनट

निर्माता: मधु **निर्देशक:** पी. चन्द्रकुमार **पटकथा लेखक:** इस्कान्तर मिर्जा **मुख्य अभिनेता:** चन्द्रहसन **मुख्य अभिनेत्री:** कुक्कु परमेस्वरन **सह-अभिनेता:** बाबू जी. नायर **सह-अभिनेत्री:** मालिनी नायर **बाल कलाकार:** आरती **कैमरामैन:** सुकुमार **ध्वनि आलेखक:** कृष्णन उन्नी **संपादक:** मधु कैनाकरी **कला निर्देशक:** प्रेमचंद्रन **वेशभूषाकार:** जी.के. रामू **संगीत निर्देशक:** विष्णु भट्ट **गीतकार:** ओ.एन.वी. कुरूप **पार्श्व गायक:** विष्णु भट्ट **पार्श्व गायिका:** अस्वथी **नृत्य संयोजक:** सरस्वती मल्होत्रा

मिनी एक मध्यम वर्गीय परिवार की 10 वर्षीय लड़की है। उसके पिता एक शराबी हैं जो हर रात देर से घर लौटकर अपनी पत्नी को मारते तथा कोलाहल करते थे। दोनों माँ-बेटी चुपचाप सहन करते पर उनके पड़ोसी इस बात से बहुत परेशान थे। उनके विवाद करने पर भी मिनी के पिता पर कोई असर नहीं होता।

मिनी रोज़ भगवान से प्रार्थना करने मंदिर जाती कि उसके पिता शराब छोड़कर एक नए इंसान बन जाएं। तभी उसे एक दिन गांधीजी के भूख हड़ताल के विधि की प्रेरणा मिलती है। वह भूख और प्यास से बेहोश होकर हस्पताल में पहुँच जाती है। उसके पिता को इस बात का पता चलने पर उसे बहुत पश्चाताप होता है और वह शराब को कभी हाथ न लगाने का प्रण करता है। मिनी को अहिंसा वादी तरीकों से विजय तथा खुशी मिलती है।

MOKSHA

Oriya/Colour/80 min

Producerð: Jayadev Mallick/Pramoda Kumar Nayak **Director:** Gouri Shankar Das/Malaya Kumar Ray **Screenplay Writer:** Gouri Shankar Das **Leading Actor:** Durga Prasad Mohapatra **Leading Actress:** Bijayeni Mishra **Supporting Actor:** Choudhury Jayprakash Das **Supporting Actress:** Shneha Prabha Samantaray **Child Artist:** Bapi **Cameraman:** Malaya Kumar Ray **Audiographer:** Sanjay Pathak **Editor:** Bijay Mishra **Art Director:** Amiya Moharana **Costume Designer:** Pratima Chitralaya **Music Director:** Sumanta Mohanty **Lyricist:** Baykuntha Baba

Maksha is the story of Noori Das and Soshi, a widow caught between the cross fires of life and death, hopes and despair, pains and little pleasures of life.

Cruel strokes of inexorable fate leaves them alone under the same thatched roof pitted against each other in a relational imbroglio, where the traditional age old social customs prohibit them from coming closer to each other physically, but their intrinsic human sensitivities, the common cords of suffering pain and compulsions of a man-woman relationship goads them closer and closer emotionally.

The intrinsic struggle of two human beings to transcend the powerful emotional compulsions to attain higher levels of spirituality is in essence the story of Moksha, the eternal liberation.

मोक्ष

उड़िया/रंगीन/80 मिनट

निर्माता: जयदेव मल्लिक/प्रमोद कुमार नायक **निर्देशक:** गौरी शंकद दास/मलय कुमार रे **पटकथा लेखक:** गौरी शंकर दास **मुख्य अभिनेता:** दुर्गा प्रसाद महापात्र **मुख्य अभिनेता:** बिजयनी मिश्रा **सह अभिनेता/पार्श्व गायक:** चौधरी जयप्रकाश दास **सह अभिनेत्री:** स्नेह प्रभा सांमतारे **बाल कलाकार:** बापी **कैमरामैन:** मलय कुमार रे **ध्वनि आलेखक:** संजय पाठक **संपादक:** बिजय मिश्रा **कला निर्देशक:** अमिया महाराणा **वेशभूषाकार:** प्रतिमा चित्रालय **संगीत निर्देशक:** सुमंत मंहाती **गीतकार:** बयकुंठ

मोक्ष नूरी और शशी एक विधवा के बीच चल रहे जीवन-मरण, आशा-निराशा, दुख-सुख के लड़ाई की कहानी है।

भाग्य के निष्ठुर हाथ उन्हें एक ही छत के नीचे रहने पर मजबूर कर देते हैं जब समाज के परम्परागत रीति-नीति इसकी आज्ञा नहीं देते। समाज उन्हें एक दूसरे के करीब आने की अनुमति नहीं देता परंतु मानव सम्वेदना और एक दूसरे के परिचित दुख उनके भावनाओं को एक ही सूत्र में बांध देते हैं।

दो मनुष्य की निजी लड़ाई में उनकी भावनाओं को विवश कर उन्हें आध्यात्म के शिखर तक ले जाना ही मोक्ष की कहानी है।

नसीम

हिन्दी/रंगीन/170 मिनट

निर्माता : एन.एफ.डी.सी./दूरदर्शन **निर्देशक** : सईद अख्तर मिर्ज़ा **पटकथा लेखक** : अशोक मिश्रा/सईद अख्तर मिर्ज़ा **मुख्य अभिनेता** : कैफी आज़मी **मुख्य अभिनेत्री** : मायूरी कांगो **सह-अभिनेता** : कुल्भूषण खरबंदा **सह-अभिनेत्री** : सुरेखा सिक्री रेगे **कैमरामैन** : विरेन्द्र सैनी **ध्वनि आलेखक** : मनोज सिक्का **संपादक** : जावेद सइयद **कला निर्देशक** : वनराज भाटिया **वेशभूषाकार** : शालिनी शाह **संगीत निर्देशक** : वनराज भाटिया।

नसीम एक पंद्रह वर्ष की लड़की की कहानी है जो बम्बई में पली-बड़ी हुई है। वह अपने स्कूल की शरारत, भाई-बहनों की लड़ाई, अपना चिड़चिड़ापन, अपने सपने, महत्वाकांक्षा और गोपनीय बातें सभी अपने दादा के साथ बांटती है। अपने 70 वर्षीय वृद्ध बीमार, सेवा निवृत दादा जी के साथ उसका एक विशेष और प्यारा संबंध है। अब्बाजान अपने ज्ञान के भंडार से नसीम के सांसारिक जीवन में कविता, इतिहास तथा संगीत की शिक्षा देते हैं। वे नसीम को समाज की तीव्र गति से गिरने वाली मूल्यों का समझ प्रदान करते हैं। 1947 के भारत-पाकिस्तान बंटवारे के समय हुए साम्प्रदायिक दंगों का नसीम के जीवन पर बहुत गहरा असर हुआ था।

अब्बाजान की मृत्यु से नसीम के लिए एक युग समाप्त हो जाता है और नसीम को भयानक भविष्य का अकेले सामना करना पड़ता है।

NASEEM

Hindi/Colour/170 min

Producer NFDC/Doordarshan **Director:** Saeed Akhtar Mirza **Screenplay Writer:** Ashok Mishra/Saeed Akhtar Mirza **Leading Actor:** Kaifi Azmi **Leading Actress:** Mayoori Kango **Supporting Actor:** Kulbhushan Kharbanda **Supporting Actress:** Surekha Sikri Rege **Cameraman:** Virendra Saini **Audiographer:** Manoj Sikka **Editor:** Javed Sayyed **Art Director:** Gautam Sen **Costume Designer:** Shalini Shah **Music Director:** Vanraj Bhatia

Naseem is a fifteen-year-old muslim girl growing up in Bombay's decaying inner city. She has her share of school girl pranks, sibbling squabbles, bouts of moodiness, dreams, ambitions, secrets, etc.

She has a special relationship with her seventy-year old grandfather, an ailing retired school teacher. Abbajaan, an erudite scholar, tries to infuse in Naseem's mundane life a sense of poetry, history, music, etc. He speaks about the rapidly eroding sense of values of the society. The communal forces in the wake of partition of 1947 have a profound effect on Naseem's life.

With the death of her grandfather an era is wiped off and Naseem, young and vulnerable, has to face the frightening future alone.

ओर्माकलुंडयिरीक्कानम

मलयालम/रंगीन/90 मिनट

निर्माता: सालम क्रासेरी **निर्देशक/पटकथा लेखक:** टी.वी. चंद्रन **मुख्य अभिनेता:** मम्मूटी **मुख्य अभिनेत्री:** प्रीयम्बदा रे **सह-अभिनेता:** नेडुमुडी वेणु **सह-अभिनेत्री:** कुक्कु परमेस्वरन **बाल कलाकार:** नितिन के. डेविड **कैमरामैन:** वेणु **ध्वनि आलेखक:** कृष्णनठन्नी **संपादक:** वेणु गोपाल **कला निर्देशक:** जी. सुंदर **वेशभूषाकार:** मनोज **संगीत निर्देशक:** जॉनसन

ये फिल्म 1959 में केरल के पहले कम्यूनिस्ट सरकार के गिरने के पूर्व की कहानी है।

स्कूली युवक जयन का भासी नामक दर्जी से गहरा रिश्ता कायम हो जाता है। भासी कम्यूनिस्ट पार्टी का समर्थक है जबकि जयन के पिता कांग्रेसवादी हैं। जयन को पता चलता है कि भासी और उसके परिवार के सदस्य कांग्रेस के गुंडों से डरकर जीवन व्यतीत करते हैं।

उच्च वर्ग के लोग हमेशा ही धोखे और आंतक से उनके अधिकारों को छीनते आए हैं। समाज विज्ञानी, डा. थाराकन जो आने वाली कयामत के सिद्धांत की खोज कर रहे हैं, उनके सहयोग से जयन को सब सच्चाई नजर आती है। वह खून में लथपत, हत्या और बदले में घिरा सच का सामना करता है।

ORMAKALUNDAYIRIKKANAM

Malayalam/Colour/90 min

Producer: Salam Karassery **Director/ Screenplay Writer:** T.V. Chandran **Leading Actor:** Mammotty **Leading Actress:** Priyambada Ray **Supporting Actor:** Nedumudi Venu **Supporting Actress:** Kukku Parameswaran **Child Artist:** Nithin K. David **Cameraman:** Venu **Audiographer:** Krishnanunni **Editor:** Venu Gopal **Art Director:** G. Sunder **Costume Designer:** Manoj **Music Director:** Jhonson.

The film is set against the backdrop of the first communist Ministry of Kerala on the eve of its dismissal in 1959 after less than two years in power.

A school going teenage, Jayan, grows a warm relation with Bhasi, the tailor, who is a staunch Communist Party activist. Jayan's father is a strong sympathiser of Congress Party.

Jayan with knowledge dawning upon him realises how Bhasi and his near and dear ones live on the verge of fear of being annihilated by the henchmen of Congress and upper castes who seem to usurp power by unfair means and violence. Jayan's intimate rapport with Dr. Tharakan, a scientist of sorts, engaged in the theory of impending doomsday, helps him see things clearly. Jayan realises the truth besmeared by blood, murder and revenge.

रेप इन द वर्जिन फारेस्ट

बोड़ो/रंगीन/73 मिनट

निर्माता/निर्देशक/संपादक : ज्वांगदेव बोडोसा
पटकथा लेख : ज्वांगदेव बोडोसा/कामाख्या ब्रह्मा नर्जरी/मौगल सिंह हाजोअरी/मोतीलाल बासुमातारी
संगीत निर्देशक : राजेश्वर ब्रह्मा

गरीब बुदांग जंगल में रहता है और बाहर के लोगों को चोरी-छिपे लकडियां बेचकर अपनी रोजी रोटी कमाता है। उसकी एकमात्र बेटी मिथिंगा के विवाह के लिए बहुत ज्यादा दहेज की मांग की जाती है। इस जरूरत को पूरा करने के लिए बुदांग ज्यादा चोरियों करता है और पकड़ा जाता है। भविष्य में पकड़े जाने से बचने के लिए बुदांग पेड़ों को काट कर जुआरियों को बेच देता है। इन्हीं लोगों का व्याभिचारी दल बुदांग की बेटी मिथिंगा का बलात्कार करते है। यह बलात्कार प्रकृति के बलात्कार का प्रतीक है जो अंधाधुंध पेड़ के काटने और वर्जितनफारेस्ट को नस्ट करने से हुआ है।

RAPE IN THE VIRGIN FOREST

Bodo/Colour/73 min

Producer/Director/Editor: Jwngdao Bodosa **Screenplay Writer:** Jwngdao Bodosa/Kamakhya Brahma Narzary/ Maugal Sing Hazoary/Motilal Basumatary **Music Director:** Rajeswar Brahma

Budang, a poor forest dweller, earns his bread by petty illegal supply of timber to outsiders. His only daughter Mithinga is proposed in marriage against hefty dowry. In order to meet the high financial demand of the proposed marriage Budang stoops to earning more money and in the process gets penalised.

To avoid major penalty in future he indulges in cutting trees and disposing them to black leggers, a clique of leuds, who in turn gang rape his daughter - symbolizing rape of Nature for indiscriminate felling and destruction of Virgin forests.

सनबी

मणिपुरी/रंगीन/87 मिनट

निर्माता: एन.एफ.डी.सी **निर्देशक/संगीत निर्देशक:** अरिबम स्याम शर्मा **पटकथा लेखक:** अरिबम स्याम शर्मा/एम.के. बिनोदिनी देवी **मुख्य अभिनेता:** हाओरोंगबाम दावेन **मुख्य अभिनेत्री:** आर.के. सुशीला **सह अभिनेता:** ताखेलामबाम नाबोकुमार **कैमरामैन:** सन्नी जोसेफ **ध्वनि आलेखक:** दीपक चनमथाबम **संपादक:** उज्जल नन्दी **कला निर्देशक:** बी. शांतिकुमार शर्मा **वेशभूषाकार:** गाएत्री अरिबम

ये कहानी मणिपुर के एक दूर दराज़ के पहाड़ी के गाँव में स्थित है जहाँ ओझा बीरचन्द्र, उसकी पत्नी, उनकी बेटी सखी तथा उनकी एक घोड़ी सनबी रहते थे। उनके घर की शांति मंगी नामक गाँव का एक गुंडा भंग करता है। वह तलाकशुदा सखी से प्यार करता है और उससे विवाह करना चाहता है पर सखी उसके प्यार का कोई मान नहीं देती।

सनबी का उनके परिवार में एक मुख्य भूमिका है। मंगी सनबी को चोरी कर ले जाता है जिससे सखी उससे मिलने पर मजबूर हो जाए। सनबी शांति, मूल्यों और अखण्डता का प्रतीक है। उसके वापस आ जाने से सब तरफ शांति छा जाती है।

SANABI

Manipuri/Colour/87 min

Producer: NFDC **Director/Music Director:** Aribam Syam Sharma **Screenplay Writer:** Aribam Syam Sharma/ M.K. Binodini Devi **Leading Actor:** Haorongbam Daven **Leading Actress:** R.K. Sushila **Supporting Actor:** Takhelambam Nobokumar **Cameraman:** Sunny Joseph **Audiographer:** Deepak Chanamthabam **Editor:** Ujial Nandy **Art Director:** B. Shantikumar Sharma **Costume Designer:** Gayatri Aribam

The story is set in a remote hilly terrain of Manipur village where Ojha Birchandra, his wife, their daughter Sakhi and their grey mare, Sanabi live. The peaceful life of the small family is invaded by Mangi, a local ruffian. Mangi, loves Sakhi, a young divorcee, but his love remains unreplied.

Sanabi, the mare plays a vital role in the life of this small family. The climax is reached when Sanabi is stolen by Mangi to compel love from Sakhi. The film ends with the return of Sanabi who is a symbol of peace, values and integrity.

SANGEETHA SAAGARA GAANAYOGI PANCHAKSHARA GAVAI

Kannala/Colour/160 min

Producer/Costume Designer: Chindodi Leela **Director/Screenplay Writer:** Chindodi Bangaresh **Leading Actor:** Lokesh **Supporting Actor:** Girish Karnad **Child Artist:** Master Vijay Raghavendra **Cameraman:** B.N. Haridas **Audiographer:** K.S. Krishnamurthy **Editor:** Suresh Urs **Art Director:** Venkata Rao **Music Director/ Lyricist:** Hamsalekha **Male Playback Singer:** Dr. Rajkumar/K.J. Yesudes/S.P. Balasubrahmanyam **Female Playback Singer:** Chitra/Soumya

The film revolves round the life and achievements of Ganayogi Panchakshara Gavai, a great musician though born blind dedicated himself to the service of the blind and disabled.

Gavai and his elder brother Gurubasava were born in 1892 in Kadasetty Halli in Dharwar District of Karnataka. They were initiated into singing by their mother. Kumara Swamiji of Hanagal who discovered their interest in music, trained them formally in Karnatic Music. Gurubasava died early and Kumara Swamiji concentrated on Gavai himself. He sent him to Mysore to be trained under renowned vidwans there. Gavai successfully completed his training and he got the title of Panchakshara Gavai in 1908.

संगीत सागर गानयेगी पंचाक्षर गवई

कन्नड़/रंगीन/160 मिनट

निर्माता/वेशभूषाकार: चिन्डोडी लीला **निर्देशक/पटकथा लेखक:** चिन्डोडी बंगारेश **मुख्य अभिनेता:** लोकेश **सह अभिनेता:** गिरीश कर्नाड **बाल कलाकार:** मास्टर विजय भास्कर राघवेन्द्र **कैमरामैन:** बी. एन. हरिदास **ध्वनि आलेखक:** के.एस. कृष्णामूर्ती **संपादक:** सुरेश उर्स **कला निर्देशक:** वेंकट राओ **संगीत निर्देशक/ गीतकार:** हंसलेखा **पार्श्व गायक:** डा. राजकुमार/ के.जे. येसुदास/एस.पी. बालसुब्रमण्यम **पार्श्व गायिका:** चित्रा/सौम्या

ये फिल्म महान संगीतज्ञ गानयोगी पंचाक्षर गवई के जीवन और उनकी उपलब्धियों की कहानी है। वे जन्म से अंधे थे और उन्होंने अपना पूरा जीवन अंधों और विलांगों की सेवा में व्यतीत कर दिया।

गवई और उनकी ज्येष्ठ भ्राता गुरूभास का जन्म 1892 में कर्नाटक के धारवाड़ जिले के काडासेट्टी हल्ली में हुआ। उन्हें संगीत की आरंभिक शिक्षा उनकी माता ने दी। हनागल के कुमार स्वामीजी ने जब उनकी संगीत की प्रतिभा देखी तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्हें उनके माता-पिता से मांग कर उन्हें कर्नाटक शैली के गायन में प्रशिक्षण दिया। वे प्रसिद्ध गायक बने पर गुरूभास की अचानक मृत्यु हो गई। स्वामीजी ने गवई को मैसूर भेजकर प्रशिक्षित किया और गवई को 1908 में पंचाक्षर की उपाधी प्राप्त हुई।

स्त्री

तेलगु/रंगीन/93 मिनट

निर्माता: एन.एफ.डी.सी./दूरदर्शन **निर्देशक/पटकथा लेखक:** के.एस. सेथुमाधवन **मुख्य अभिनेता:** विजय **मुख्य अभिनेत्री:** रोहिनी **सह-अभिनेता:** पी.एल. नारायण **सह-अभिनेत्री:** दिव्या/पद्मा **कैमरामैन:** सर्वानन **ध्वनि आलेखक:** एम रवि/थिरूसेल्वम **संपादक:** डी. राजगोपाल **कला निर्देशक:** बी. चेलम **वेशभूषाकार:** ए. वीर भद्रराव **संगीत निर्देशक:** एल. वैद्यनाथन **गीतकार:** (स्व) पालागुनि पद्मराजू **पार्श्व गायक:** वन्देमातरम श्रीनिवास **पार्श्व गायिका:** रेनुका

ये कहानी पद्दालु तथा रंगी के गहरे संबंध की गाथा है। विवाह न होते हुए भी वे एक जान दो प्राणी के भांति रहते थे। पद्दालु, एक लोक कलाकार अपने रोज़गार को टी.वी. तथा सिनेमा से खतरा देखकर चोरी करना आरंभ कर देता है। पद्दालु को जेल हो जाती है रंगी उसको सुधारने की कोशिश नहीं छोड़ पाती। समाज के मौजूदा हालत में उन दोनों से एक और अपराध हो जाता है। रंगी को एक सहानुभूतिपूर्ण लेखक प्रतिरक्षा करता है। वह रंगी की कहानी एक प्रवहमान नाव में बैठा सुनता है जो एक नई सबुह के उभरते सूरज की ओर जा रहा है। ये रंगी के नए जीवन का भोर है।

STRI

Telugu/Colour/93 min.

Producer: NFDC/Doordarshan **Director/Screenplay Writer:** K.S. Sethumadhavan **Leading Actor:** Vijay **Leading Actress:** Rohini **Supporting Actor:** P.L. Narayana **Supporting Actress:** Divya/Padma **Cameraman:** Saravanan **Audiographer:** M.Ravi/Thiruselvam **Editor:** D. Rajogopal **Art Director:** B. Chelam **Costume Designer:** A. Veera Badrarao **Music Director:** L. Vaidyanathan **Lyricist:** (Late) Palagunni Padmaraju **Male Playback Singer:** Vandemataram Sreenivas **Female Playback Singer:** Renuka

It is a film about intimate relationships between a man Paddalu and woman Rangi. Though not married both of them look and behave as if they are one soul despite their surface differences. Paddalu, a folk performer, stoops to larceny as his profession is threatened by TV invasion and tinsel cinema. At one point Paddalu also serves a term in jail. But it is Rangi who clings to Paddalu like a limpet in order to change his character to a civil life. But adverse social situation compels both Rangi and Paddalu to commit another crime and this time Rangi is being defended by one sympathetic writer. The writer listens to Rangi's rigmarole on a floating boat gliding towards the peeping sun signalling another new dawn for Rangi.

स्वामी विवेककानन्द (भाग 1)

हिन्दी/रंगीन/150 मिनट

निर्माता: डा.जी. सुब्बारामी रेड्डी **निर्देशक/पटकथा लेखक:** जी.वी. अइयर **मुख्य अभिनेता:** मिथुन चक्रवर्ती **मुख्य अभिनेत्री:** देबश्री राय **सह अभिनेता:** सर्वदामन बैनर्जी **सह अभिनेत्री:** तनुजा मुखर्जी **बाल कलाकार:** मास्टर विजय राघवेन्द्र **कैमरामैन:** मधु अम्बाट **ध्वनि-आलेखक:** सतीश गुप्ता (सहारा) **संपादक:** बी. लेनिन/वी.टी. विजयन **कला निर्देशक:** नागराज राओ/पी कृष्णामूर्ती **वेशभूषाकार:** पी. कृष्णामूर्ती/कल्पना अइयर **संगीत निर्देशक:** (स्व) सलिल चौधरी/विजया भास्कर **गीतकार:** गुल्ज़ार **पार्श्व गायक:** डा.के.जे. येसुदास/अनूप जलोटा **पार्श्व गायिका:** आशा भोंसले/कविता कृष्णामूर्ती/अंतरा चौधरी **नृत्य संयोजक:** रवि अतिबुद्धी/डा. पद्मा सुब्रमण्यम/चिन्नी प्रकाश

स्वामी विवेकानन्द भारत की आत्मा के चिन्ह हैं। उनका जन्म कलकत्ते के एक प्रसिद्ध परिवार में 1863 में हुआ। नरेन्द्रनाथ को उनके गुरू रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानन्द का नाम दिया। वे केवल 40 वर्ष तक जीवित रहे परंतु उसी में उन्होंने ज्ञान और आत्मसिद्धि प्राप्त किया। उनके गुरू की आज्ञा अनुसार उन्होंने मानव के हित के लिए कार्य किया। शिकागो के पार्लियामेंट आफ रिलिजियन में उनका भाषण आज भी अमर है। वह उनके जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण लक्ष्य था।

SWAMI VIVEKANANDA (PART-I)

Hindi/Colour/159 min

Producer: Dr. T. Subbarami Reddy **Director/Screenplay Writer:** G.V. Iyer **Leading Actor:** Mithun Chakra borty **Leading Actress:** Debashri Roy **Supporting Actor:** Sarvadaman Banerjee **Supporting Actress:** Tanuja Mukharjee **Child Artist:** Master Vijay Raghavendra **Cameraman:** Madhu Ambat **Audiographer:** Satish Gupta (Sahara) **Editor:** B. Lenin/V.T. Vijayan **Art Director:** Nagaraja Rao/P. Krishnamurthy **Costume Designer:** P. Krishnamurthy/Kalpana Iyer **Music Director:** (Late) Salil Chowdhury/Vijaya Bhaskar **Lyricist:** Gulzar **Male Playback Singer:** Dr. K.J. Yesudas/Anoop Jalota **Female Playback Singer:** Asha Bhonsle/Kavitha Krishnamurthy/Antara Chowdhary **Choreographer:** Ravi Atibhudhi/Dr. Padma Subramanyam/Chinni Prakash

Swami Vivekanand symbolises the spirit of India. Born Narendranath in a famous Calcutta family in 1863, Vivekananda (thus named by his spiritual master and mentor, Ramkrishna Paramhansa) lived only for 40 years but every minute of the short life was packed with a passion for knowledge and self-realisation. He worked for the good of the humanity, as ordained by his master. His electrifying address to the Parliament of Religions in Chicago, USA in the evening of his life immortally remains the epitome of his mission.

द मेकिंग ऑफ द महात्मा

अंग्रेजी/रंगीन/150 मिनट

निर्माता: एन.एफ.डी.सी. **निर्देशक:** श्याम बेनेगल **पटकथा लेखक:** फतीमा मीर/शमा जैदी/श्याम बेनेगल **मुख्य अभिनेता:** रजत कपूर **मुख्य अभिनेत्री:** पल्लवी जोशी **सह अभिनेता:** कीथ स्टीवेन्सन/हिमल देवनारायण **सह अभिनेत्री:** स्त्रीनी पिल्लई **कैमरामैन:** अशोक मेहता **ध्वनि आलेखक:** कोलिन मैकफर्लेन/अश्विन बल्सावर/इवान मिलबौरो/विलिअम मोल्ड **संपादक:** एवरिल ब्यूक्स **कला निर्देशक:** बेलिन्डा जॉनसन **वेशभूषाकार:** पिया बेनेगल/डायाना सिलियर्स् **संगीत निर्देशक:** वनराज भाटिया **पार्श्व गायिका:** ऊषा उथुप

मोहन दास करमचंद गांधी को दक्षिण अफ्रीका में बसे एक भारतीय धनी का मामला सुलझाने 1893 में दक्षिण अफ्रीका आमंत्रित किया जाता है। उन्हें कुछ महीनों में वापस आ जाना था पर आखिरकार वे 21 वर्ष वहाँ रहे। इन्हीं वर्षों में उनके धारणाओं और निजी तथा राजनीतिक दर्शन का जन्म हुआ। गांधी के अहिंसा और सत्याग्रह के मतों का भी यहीं विकास हुआ। दक्षिण अफ्रीका का उनके जीवन पर बहुत असर हुआ और ये फिल्म इन्हीं 21 वर्षों की घटनाओं पर आधारित है।
उनके सच्चाई की खोज उनके पूरे परिवार को कठिनाई में डाल देती है। उन्हें सार्वजनिक जीवन में भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अफ्रीका में उन्होंने स्वस्थ्य स्वयंसेवक का कार्य किया और जेल में सजा भी प्राप्त की। इन्हीं सब के बीच से महात्मा का जन्म हुआ।

THE MAKING OF THE MAHATMA

English/Colour/150 min

Producer: NFDC **Director:** Shyam Benegal **Screenplay Writer:** Fatima Meer/Shama Zaidi/Shyam Benegal **Leading Actor:** Rajit Kapur **Leading Actress:** Pallavi Joshi **Supporting Actor:** Keith Stevenson/Himal Devnarain **Supporting Actress:** Strini Pillai **Cameraman:** Ashok Mehta **Audiographer:** Colin McFarlane/Ashwyn Balsaver/Ivan Milborrow/William Mould **Editor:** Avril Beukes **Art Director:** Belinda Johnson **Music Director:** Vanraj Bhatia **Female Playback Singer:** Usha Uthup.

Mohan Das Karam Chand Gandhi was invited to South Africa in 1893 to settle a case for a wealthy Indian settled there. He expected to return in a few months but instead got involved in the freedom movement and eventually stayed for 21 years. During these years his ideas took shape and his personal and political philosophy evolved. Gandhi's creed of non-violence and satyagraha - truthful action originated in that country. The impact of South Africa was incalculable and this film deals with these 21 years.
His constant search for truth causes hardships for the whole family. His public life is equally full of frustating and difficult experiences. He witnesses inquitous wars as a medical volunteer, and is incarcerated in jail during the struggle for Indian rights. He emerges from this crucible, a Mahatma.

यूगांत

बंगला/रंगीन/129 मिनट

निर्माता: एन.एफ.डी.सी **निर्देशक/पटकथा लेखक:** अपर्णा सेन **मुख्य अभिनेता:** अंजन दत्ता **मुख्य अभिनेत्री:** रूपा गांगूली **सह-अभिनेता:** अस्रुमोहन मोहान्ती/सुब्रता नन्दी **सह-अभिनेत्री:** नीमा रहमान **बाल कलाकार:** अकाश गुप्ता **कैमरामैन:** ए. शशीनाथ/दिलीप वर्मा **संपादक:** मलय बैनर्जी/रतन सर्कार **कला निर्देशक:** बीबी रे/निखिलबरन सेनगुप्ता **संगीत निर्देशक:** ज्योतिश्का दासगुप्ता **पार्श्व गायक:** ए. वैद्यनाथन **नृत्य संयोजक:** इलियाना सिटारिस्टी **प्रभाव सृजक:** अरूण पटेल

ऊपर से ये फिल्म एक विवाह के बारे में है। दीपक और अनुसुया एक विच्छिन्न दंपति हैं जो विवाह के 17 वर्ष बाद उसी छोटे से मछुआरों के गाँव में छुट्टियाँ मनाने जाते हैं जहाँ उन्होंने अपना हनिमून मनाया था। अपने विवाह को टूटने से बचाने का वे प्रयोग करते हैं।

दीपक बम्बई के एक बड़े विज्ञापन एजेन्सी का प्रबंध निदेशक है और अनुसुया एक ख्याति प्राप्त नृत्यांगना है। उसकी भुबनेश्वर में अपनी नृत्य संस्था है। दोनों अपने कार्यों में सफल है पर दीपक, जो आशाओं से पहले डरता था, अब अपने खाली जीवन से सुखी नहीं है। वह अनु के साथ रहकर एक लेखक की जिंदगी शुरू करना चाहता है।

अनु त्रस्त होकर सोचती है कि इस उम्र में क्यों वह अपनी बसी जिंदगी को छोड़कर एक लेखक की अनिश्चित जिंदगी को अपनाना चाहता है।

YUGANT

Bengali/Colour/129 min

Producer: NFDC **Director/Screenplay Writer/Costume Designer:** Aparna Sen **Leading Actor:** Anjan Dutta **Leading Actress:** Rupa Ganguly **Supporting Actor:** Asrumohan Mohanty/Subrata Nandy **Supporting Actress:** Nima Rhaman **Child Artist:** Akaash Gupta **Cameraman:** A. Sashinath/Dilip Verma **Editor:** Moloy Banerjee/Ratan Sarkar **Art Director:** Bibi Ray/Nikhilbaran Sengupta **Music Director:** Jyotishka Dasgupta **Male Playback Singer:** A. Vaidyanathan **Choreographer:** Illeana Citaristi **Special Effects Creator:** Arun Patel

On the surface, the film is about a marriage. Deepak and Anasuya are an estranged couple who have come back to the little fishing village where they had spent their honeymoon seventeen years ago, in an attempt to put their marriage together again.

Deepak is an adertising man, the Managing Director of an important advertising agency in Bombay. Anasuya is a classical dancer of some repute who has her own dance academy in Bhubaneshwar. Both were successful in life but Deepak, who was earlier afraid to hope, found no satisfaction in his job. He had decided to take up writing instead and stay with Anu.

Anu is aghast why one would give up such a good job at this age to face the uncertainties of an author's life.

कथासार : Synopses
ग़ैर-कथाचित्र Non-Feature Films

ए सेलस्चियल ट्राइस्ट

(न.म.नं. 29)
इंगलिश/रंगीन/14 मिनट

निर्माता/निर्देशक : वाई.एन. इंजीनियर **ध्वनि आलेखक :** फयाज ए. वारिस/कमलेश दिवेदी/मुकुन्द सूत्रवे **संपादक:** राजू राठौर/श्रीश अम्बेडकर **संगीत निर्देशक :** के. नारायनन **ऐनीमेटर :** शैला परलकर

ये फिल्म 24 अक्टूबर, 1995 में हुए सूरज के पूर्ण ग्रहण का प्रलेखन है। ये घटना भारत में 15 वर्ष के बाद दिखाई पड़ा और विश्व के अलग-अलग जगहों से लोग नीम का थाना (राजस्थान), फतेहपुर सीकरी और अलाहाबाद (उत्तरप्रदेश) और डायमंड हार्बर (कलकत्ता, पश्चिम बंगाल) में सूरज के पूर्ण ग्रास को देखने तथा उस पर खोज करने आए।

A CELESTIAL TRYST

(N.M. No. 291)
English/Colour/14 min

Producer/Director: Y. N. Engineer **Audiographer:** Faiyaz A. Waris/ Kamlesh Dwivedi/Mukund Sutrave **Editor:** Raju Rathod/Shrirish Amberkar **Music Director :** K. Narayanan **Animator :** Shaila Paralkar

The film is the documentation of the total solar eclipse which happened on the 24th October, 1995. It was seen in India after 15 years and scientists from all over the world assembled at Neem Ka Thana (Rajasthan), Fatehpur Sikri and Allahabad (Uttar Pradesh) and Diamond Harbour (Calcutta, West Bengal).

अजीत

हिन्दी/रंगीन/28 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक: अर्विंद सिन्हा **कैमरामैन:** असीम बोस **ध्वनि आलेखक:** रबी आचार्य **संपादक:** सुमित घोष

ये कहानी गाँव के भूमि हीन किसानों के दुखों की कहानी है। वे अपना और अपने बच्चों का पेट भरने के लिए उन्हें बड़े शहरों में काम करने भेज देते हैं। उनके बच्चों में अमीर बनने की लालसा है। इसके लिए कुछ भी करने को तैयार हैं।
वे गाँव में खेतों में मजदूरी करते हैं। सरकार ने उन्हें जमीन देने के लिए कागज तो दिए है पर असली जमीन उन्हें नहीं मिली है।

AJIT

Hindi/Colour/28 min

Producer/Director/Screenplay Writer Arvind Sinha **Cameraman:** Asim Bose **Audiographer:** Rabi Acharya **Editor:** Sumit Ghosh.

The story is the documentation of the plight of the landless peasants in the villages. They have number of children and when they cannot give them enough to eat they send them to work in cities. The children want to be rich by any means. They are even willing to earn it by evil means.
They work for land owners on wages. Though they have been given the documents for the allotment of agricultural amd they are yet to get the land actually.

ए लिविंग लिजेन्ड

अंग्रजी/रंगीन/31 मिनट

निर्माता : औरोरा फिल्म कार्पोरेशन **निदेर्शक/पटकथा लेखक :** शतद्रु चाकी **कैमरामेन :** जनक घोष **ध्वनि आलेखक :** रॉबिन अधिकारी **सम्पादक :** महादेव शी **संगीत निर्देशक :** प्रशांत सेन

प्रो. हिरेन मुखर्जी एक विद्वान, विचारक, साहित्यकार, सांसद थे। वे राजा राममोहन राय, रविन्द्रनाथ ठाकुर के चलाए सुधार और ज्ञान के पथ पर चलते रहे। उन्हें मार्क्स और लेनिन के समाजवाद से भी प्रेरणा मिली। वे भारतीय विचारों तथा कम्यूनिज़म के आकांक्षाओं के मेल का प्रतीक हैं। इन्हीं कारणों से वे समाज की मुक्ति के लिए लड़ते रहे।

A LIVING LEGEND

English/Colour/31 min.

Producer : Aurora Film Corporation **Director/Screenplay Writer** : Satadru Chaki **Cameraman :** Janak Gosh **Audiographers :** Rabin Adhikary **Editor :** Mahadeb Shi **Music Director :** Prasanta Sen

A scholar and a thinker, an orator and a literateur, a Parliamentarian and a public figure Prof. Hiren Mukherjee is above all a man of vision. Rooted firmly in the tradition of reforms and enlightenment once ushered in by the stalwarts like Raja Rammohan Ray, Rabindranath Tagore and others he was drawn, irresistably, to the ideal's of socialism as propounded by Marx and Lenin. He is thus, indeed, a product of a synthesis of Indian thoughts and the aspirations of communism, that ultimately led him to join the struggle for the fulfilment of freedom with the achievement of a non exploitative society.

औल अलोन इफ नीड बी

अंग्रजी, असमिया/रंगीन/20 मिनट

निर्माता/पटकथा लेखक : अमूल्या ककाती **निर्देशक/संपादक :** रंजीत दास **कैमरामेन :** प्रेश बरूआ **ध्वनि आलेखक :** बापी सेनगुप्ता/हितेन्द्र घोष **संगीत निर्देशक :** ऋतुपर्णा शर्मा

ये कहानी 81 वर्ष के एक वृद्ध, शिक्षक और सुधारवादी, के जीवन का प्रलेखन है। भीड़ में खो जाने के बाद भी यह सपने देखने वाला व्यक्ति अपना सपना नहीं छोड़ता। वह गांधी जी के राजनीति से अत्यंत प्रभावित है और 50 वर्षों से उन पर अमल कर रहा है। किसी भी लोभ में पड़कर उन्होंने अपने नीतियों का त्याग नहीं किया। एक किसान के परिवार से उन्होंने सामर्थ्य के शिखर तक उन्नती की पर उन्होंने कभी अपने आप को भीड़ से अलग नहीं किया।

ALL ALONE IF NEED BE

English, Assamese/Colour/20 min.

Producer/Screenplay Writer : Amulya Kakati **Director/Editor:** Ranjit Das **Cameraman** : Paresh Baruah **Audiographers** : Bapi Sengupta/ Hitendra Ghosh **Music Director** : Rituparna Sarma

The title suggests that this documentary is about the face in the crowd of a man, 81 years old, who is in spirit a teacher and reformer. He is a dreamer who has not yet lost hope. Inspired by the Mahatma Gandhi's interpretation of politics, he has been adhering to the ideology since its initiation more than 50 years ago. He stands high in the esteem of the people as a man of integrity. From a cultivator's family, he rose to the pinnacles of power, yet remained very much one of the crowds.

अमृत बीज

अंग्रेजी, कन्नड़/रंगीन/43 मिनट

निर्माता/निर्देशक: मीरा दीवान **पटकथा लेखक/गीतकार:** मीरा दीवान/शिबानी शर्मा **कैमरामैन:** सन्नी जोसेफ **ध्वनि आलेखक:** सुरेष राजामणि **संपादक:** समीरा जैन/एम. सुब्रहमण्यम **कला निर्देशक:** शिबानी शर्मा **संगीत निर्देशक/पार्श्व गायिका:** शुभा मुद्गल

अमृत बीज जीवन के शाश्वत बीज का नाम है। ये कण समय के ज्वार से बहकर उत्पत्ति के समुद्र तट पर आ जाता है। पृथ्वी की गोद और परम्परागत किसान की मेहनत से प्राप्त इस बीज को उसी किसान ने कई नामों से जाना और पालन पोषण किया। फसल के कटने के बाद, बीज के संरक्षक, पेड़ों के नीचे एकत्र होते हैं।

AMRIT BEEJA

English & Kannada/Colour/43 min

Producer/Director: Meera Dewan **Screenplay Writer/Lyricist:** Meera Dewan/Shibani Sharma **Cameraman:** Sunny Joseph **Audiographer:** Suresh Rajamani **Editor:** Sameera Jain/M. Subramani **Art Director:** Shibani Sharma **Music Director/Female Playback Singer:** Shubha Mudgal

Amrit Beeja or the eternal seed is the grain of life. On the beach of creation it has been washed by the tide of time Seeds are heirlooms inherited from the Earth and the traditional farmer, who has named and nurtured the countless varieties. In the scented aftermath of the harvest, the custodians gather under the canopy of trees.

भाल्जी पेंढारकर

अंग्रेजी/रंगीन/56 मिनट

निर्माता : सी.एस. नायर/बी.आर. शैन्दे **निर्देशक:** पी.बी. पेन्ढारकर **कैमरामैन:** एस.जी. माने **संपादक:** शशि शिन्दे

ये कहानी भाल्जी पेंढारकर की जीवनी है जिन्होंने मूक फिल्मों से बोलने वाले फिल्मों के 1926 से युग तक फिल्में बनाई। वे अपने प्रत्येक फिल्मों की कहानी, पटकथा और वार्तालाप स्वयं लिखते थे। उन्होंने कई फिल्मों में गीत भी लिखे। उन्हें 1991 में फिल्मों में आजीवन योगदान के लिए दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 97 वर्षीय भाल्जी पेंढारकर का जीवन चलचित्र के जन्म और वृद्धि का संपाती है।

BHALJI PENDHARKAR

English/Colour/56 min

Producer : C.S. Nair/B.R. Shendge **Director:** P.B. Pendharkar **Cameraman:** S.G. Mane **Editor:** Shashi Shinde

The film is the life story of Bhalji Pendharkar who made films from 1926 to 1986, through the era of silent movies to the talkies. He wrote the story, screenplay and dialogue of each of his film and many of the lyrics too. He was awarded the Dada Saheb Phalke Award in 1991 for his lifelong personality to Indian cinema. The 97 years old, Bhalji Pendharker's life has coincided with the story of the birth and growth of moving pictures.

टपक और छिड़काव सिंचाई

हिन्दी/रंगीन/20 मिनट

निर्माता: एल.के. उपाध्याय **निर्देशक:** ए.के. गूहा **पटकथा लेखक:** बी.के. भान/वी.के. सामभोर **कैमरामैन:** जी.के. गुरूराजू **ध्वनि आलेखक:** एन.के. शर्मा/जगदीष/ ए.के. सिंह **संपादक:** बी.एस. त्यागी/गोपी चंद/भ्रम सिंह

फिल्म द्वारा दिखाया गया है कि खेती के लिए पानी का कितना महत्त्व है। टपक व छिड़काव सिंचाई के अन्य फायदों के अलावा किसान पानी का काफी मात्रा में बचत करके अधिक से अधिक जमीन में सिंचाई से अच्छी फसल पैदा करके अपनी आमदनी बढ़ा सकता है।

DRIP AND SPRINKLER IRRIGATION

Hindi/Colour/20 min

Producer: L.K. ‹padhyaya **Director:** A.K. Goorha **Screenplay Writer:** B.K. Bhan/V.K. Sambhor **Cameraman:** G.K. Gururaju **Audiographer:** N.K. Sharma/Jagdeesh/A.K. Singh **Editor:** B.S. Tyagi/Gopi Chand/Bhram Singh.

The film shows the importance of water in agriculture. Drip and sprinkler irrigation enables the farmer to save water and use it for a large area of land & thus improve their yield.

होम अवे फ्रॉम होम

निर्माता : आर.एल. देशपाण्डे **निर्देशक / पटकथा लेखक/संपादक** : (स्व.) विश्राम रेवांकर **कैमरामैन** : आर.एन. चौधरी **ध्वनि-आलेखक** : चिरंजीवी नन्दा **संगीत निर्देशक** : पी.पी. वैद्यनाथन

भारतीय समाज में विधवा होना एक अभिशाप है। ढोंडो केशव कर्वे, जो अन्ना नाम से विख्यात हुए, को बाल विधवाओं की दशा पर बहुत दुख हुआ। उनके प्रथम पत्नी की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने आनंदी बाई नामक एक बाल विधवा से 1893 में विवाह किया। वह उनके एक अंतरंग मित्र की बहन थी।

1896 में उन्होंने पुणे से 6 कि.मि. दूर बाल विधवाओं के लिए एक आश्रम खोला। इस आश्रम में आज कई शैक्षिक संस्थाएं हैं और ये महिलाओं के शिक्षा की एक प्रमुख संस्था है।

ये फिल्म इस संस्था के संस्थापक महर्षि कर्वे को समर्पित है।

HOME AWAY FROM HOME

English/Colour/28 min.

Producer : R.L. Deshpande **Director/ Screenplay Writer/Editor** : (Late) Vishram Revankar **Cameraman** : R.N. Choudhary **Audiographer** : Chiranjivi Nanda **Music Director** : P.P. Vaidyanathan

In the Indian society widow-hood once meant a terrible calamity. The plight of these hapless child widows made Dhondo Keshav Karve, later known as Anna, sad and depressed. Following the death of his first wife, Anna remarried a widow Anandibai, a sister of a close friend in 1893.

Facing severe opposition, in 1896, Anna set up a home for rehabilitation of child widows, six kilometres from Pune city. The home has now grown into a Sanstha with educational institutions and colleges for women. The film is a tribute to its founder Maharshi Karve.

इतिहासथिले खसक

अंग्रेजी, मलयालम/रंगीन/26 मिनट

निर्माता : मधु जर्नादनन, सचिव, रश्मि फिल्म सोसायटी **निर्देशक/पटकथा लेखक** : ज्योति प्रकाश **कैमरामैन** : वेणु/संतोष **ध्वनि-आलेखक:** प्रशांत कुंडु/कृष्ण कुमार/कृष्णनन् उन्नी **संपादक:** वेणु गोपाल **कला निर्देशक** : विपिन पी.एस. **संगीत निर्देशक** : रमेश नारायण

इतिहासथिले खसक की कहानी थसारक को खोजने की मनुष्य की चेष्टा पर आधारित है। थसारक के उपन्यास में जियन के सभी पात्रों की या तो मृत्यु हो चुकी है या चले गए हैं। अपनी यात्रा में वह अपने वंशजों में कुछ पात्रों को जीवित पाता है। उपत्यास में आने वाले मस्जिद, गांव का मकान और शमशान भभी उसे दिखाई देते हैं। पर वहां के वासी उस गांव को खसक मानते है थसारक नहीं।

ITHIHASATHILE KAHSAK

English, Malyalam/Colour/26 min.

Producer : Madhu Janardanan, Secretary, Rasmi Film Society **Director/ Screenplay Writer** : Jyothi Prakash **Cameraman** : Venu/Santhosh **Audiographer** : Prasanth Kundu/ Krishna Kumar/Krishanan Unni **Editor:** Venu Gopal **Art Director** : Vipin P.S. **Music Director** : Ramesh Narayan

The film is based on the observations of the man in his quest for the antiquity of Thasarak, the backdrop to the novel. Though most of vijayan's characters are dead and gone this man in the course of his journey comes across their descendents and a few of the characters who are still alive. He was able to see the mosque, barn house and burial marshes ever featuring in the novel. Curiously enough, the natives have come to believe that their village is Khasak, not Thasarak.

कुट्रावली

तमिल/श्याम-श्वेत/28 मिनट

निर्माता : दा एपट फिल्मस् **निर्देशक** : बी. लेनिन **पटकथा लेखक** : देव भारतीय **मुख्य अभिनेता** : वी सी रवि **सह अभिनेता** : वाई अलेक्जेन्डर **बाल कलाकार** : बी जननी **कैमरामैन** : एस. वैदी **ध्वनि-आलेखक:** स्वमीनाथन **संपादक:** बी लेनिन/वी.टी. विजयन **कला निर्देशक** : बी मुरली **वेश-थूषाकार** : सेतू **संगीत निर्देशक** : आर.पार्थ सारथी.

ये कहानी एक जेलर और उसके एक कैदी पर आधारित है। वह इस कैदी को जेल की दीवार के पास लकड़ी की सीढ़ियां लगाते देख लेता है। उस पर शक होते ही वह उसकी निगरानी करने लगता है। कैदी दीवार पर चढ़ कर उसके ऊपर लगी बत्तियों को साफ करता है जिससे वह जेलर की रूद्र वीणा बजाने वाली बेटी को देख सके। यह देख जेलर को बहुत शर्म आती है और उसे यह पता लगता है कि वे एक महान कलाकार हैं।

KUTRAVALI

Tamil/B&W/28 min.

Producer : The Apt Films **Director** : B. Lenin **Screenplay Writer** : Devbharathi **Leading Actor** : V.C. Ravi **Supporting Actor** : Y. Alexander **Child Artist** : B. Janani **Cameraman** : S. Vaidy **Audiographer** : Swaminathan **Editor** : B. Lenin/V.T. Vijayan **Art Director** : B. Murali **Costume Designer** : Sethu **Music Director** : R. Parthasarathy

The story is about a jailor and his suspicion on one his prisioners. He begins to doubt when he sees the prisoner preparing a wooden ladder by the side of the compound wall but the latter uses it to clean the top lights to watch the jailor's daughter playing the Veena. The jailor learns his lesson and finds out that the prisoner is an artist.

लिमिट टू फ्रीडम

अंग्रेजी/रंगीन/58 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक : दीपक राय **कैमरामैन :** राजीव शुकुल **ध्वनि-आलेखक :** शिवा दास **संपादक:** एम.एस. मणि

भारतीय समाज में नारी दशा में बहुत कुछ सुधार आना बाकी है। उन्हें रीत-रिवाज़, धर्म और परम्परा के नाम पर बाधित किया जाता है। वे अपराध बहुत ही कम करती है (सब अपराधी में केवल 4% महिला अपराधी हैं)।
इसी बात को नज़र में रखते हुए ये फिल्म नारी अपराधियों की दशा की कथा प्रस्तुत करती हैं। उनके अपराधी जीवन के साथ आजाद जीवन में कुछ अधिक अंतर नहीं है।

LIMIT TO FREEDOM

English/Colour/58 min.

Producer/Director/Screenplay Writer : Deepak Roy **Cameraman :** Rajeeve Shukul **Audiographer :** Shiva Das **Editor :** M.S. Mani

The state and condition of average women in Indian society leaves much to be desired and deserved. They are bound by the custom, religion and tradition. Women seldom commit crime (only 4% of total crimes committed in India).

Keeping this perspective in mind the film documents the state and condition of women prisoners. The condition of women prisoners is a mere extension of their lives outside.

माझी

बंगला/रंगीन/67 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक/संगीत निर्देशक : बिश्वदेब दासगुप्ता **मुख्य अभिनेता :** अमित बैनर्जी **मुख्य अभिनेत्री :** इन्द्राणी हाल्दर **सह-अभिनेता :** मनु मुखर्जी **सह-अभिनेत्री :** चित्रा सेन **कैमरामैन :** ध्रुवज्योति बासू **ध्वनि-आलेखक :** ज्योति चटर्जी/अनूप मुखर्जी **संपादक:** उज्जल नदी **कला निर्देशक :** सतदल मित्रा

एक मुसलमान माझी फ़ज़ल और उसकी सलीमा से विवाह करने के लिए मेहर जमा करने में व्यस्त है। फ़ज़ल की आमदनी बढ़ती है पर वह सारा रुपया एक हिन्दू विधवा को बचाने के लिए दे देता है। एक सच्चे मनुष्य होने पर उसे खुशी होती है।

MAJHI

Bengali/Colour/67 min.

Producer/Director/Screenplay Writer/Music Director : Biswadeb Dasgupta **Leading Actor :** Amit Banerjee **Leading Actress :** Indrani Halder **Supporting Actor :** Manu Mukherjee **Supporting Actress :** Chitra Sen **Cameraman :** Dhrubajyoti Basu **Audiographer :** Jyoti Chatterjee/Anup Mukherjee **Editor :** Ujjal Nandy **Art Director :** Satadal Mitra

Fazal, a young Muslim boatman loves Salima and wants to marry her. He is saving money to pay Salima's father but communal riots break out. Fazal earns more but he gives most of his money to save a young Hindu widow. He is happy to prove himself human.

मेमोरीज़ ऑफ फीयर

हिन्दी, अंग्रेजी/रंगीन/57 मिनट

निर्माता : फलेविया एगनेस **निर्देशक/पटकथा लेखक** : मधुश्री दत्ता **मुख्य अभिनेत्री** : गायत्री तंडौर/नवजोत हंसरा **बालकलाकार** : अतिशाह फुरटाडो **कैमरामैन** : के.यू. मोहनन **ध्वनि-आलेखक** : हरि पिल्लयी **संपादक**: सुजाता नरूला **संगीत निर्देशक** : डी वुड/विक्रम जोगलेगकर

इस फिलम में बालिकाओं के समाजीकरण के बाद उनकी जिन्दगी में होने वाले आतंक को चित्रित किया गया है। चार व्याख्याओं के द्वारा चार अलग-अलग आयु के बाल-महिलाओं के जीवन का चरित्रण है। ये उनके सपनों के टूटना, चाहतों के उभरने और उनके शरीर तथ उसके गठन के खिलफ उभरते हुए डर की कहानी है। इसमें आतंक से भरे विवाह भोगने वाली महिलाओं का भी साक्षात्कार है।

MEMORIES OF FEAR

Hindi, English/Colour/57 min.

Producer : Flavia Agnes **Director/Screenplay Writer** : Madhusree Dutta **Leading Actress** : Gayatri TandorNavjot Hansra **Child Artist** : Atisha Furtado **Cameraman** : K.U. Mohanan **Audiographer** : Hari Pillai **Editor** : Sujata Narula **Music Director** : D. Wood/Vikarm Joglekar

The film attempts to capture the process of socialisation of girl children which makes them vulnerable to violence in later life. Four parallel narratives trace the path of growing up of child-women of varied age groups. It deals with the shattering of their dreams, construction of their desires, growing alienation from their body and formation of fear. There are interviews of older women who have gone through violent marriages.

''ओ''

अंग्रेजी/रंगीन/4 मिनट

निर्माता : भीमसेन **निर्देशक/पटकथा लेखक/ऐनीमेटर** : किरीट खुराना **कैमरामैन** : अरविंद शिरके **ध्वनि-आलेखक** : ज्योफ मिलने **संपादक**: वसंत नारवेकर **संगीत निर्देशक** : मैगनस जैरपे

''ओ'' हर गवेषणा का आरंभ और अंत है। एक बच्चा एक बॉल से खेलता है। इसी बाल से वह चिज़ों की पहचान सीखता है। जब वह इसे पकड़ना सीखता है, आदमी उसे और जटिल निशान देता है। बड़ा होते होते वह इन सब को एक खेल की तरह एकत्रित करता है। बड़े होने पर उसका उत्साह कम हो जाता है और इन सब निशानों के नीचे दब जाता है। पर जब वह एक बच्चे को बॉल से खेलता हुआ देखता है उसे जीवन के मूल्यों के सरलता से खुशी का एहसास हो जाता है।

"O"

English/Colour/4 min.

Producer : Bhimsain **Director/Screenplay Writer/Animator:** Kireet Khurana **Cameraman** : Arvind Shirke **Audiographer** : Geoff Milne **Editor** : Vasant Narvekar **Music Director** : Magnus Hjerpe

"O" is the beginning and end of all explorations A toddler is playing with a ball becomes his first abstract concept. Seeing the child's grasping ability a man gives him several more complex symbols. As he grows, the child accumulates symbols from everyone he meets as if it were a game. But as he grows older, his enthusiasm diminishes and he finds himself weighed down by his vast collection of symbols. When he meets a toddler with a ball, he rediscovers with joy, the value of simplicity.

ऊडाहा

तमिल/रंगीन/30 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक : पी. शिवकामी **मुख्य अभिनेता** : नासर **सह-अभिनेता** : बाला सिंह **कैमरामैन** : थंकर बचन **ध्वनि-आलेखक** : मुरूगेशन **संपादक** : बी लेनिन/वी.टी. विजयन **कला निर्देशक/वेशभूषाकार** : वेंकट राजा **संगीत निर्देशक** : इलयाराजा **पार्श्व गायिका** : शिवकामी

ये कहानी प्राकृतिक जीवन के वाणिज्यिक विश्व द्वारा उल्लंघन की कहानी है। पत्तों के हिलने से खोज का आरंभ होता है। मनुष्य के प्लास्टिक अतिक्रमण से प्रकृति भी मुक्त नहीं है। प्रकृति पर आघात के कारण आदिवासियों को काफी और इलाइची के खेतों में काम कर अपने परिवार को चलाना पड़ता है। संस्कृति के नृशंसता को मानवता को सहना पड़ता है। आदिवासी मांस की हत्या करते है। प्रकृति के बीच यह पारिनिजी खोज चलती रहती है।

OODAHA

Tamil/Colour/30 min.

Producer/Director/Screenplay Writer : P. Sivakami **Leading Actor** : Naasar **Supporting Actor** : Bala Singh **Cameraman** : Thankar Bachan **Audiographer** : Murugeshan **Editor** : B. Lenin/V.T. Vijayan **Art Director/Costume Designer** : Venkat Raja **Music Director** : Ilaiya Raja **Female Playback Singer** : Sivakami

The film centres around the transgression from an anthropocentric commercial world to Nature oriented life. The search

begins with the movement of leaves. Nature is not free from man's plastic intrusion. Atrocities on nature continue while the tribals are forced to become wage earners in coffee and cardamum plantations. Humanity exposes the brutality of civilisation. The tribals hunt for their flesh. The transpersonal search continues through nature.

पाकरनाट्टम अम्मानूर द एक्टर

मलयालम/रंगीन/65 मिनट

निर्माता : पी.जी. मोहन **निर्देशक** : एम.आर. राजन/सी.एस. वेंकटेश्वरन **कैमरामैन** : सतीष नारायन नारायनन **ध्वनि-आलेखक** : कृष्णकुमार **संपादक** : मदन मोहन प्रसाद

ये फिल्म प्रसिद्ध कोडियेट्टम कलाकार अम्मानूर माधव चक्यार को समर्पित है। कोडियेट्टम संस्कृत की सबसे पुरानी नाट्य कला है। इस फिल्म में अभिनेता के परिवर्तनशील अभिनय का वर्णन किया गया है। उनके अभिनय में उनके पात्र, भाव, रस, आदि का चित्रण हैं। इसमें उन्होंने नव रसों को बहुत ही दक्षता से दर्शाया है।

PAKARANATTAM AMMANNUR THE ACTOR

Malayalam/Colour/65 min.

Producer : P.G. Mohan **Director** : M.R. Rajan/C.S. Venkiteswaran **Cameraman** : Satish Narayan Narayanan **Audiographer** : Krishnakumar **Editor** : Madan Mohan Prasad

The film is a tribute to the renouned Kodiyattam exponent Ammannur Madhaba Chakyar. It is claimed to be the oldest surviving Sanskrit theatre form. It presents the versatility of the actor's abhinaya & his bringing together of the performances by his various naratives, roles, bhavas and rasas, etc. It traces his mastery over the nine rasas also.

सोच समझ के

हिन्दी/रंगीन/30 मिनट

निर्माता : शांता गोखले /अरूण खोपकर **निर्देशक** : अरूण खोपकर **पटकथा लेखक** : शांता गोखले **कैमरामैन** : पियूश शाह **ध्वनि-आलेखक** : ए.एम. पद्मभान **संपादक** : संकल्प मेशराम **कला निर्देशक** : मनीष साप्पल **संगीत निर्देशक** : मिलिंद चित्रावस

ये कहानी आज की युवा पीढ़ी के शिक्षित नवयुवकों की कथा है। अदिती और कुमार की मुलाकात के बाद वे एक दूसरे को अच्छी प्रकार जानकर विवाह करने पर सहमत होते है वे अपनी पढ़ाई पूरी करने के पश्चात विवाह करते है जिससे उनके आगे का जीवन सुखमय रूप से व्यतीत होता है।

SOCH SAMAJH KE

Hindi/Colour/30 min.

Producer : Shanta Gokhale/Arun Khopkar **Director** : Arun Khopkar **Screenplay Writer** : Shanta Gokhale **Cameraman** : Piyush Shah **Audiographer** : A.M. Padmanabhan **Editor** : Sankalp Meshram **Art Director** : Munish Sappel **Music Director** : Milind Chitnavis

The story is about the lives of two educated youths of today-Aditi and Kumar. They met and planned their lives with proper understanding of the situations. Each of them seperately do but not want to marry and one meeting each other they decide on a long engagement to finish their studies. They finally get married and enjoy the marital bliss.

सोना माटी

मारवाड़ी/रंगीन/40 मिनट

निर्माता : सहजो सिंह/अन्वर जमाल **निर्देशक/पटकथा लेखक** : सहजो सिंह **कैमरामैन** : डेरेक हाल्दी **ध्वनि-आलेखक** : नील कंठ **संपादक** : एम.एस. मणि **संगीत निर्देशक** : उर्मुल कम्यूनिकेशन टीम

इस कहानी में सोना बाई की सारी जिंदगी बीकानेर में गुजरी। उनका जन्म, विवाह तथा उनके बच्चे जन्में और वे वृद्ध भी बीकानेर में हुई। बंजर जमीन हरी भरी हो जाती है और विशेषाधिकार वाले कुछ लोग जमीन हतियाने लगते हैं। महिला मंडल की अध्यक्ष सोना बाई अनाविचार के विरूद्ध लड़ाई शुरू करती है। वे महिलाओं को शिक्षित करके अपनी लड़ाई चलाती हैं।

SONA MATI

Marwari/Colour/40 min.

Producer : Schjo Singh/Anwar Jamaal **Director/Screenplay Writer** : Sehjo Singh **Cameraman** : Derek Haldee **Audiographer** : Neel Kanth **Editor** : M.S. Mani **Music Director** : Urmul Communication Team

It is the story of a woman, Sona Bai, who was born, married, bore children and grew old in the deserts of Bikaner. Barren lands became green and the priviledged few started grabbing the land. Mahila Mandal, headed by Sona Bai start their fight against injustice and educate the women to make them aware of the dangers. The struggle continues.

तराना

अंग्रेजी/रंगीन/21 मिनट

निर्माता : वाई.एन. इंजीनियर **निर्देशक/पटकथा लेखक :** रजत कपूर **कैमरामैन :** राफेय महम्मूद **ध्वनि-आलेखक :** भरत बेर्डे/एस.के. पुरुष्टि **संपादक :** भीमसेन भोंसले

तराना भारतीय शास्त्रीय संगीत के घराने पर आधारित है। तराना के बंदिश में शब्दों की जगह अक्षरों का उपयोग किया जाता है। इसमें कभी तबला के बोल और कई अन्य संगीत के साजों की आवाज का उपयोग होता है। इसके अक्षर हिन्दू तथा सूफी मत से लिए गए - ऐसा माना जाता है।

TARANA

English/Colour, B&W/47 min.

Producer : Y.N. Engineer **Director :/ Screenplay Writer** : Rajat Kapoor **Cameraman :** Rafey Mehmood **Audiographer :** Bharat Berde/ S.K. Prusthy **Editor :** Bhimsain Bhosle

This film is on the Tarana gharana of Indian classical music. A tarana bandish does not normally use words instead it employs memonic syllables. Some of these are borrowed from Tabla bols, some from the movement of other instruments. It has been suggested that these syllables may have religious origin both from Hindu and Sufi faith.

तत्व

हिन्दी/रंगीन, श्याम-श्वेत/47 मिनट

निर्माता : डी.जी. दूरदर्शन/ई.जेड.सी.सी./सागरी छाबड़ा **निर्देशक :** सागरी छाबड़ा **पटकथा लेखक :** सागरी छाबड़ा/त्रीपुरारी शर्मा **मुख्य अभिनेता :** के.पी. मुखर्जी **मुख्य अभिनेत्री :** पल्लवी जोशी **सह-अभिनेता :** प्रींस दीपक **कैमरामैन :** हरि नायर **ध्वनि-आलेखक :** श्याम सुंदर **संपादक :** टी.के. लौरेन्स **कला निर्देशक :** सागरी छाबड़ा/टी. रत्नम **वेशभूषाकार :** सागरी छाबड़ा/ गौरिका साजदेह **संगीत निर्देशक :** आनंद मोदक **पार्श्व गायिका :** गौरी दाम्ले

राधा नामक एक नौकरी करने वाली युवती की है जिसका इस उग्रता भरे समाज में दम घुटता है। उसका अपमान तथा अवहेलना होता है। धीरे-धीरे उसके सपने, चिंतन और सच्चाई पर से पर्दा उठता है और राधा को आत्म-दर्शन प्राप्त होता है।

TATVA

Hindi/Colour, B&W/47 min.

Producer : D.G. Doordarshan/E.Z.C.C/ Sagari Chhabra **Director** : Sagari Chhabra **Screenplay Writer** : Sagari Chhabra/Tripurari Sharma **Leading Actor :** K.P. Mukherjee **Leading Actress :** Pallavi Joshi **Supporting Actor :** Prince Deepak **Cameraman** : Hari Nair **Audiographer :** Syam Sunder **Editor :** T.K. Lawrence **Art Director :** Sagari Chhabra/T. Ratnam **Costume Designer :** Sagari Chhabra/Gaurika Sajdeh **Music Director :** Anand Modak **Female Playback Singer :** Gauri Damle

Radha a young working woman feels choked under the violence of the process of living and the system. She is harassed and indignified. Layers of dream fantasy and reality peel off and Radha gains self-expression.

द रेबेल

हिन्दी/श्याम-श्वेत/31 मिनट

निर्माता : जॉन शंकरमंगलम, **निर्देशक, एफ.टी.आई.आई. निर्देशक/पटकथा लेखक** : राजश्री **कैमरामैन** : रामचंद्र एच.एम. **ध्वनि-आलेखक** : बेबी जॉन **संपादक** : टी. राजाशेखरन/सौमित्र खन्ना **संगीत निर्देशक** : आनंद मोदक

एक किशोर बालक अपने माँ की दूसरी शादी से उसे अत्यंत दुखी है। वह अपने सौतेले पिता और भाई परिवार में के साथ न किए जाने पर क्रोधित है। वह एक वृद्ध महिला से दोस्ती करके उसके साथ रहने लगता है। जो उसे बागवानी तथा अपने हाथ से जन्म देने का आनंद सिखाती है।
उनकी मृत्यु पर उसे अत्यंत दुख होता है पर वह मुड़कर अपनी माँ के पास ही सहारा लेता है जिससे उसे सबसे ज्यादा कटुता थी।

THE REBEL

Hindi/B&W/31 min.

Producer : John Shankaramangalam, Director, FTII **Director/Screenplay Writer** : Rajashree **Cameraman** : Ramachandra H.M. **Audiographer** : Baby John **Editor** : J. Rajashekharan/ Soumitra Khanna**Music Director** : Anand Modak.

A teenage boy feels betrayed by his mother as she has set up a family with his step father and their child, which does not include him.
A friendship develops between him and a spirited old woman who lives alone and tends to her garden. She teaches him to feel the beauty of nature and the joy of making things with this our hands.
When she dies, he feels utterly lost and alone.

येल्हऊ जागोई

मणिपुरी/रंगीन/35 मिनट

निर्माता : आई.जी.एन.सी.ए. **निर्देशक/संगीत निर्देशक** : अरिबम स्याम शर्मा **कैमरामैन** : सरतचंद्र शर्मा **संपादक** : उज्जल नदी **ध्वनि आलेखक** : ए. शांतिमो शर्मा

ये फिल्म मणिपुर के वार्षिक परम्परागत उत्सव का ब्यान करती है। यह स्वर्ग, पृथ्वी और जीवन पूरे भूमंडल की कृतियां हैं। माइबीस के नृत्य में शिशु का माँ के गर्भ से उत्पत्ति तथा उसके विकास को प्रदर्शित किया गया है। वह बच्चा फिर बड़ा होकर अपना घर बनाता है और जीने के लिए अपनी जीविका रोजगार करने लगता है। यह सब 364 हस्त मुद्राओं में दर्शाया गया है।

YELHOU JAGOI

Manipuri/Colour/35 min.

Producer : IGNCA **Director/Music Director** : Aribam Syam Sharma **Cameraman** : Saratchandra Sharma **Editor** : Ujjal Nandy **Art Director** : A. Santimo Sharma

The film narrates the annual ritual festival celebrated in Manipur. The myth of the creation of universe-hearven, earth & life are manifested. In the film the dance of Maibies depict the growth of child in the womb, its development & then becoming an adult making a home and earning a living through its 364 hand movements.